वर्ष 23, अंक 265, पृष्ठ 08, मूल्य: 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शनिवार 19 अक्टूबर 2024 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

अब्बास अंसारी को मिली बड़ी राहत, दो मामलों में मिली जमानत

नई दिल्ली

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में विधायक अब्बास अंसारी को सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को बड़ी राहत दी है. कोर्ट ने अब्बास अंसारी की जमानत को मंजूरी दे दी है, सुभासपा विधायक को मनी लॉन्ड्रिंग केस और चित्रकूट जेल में अवैध तरीके से पत्नी से मुलाकात मामले में जमानत मिली है. हालांकि गैंगस्टर एक्ट से जुड़े लंबित आरोपों के कारण अभी अब्बास अंसरी जेल से बाहर नहीं निकल पाएंगे. वहीं कोर्ट ने इस बात पर भी जोर दिया है कि अब्बास अंसारी को चल रही जांच में सहयोग करना चाहिए.

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 9 मई को खारिज की थी जमानत याचिका

विधायक अब्बास अंसारी को न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश और न्यायमूर्ति पंकज मिथल की पीठ ने जमानत दी है. सुप्रीम कोर्ट ने इससे पहले 14 अगस्त को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को नोटिस जारी कर इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली अंसारी की अपील पर जवाब मांगा था, जिसमें उसे जमानत देने से इनकार कर दिया गया था. इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 9 मई को अंसारी की जमानत याचिका को खारिज कर दिया था, जिसमें रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री का हवाला दिया गया था.

कासगंज जेल में बंद हैं सुभासपा विधायक अब्बास अंसारी

कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी कहा था कि दो कंपनियों मेसर्स विकास कंस्ट्रक्शन और मेसर्स आगाज के साथ अंसारी के धन के लेनदेन के संकेत हैं. ईडी ने आरोप लगाया कि अंसारी ने धन शोधन के लिए इन कंपनियों का इस्तेमाल किया. ईडी ने पिछले तीन मामलों के आधार पर धन शोधन रोकथाम कानून, 2002 के तहत सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) के विधायक अब्बास अंसारी के खिलाफ मामला दर्ज किया था. उत्तर प्रदेश की मऊ सीट से विधायक अंसारी अभी कासगंज जेल में हैं।

'बाल विवाह वाले कानून पर असर नहीं डाल सकता पर्सनल लॉ'

सुप्रीम कोर्ट की अहम टिप्पणी

- चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने देश में बाल विवाह रोकथाम कानून के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए कई दिशानिर्देश भी जारी किए हैं.

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार (18 अक्टूबर 2024) को देश में बढ़ते बाल विवाह के मामलों से जुड़ी याचिका पर फैसला सुनाया. सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पर्सनल लॉ के चलते बाल विवाह निषेध कानून का प्रभावित होना सही नहीं है. कोर्ट ने कहा है कि कम उम्र में विवाह लोगों को अपने पसंद का जीवनसाथी चुनने के अधिकार से वंचित करता है. कोर्ट ने यह भी कहा कि बाल विवाह निषेध कानून को पर्सनल लॉ से ऊपर रखने का मसला संसदीय कमिटी के पास लंबित है. इसलिए, वह उस पर अधिक टिप्पणी नहीं कर रहा.

'राज्य सरकारों की लापरवाही'

सुप्रीम कोर्ट ने सोसाइटी फॉर इनलाइटेनमेंट एंड वॉलंटरी एक्शन नाम के एनजीओ की याचिका पर फैसला देते हुए बाल विवाह पर नियंत्रण को लेकर कई निर्देश दिए हैं. इस याचिका में कहा गया था कि बाल विवाह पर रोक के बावजूद आज भी देश में यह जारी है. हर साल 18 साल से कम उम्र की लाखों लड़कियों की शादी होती है. 10 साल से भी कम उम्र में शादी के मामले बहुत बड़ी संख्या में हैं. इसका सबसे बड़ा कारण राज्य सरकारों की लापरवाही है.

चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली 3 जजों की बेंच ने इस पर आदेश देते हुए कहा है-

बाल विवाह रोकने से जुड़े सभी विभागों के लोगों के लिए विशेष ट्रेनिंग की जरूरत है

हर समुदाय के लोगों के लिए अलग तरीके अपनाए जाने चाहिए

सजा देने से सफलता नहीं मिलती

समाज की स्थिति को समझ कर रणनीति बनाएं

लोगों में जागरूकता फैलाने का प्रयास हो

बाल विवाह निषेध कानून को पर्सनल लॉ से ऊपर रखने का मसला संसदीय कमिटी के पास लंबित है. इसलिए कोर्ट उस पर टिप्पणी नहीं कर रहा

लेकिन यह सच है कि कम उम्र में शादी लोगों को अपने पसंद का जीवनसाथी चुनने के अधिकार से वंचित कर देती है।

राम रहीम सिंह को सुप्रीम कोर्ट से बड़ा झटका, अब बेअदबी मामले में चलेगा केस

हरियाणा

सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट गुरु गंथ साहिब की 'बीर' (प्रति) की चोरी, हस्तलिखित अपवित्र पोस्टर लगाने और बरगारी में बिखरे हुए पाए गए पवित्र ग्रंथ के फटे पन्नों से संबंधित घटनाएं 2015 में फरीदकोट में हुई थीं द्वारा पहले जारी किए गए स्थगन आदेश को हटाते हुए, बेअदबी के कई मामलों में डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह के खिलाफ मुकदमा चलाने का रास्ता साफ कर दिया है। हाई कोर्ट की रोक के कारण कई महीनों तक सुनवाई रुकी हुई थी, जिसे अब सुप्रीम कोर्ट ने हटा दिया है। जिसके बाद अब कानूनी कार्यवाही आगे बढ़ सकती है।

गुरु गंथ साहिब की 'बीर' (प्रति) की चोरी, हस्तलिखित अपवित्र पोस्टर लगाने और बरगारी में बिखरे हुए पाए गए पवित्र ग्रंथ के फटे पन्नों से संबंधित घटनाएं 2015 में फरीदकोट में हुई थीं। इन घटनाओं के कारण फरीदकोट में विरोध प्रदर्शन हुआ था।

हरियाणा में किडनी मरीजों का होगा फ्री इलाज

कुर्सी संभालते ही नायब सिंह सैनी का बड़ा फैसला

हरियाणा

भाजपा के नायब सिंह सैनी ने चंडीगढ़ में हरियाणा सिविल सचिवालय में हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में आज अपना कार्यभार संभाल लिया है। कार्यभार संभालते ही उन्होंने हरियाणा के लोगों के लिए बड़ा फैसला लिया है। डीपीआर हरियाणा ने बताया कि कार्यभार संभालने के बाद सीएम नायब सिंह सैनी ने राज्य के सभी सरकारी अस्पतालों में क्रोनिक किडनी रोगियों के लिए मुफ्त डायलिसिस सेवाओं की घोषणा की। उन्होंने कहा कि भविष्य में सभी मेडिकल कॉलेजों में भी निःशुल्क डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की मौजूदगी में नायब सिंह सैनी ने गुरुवार को दूसरी बार हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी।

मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद नायब सिंह सैनी ने एक्स पर एक लंबा पोस्ट साझा किया है। अपने पोस्ट में नायब सिंह सैनी ने लिखा कि नॉनस्टॉप हरियाणा के विकास और नवनिर्माण को गतिमान रखने वाले जनादेश के लिए सर्वप्रथम 2.80 करोड़ अपने परिवारजनों का हार्दिक आभार। उन्होंने लिखा कि मेरे जैसे एक सामान्य परिवार से आने वाले कार्यकर्ता को हरियाणा का मुख्य सेवक बनने का अवसर प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का आभार।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी हरियाणा से आपका विशेष स्नेह हमें निरंतर परिश्रम करने के लिए असीमित ऊर्जा प्रदान करता है। सैनी ने लिखा कि आपके प्रेरणादायी नेतृत्व में हरियाणा विकास की नित नई ऊंचाइयों को स्पर्श कर रहा है। विकास की ये नॉनस्टॉप यात्रा प्रदेश में सतत जारी रहेगी। पूर्ण बहुमत की तीसरी बार भाजपा सरकार पूरी ऊर्जा और उत्साह के साथ सुशासन, समानता और गरीब कल्याण के लिए काम करेगी। सैनी 2023 से 2024 तक संक्षिप्त अवधि के लिए भाजपा के हरियाणा राज्य प्रमुख भी रहे। उन्होंने 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस नेता निर्मल सिंह को 3,84,591 वोटों के भारी अंतर से हराकर कुरुक्षेत्र का लोकसभा चुनाव जीता।

महाविकास अघाड़ी में 260 सीटों पर सहमति!

महाराष्ट्रः महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की तारीख का ऐलान कर दिया गया है, लेकिन सियासी दलों के बीच अभी सीटों का बंटवारा नहीं सका है. महायुति और महाविकास अघाड़ी दोनों ही गठबंधन की तरफ से सीटों का ऐलान नहीं किया गया है. इस बीच एमवीए की सीटों को लेकर अपडेट सामने आया है.

दरअसल, महाविकास अघाड़ी में महाराष्ट्र की 288 सीटों में से 260 सीटों पर सहमति बन गई है लेकिन राज्य की 28 सीटें ऐसी हैं जिन पर अभी भी पेंच फंसा है. कांग्रेस पार्टी ने आलाकमान को भेजी सूची, इन सीटों के मतभेद को सुलझाने के लिए शरद पवार और उद्धव ठाकरे भी चर्चा करेंगे. महाविकास अघाड़ी दो दिन में सीट आवंटन की घोषणा करेगी.

सीट शेयरिंग को लेकर एमवीए की गुरुवार (17 अक्टूबर) को बैठक नौ घंटे तक चली. सुबह 11 बजे शुरू हुई ये बैठक रात 8 बजे खत्म हुई. मीटिंग में विदर्भ, मराठवाड़ा और उत्तर महाराष्ट्र की सीटों पर चर्चा हुई और जिसमें 260 सीटों पर तीनों दलों के नेताओं के बीच सहमति बनी, बाकी 28 सीटों पर आगे चर्चा जारी रहेगी।

दिल्ली के लोग जहरीली हवा में सांस ले रहे हैं: संदीप दीक्षित

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता संदीप दीक्षित ने दिल्ली में प्रदूषण के बढ़ते स्तर पर चिंता व्यक्त की। इसके साथ ही उन्होंने, हरियाणा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कैप्टन अजय सिंह यादव के इस्तीफे पर भी राय रखी। आईएएनएस से बातचीत करते हुए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता संदीप दीक्षित ने कहा, मुझे दिल्ली के प्रदूषण को लेकर कुछ भी आश्चर्य नहीं लगता है। बीते 8 वर्षों में दिल्ली की हवा बेहद ही खराब रही है। यह तो बरसात की वजह से प्रदूषण का अहसास नहीं हुआ है।

नई सरकार बनते ही टारगेट किलिंग, गैर-कश्मीरी युवक को मारी गोली

जैनापोरा

दक्षिण कश्मीर के शोपियां जिले के जैनापोरा के वडुना इलाके में एक गैर-स्थानीय व्यक्ति का गोलियों से छलनी शव मिला। शोपियां के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) ने घटना की आतंकवादी हमला होने की पुष्टि की है। शव को गैर-स्थानीय व्यक्ति का माना जा रहा है, जिसे चिकित्सकीय-कानूनी औपचारिकताओं के लिए अस्पताल ले जाया गया है। अधिकारियों ने जांच शुरू कर दी है और पीड़ित की पहचान करने के लिए काम कर रहे हैं। यह घटना उमर अब्दुल्ला के केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के पहले मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के कुछ ही दिनों बाद हुई है, जो छह साल के राष्ट्रपति शासन के बाद एक निर्वाचित सरकार की वापसी का प्रतीक है। एक दशक के लंबे अंतराल के बाद हुए हालिया विधानसभा चुनावों में एनसी-कांग्रेस गठबंधन ने जीत हासिल की, जिसमें जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस (जेकेएनसी) ने 42 सीटें जीतीं और कांग्रेस ने छह सीटें हासिल कीं।

महाराष्ट्र की चुनावी लड़ाई में क्यों महत्वपूर्ण है मराठवाड़ा

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए तारीखों का ऐलान हो चुका है। 20 नवंबर को महाराष्ट्र में एक चरण में वोट डाले जाएंगे जबकि 23 नवंबर को इसके नतीजे आएंगे। हालांकि, महाराष्ट्र की राजनीति लगातार मराठवाड़ा क्षेत्र और मराठा आरक्षण आंदोलन के इर्द-गिर घूमती हुई दिखाई दे रही है। इसको साधने की कोशिश सत्ता पक्ष और विपक्ष की ओर से लगातार की जा रही है। हालांकि, महाराष्ट्र की राजनीति में मराठवाड़ा क्षेत्र और वर्तमान में देखे तो मराठा आरक्षण आंदोलन का बेहद महत्व हो गया है। मराठवाड़ा क्षेत्र की

कुल 46 सीटें हैं, जहां सत्तारुढ़ महायुती और विपक्षी महा विकास अघाड़ी अपने-अपने दांव-पेंच खेल रहे हैं। कोई यहां जातिगत एकजुटता को केंद्रित करने की कोशिश कर रहा है तो कोई यहां ध्रुवीकरण की जाल बिछा रहा है।

एकनाथ शिंदे जो महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री हैं, खुद मराठा है। 2023 में शुरू हुए मराठा आरक्षण आंदोलन के बाद से वह लगातार मराठाओं को ओबीसी श्रेणी में शामिल करने की मांगों पर सावधानी से कम कर रहे हैं।

शाहदरा में फटा एसी, 2 मौत 2 झुलसे

नई दिल्ली। दिल्ली के शाहदरा स्थित एक फ्लैट में एसी फटने से आग लग गई। जिसकी चपेट में आने से दो लोगों की मौत हो गई और दो अन्य झुलस गए। घायलों को अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। मौका ए वारदात पर पहुंचे दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष और आम आदमी पार्टी विधायक रामनिवास गोयल ने कहा कि अगर एसी की सर्विसिंग कराते तो ये हादसा नहीं होता। गोयल ने इस घटना को दर्दनाक बताया। वो मौके पर पहुंचे और स्थानीय लोगों से बातचीत की। उन्होंने कहा कि वो इस घटना के संबंध में स्थानीय पुलिसकर्मियों के संपर्क में हैं।

JDU, आजसू और LJP को मिली कितनी सीटें

झारखंड में 68 सीटों पर चुनाव लड़ेगी बीजेपी

झारखंडः झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए एनडीए के बीच सीट शेयरिंग की घोषणा कर दी है. रांची के प्रदेश बीजेपी कार्यालय में शुक्रवार को बीजेपी और आजसू ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सीट शेयरिंग का ऐलान किया है. झारखंड में ठऊअ के अंदर बीजेपी- 68, आजसू-10, जेडीयू-2 और छखढ (रामविलास) पार्टी 1 सीट पर चुनाव लड़ेगी.

चुनाव के लिए बीजेपी ने अपने सहयोगी दलों के साथ सीटों का बंटवारा तय कर लिया है. बीजेपी के चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान और सह प्रभारी हिमंता बिस्वा सरमा ने रांची में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इस बात की जानकारी दी है.

'साथ में लड़ेंगे चुनाव'

मीडिया से बात करते हुए केंद्रीय मंत्री और झारखंड चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान ने कहा, "राज्य में बीजेपी, आजसू, जेडीयू और लोजपा रामविलास साथ मिलकर चुनाव लड़ेगी. चुनाव प्रचार भी हम साथ में करेंगे. इस दौरान असम के सीएम हेमंत बिस्वा शर्मा, झारखंड बीजेपी अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, आजसू प्रमुख सुदेश महतो भी मौजूद थे.

दो चरणों में होंगे चुनाव

झारखंड में दो चरणों में विधानसभा होंगे. 13 नवंबर को पहले चरण का मतदान होना है. 25 अक्टूबर तक उम्मीदवार नामांकन दाखिल कर सकते हैं पर्चों की जांच 28 अक्टूबर को की जाएगी।

सभी 6 आरोपियों को 14 दिन की न्यायिक हिरासत

बहराइच

बहराइच हिंसा मामले में गिरफ्तार 5 आरोपियों को यहां अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश के समक्ष आज पेश किया गया। बहराइच की मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अदालत ने शुक्रवार को राम गोपाल मिश्रा की मौत के मामले में गिरफ्तार सभी आरोपियों को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। जारी की गई जानकारी के मुताबिक, न्यायिक हिरासत में भेजे गए आरोपियों की सूची में मोहम्मद सरफराज और मोहम्मद तालीम भी शामिल हैं, जो गुरुवार को उत्तर प्रदेश में पुलिस के साथ मुठभेड़ के दौरान घायल हो गए थे। इस मुठभेड़ को बहराइच जिले की पुलिस ने अंजाम दिया। उन्होंने बताया कि दोनों आरोपी अब्दुल हामिद के बेटे हैं, जिन्हें पहले भी इसी मामले में गिरफ्तार किया गया था। मीडिया से बात करते हुए, बहराइच एसपी वृंदा शुक्ला ने मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए कहा कि मामले के सिलसिले में पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने कहा, "उनमें से दो पुलिस गोलीबारी में घायल हो गए हैं। मैं उनकी स्थिति का आकलन करने के लिए यहां हूं। घायलों में से एक का नाम

मोहम्मद सरफराज है, दूसरे का नाम मोहम्मद तालिब है।"

इससे पहले प्रदेश के पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने बताया कि 13 अक्टूबर को महाराजगंज में एक युवक की हत्या मामले में बहराइच पुलिस ने पांच लोगों को गिरफ्तार कर लिया।

इनके नाम मोहम्मद फहीम, मोहम्मद तालीम उर्फ सबलू, मोहम्मद सरफराज, अब्दुल हमीद और मोहम्मद अफजाल हैं।

पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला ने बताया कि आज पकड़े गये आरोपी नेपाल भागने की फिराक में थे। उन्होंने बताया, ह्यह्यसरफराज उर्फ रिंकू और तालीम उर्फ सबलू को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। उनकी निशानदेही पर पुलिस हत्या में इस्तेमाल हथियारों की बरामदगी के लिए गयी तो वहां हिंसा में इस्तेमाल की गयी डबल बैरल बंदूक रखी थी वहां एक और अवैध असलहा भी था।

जल्दी निकालो, हम सब देखते रहेंगे... असम में घुसपैठियों की पहचान बता सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को कड़ा टास्क दे दिया

नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा है कि 24 मार्च, 1971 के बाद असम आने वाले सभी बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं और उन्हें जितना जल्दी हो निकाला जाना चाहिए। कोर्ट ने यह भी कहा है कि बांग्लादेशियों को नागरिकता दिए जाने को लेकर हुए असम समझौते के लिए नागरिकता अधिनियम, 1955 में धारा 6ए का विशेष प्रावधान वैध है। सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की संवैधानिक बेंच ने कहा कि एनआरसी डेटा को अपडेट करके बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान और उनके निर्वासन की पक्की व्यवस्था होनी चाहिए। इस पर असम के पूर्व एनआरसी कोऑर्डिनेटर ने आशंका जताई कि एनआरसी अपडेट में घुसपैठिये फर्जी दस्तावेज दिखाकर अपना नाम जुड़वा लेंगे और कोई नहीं निकाला जाएगा। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि वह एनआरसी अपडेशन और घुसपैठियों के निष्कासन की प्रक्रिया की निगरानी करेगा।

दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में 25 मार्च, 1971 या उसके बाद असम आने वाले सभी बांग्लादेशी प्रवासियों को अवैध घोषित कर दिया है।

समाज के प्रति हमेशा पाज़िटिव सोच रखना एक अच्छे समाज का संचार होता है : डॉ विजय यादव

मनुष्य को हमेशा पाज़िटिव सोच रखने से वह सफल होता है

करछना। तहसील क्षेत्र के ग्राम सभा डीहा में आदर्श रामलीला कमेटी का फीता काट कर शुभारंभ किया गया इस मौके पर ग्राम सभा डीहा प्रेमचंद आदिवासी , रामलीला के संस्थापक स्व जोखू लाल यादव स्व रामनाथ यादव स्व रामबली यादव स्वर्गीय राम निधि यादव और श्री शंभू नाथ यादव ने 1990 में इस रामलीला का शुभारंभ किया था जिसे आगे बढ़ाने के लिए सदैव तत्पर सामाजिक कार्यकर्ता एवं जिला पंचायत सदस्य डॉ विजय बाबू यादव निदेशक प्रकाश हास्पिटल डीहा / भीरपुर करछना प्रयागराज ने फीता काट कर शुभारंभ किया इस मौके उन्होंने कहा कि समाज के प्रति हमेशा अच्छी सोच रखने वाले कभी घृणा के पात्र नहीं होंगे लोगों को हमेशा पाज़िटिव रहने की धारणा अपने आप में शामिल करना चाहिए इस अवसर पर अमरनाथ यादव रामाशंकर यादव रामकृष्ण यादव बिंदेश्वरी यादव प्रधान प्रेमचंद आदिवासी ओम प्रकाश आदिवासी जगदीश यादव मणिराज यादव पिंटू यादव ब्रह्मचारी यादव श्याम बहादुर यादव हरिश्चंद्र काका संजय यादव मुकेश तिवारी मित्तल चौधरी विमल चौधरी आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भारतीय किसान यूनियन के किसानों लिफ्ट पंप नहर चालू किए जाने को लेकर धरना दिया

करछना। लोहरा कौहट लिफ्ट पंप नहर टेल तक पानी पहुंचाने के लिये भारतीय किसान यूनियन किसान द्वारा अधिशासी अभियंता लघु डाल नहर खंड प्रथम कार्यालय पर धरने पर बैठे करीब सवा तीन बजे अधिशासी अभियंता लघु डाल श्री बलवंत कुमार धरना स्थल पर पहुंचे और किसानों से वार्ता किया। अधिशासी अभियंता ने कहा कि कल से नहर में साफ -सफाई का कार्य शुरू हो जायेगा। टेल तक पानी भी पहुंचाया जायेगा। धरने पर प्रदेश अध्यक्ष पूर्वांचल राजीव चन्देल, मंडल अध्यक्ष भइया जी मिश्रा, मंडल अध्यक्ष महिला मोर्चा मंजू राज आदिवासी, मंडल उपाध्यक्ष मनोरमा आदिवासी, जिला महासचिव बिहारी लाल प्रजापति मास्टर जी, तहसील उपाध्यक्ष निर्मला आदिवासी, विष्णु कोल, कल्लू आदिवासी व राजकुमार आदिवासी मंजू राज आदिवासी, महिला मंडल अध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन किसान , के कयी सदस्य उपस्थित रहे।

मेजा खास की रामलीला में श्राप वश पत्थर बनी देवी अहिल्या का भगवान श्रीराम ने किया उद्धार

अखंड भारत संदेश

मेजा। शुक्रवार को ताड़का सहित कई राक्षसों का वध कर श्रीराम महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ को संपन्न कराते हैं। इसके बाद गुरुवार को धनुष यज्ञ में भाग लेने के लिए विश्वामित्र के साथ श्रीराम वन में गौतम ऋषि के श्राप से पत्थर बनी अहिल्या का उद्धार करते हैं। विश्वामित्र ने बताया कि कैसे देवी अहिल्या वर्षों से एक शिला के रुप में भगवान श्रीराम के चरण स्पर्श का इंतजार कर रहीं थीं और उनके चरण का स्पर्श पाते ही कैसे उनका श्राप खत्म हुआ। इस दृश्य ने सभी का मन मोह लिया और जय श्रीराम के जयकारे लगे। इसके बाद जनकपुरी में राम-लक्ष्मण नगर भ्रमण करते हैं। दूसरे दिन गुरु विश्वामित्र की पूजा के लिए पुष्प लेने वाटिका जाते हैं। उधर, सीता माता पार्वती की पूजा करने के लिए जाती हैं। वहीं, श्रीराम व सीता की मुलाकात होती है। नगर में विभिन्न प्रकार की दुकानों के दुकानदार श्रीराम और लक्ष्मण को देख कर प्रफुल्लित हो जाते हैं। फुलवारी की सुंदर लीला देखकर श्रद्धालु भाव-विभोर हो गए। रामलीला के अध्यक्ष मनीष गुप्ता, सह अध्यक्ष कैलाश गुप्ता, डायरेक्टर तौलन प्रसाद, लालजी मिश्र, सुनील शर्मा, अमित शर्मा, राहुल मिश्र, संजीव सिंह, सुधीर गुप्ता, कैलाश शर्मा आदि मौजूद रहे।

भाजपा नेता के पिता की तेरहवीं रस्म में उमड़ी भीड़

भाजपाइयों समेत समाजसेवियों ने दी दिवंगत को भावभीनी श्रद्धांजलि

शंकरगढ। यमुनापार के शंकरगढ़ में भाजपा के आईटी जिला संयोजक सतीश विश्वकर्मा के पिता सूर्य कांत विश्वकर्मा की तेरहवीं रस्म में जिलाध्यक्ष यमुनापार विनोद प्रजापति सहित तमाम जिला पदाधिकारियों जनप्रतिनिधियों समेत भाजपा, विचार परिवार, व्यापारियों एवं नगरवासियों ने तेरहवीं की रस्म में सम्मिलित होकर दिवंगत को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने बताया कि तेरहवीं रस्म में श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में जिलाध्यक्ष विनोद प्रजापति, पूर्व जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती, जय सिंह पटेल, संतोष त्रिपाठी, पुष्पराज पटेल,प्रकाश शुक्ला प्रचंड ,शिवराम सिंह परिहार, दिलीप कुमार चतुर्वेदी, मनोज गुप्ता,सुधाकर पांडेय,आरती कोल, हरिदेव धुरिया, प्रदीप मिश्र, धर्मराज पाल वी गुलाब सिंह,रामभवन द्विवेदी,मुकेश कोल, दिवाकर सिंह, सुनील प्रजापति,पंकज द्विवेदी,कुलदीप पटेल, सुशील कोटार्य, रोहित केसरवानी, अमित जायसवाल, रतन केसरवानी, जय केसरवानी,राजेश गुप्ता, राजू केसरवानी, दिवाकर सिंह,निखिल जी, गणेश जी (गुड्डू) अनिल जी, रजत जी आदि रहें।

पति और पत्नी का जीवन दूध और पानी के जैसा होना चाहिए : पंडित कृष्ण कुमार

अखंड भारत संदेश

मेजा। आज अधिकांश लोगों के वैवाहिक जीवन में आपसी तालमेल की कमी आ गई है। इस कारण पति और पत्नी मानसिक तनाव और परेशानियों का सामना करते हैं। विवाह के दो-तीन सालों तक तो स्थिति अच्छी रहती हैं पर जैसे जैसे समय बीतने लगता है वैसे ही आपस में दूरियां बनने लगती हैं ऐसी स्थिति में जीवन बोझ लगने लगता है और निराशा हावी हो जाती है। इन परिस्थितियों से बचने के लिए पति और पत्नी, चार बातों का ध्यान रखना चाहिए। बुरे समय में एक-दूसरे का साथ न छोड़ें,पति-पत्नी को एक-दूसरे के मन की बात समझनी चाहिए, गलत काम करने से एक दूसरे को टोकना और रोकना चाहिए, एक दूसरे पर समर्पण और विश्वाश होना चाहिए

क्योंकि पति पत्नी का रिश्ता दूध और पानी की भांति होता है। उक्त बातें पंडित कृष्ण कुमार ने मेजारोड पाती स्थित सिद्ध हनुमान मंदिर में पंडित नित्यानंद उपाध्याय के नेतृत्व में संचालित नौ दिवसीय विराट मानस सत्संग समारोह के दौरान उपस्थित श्रद्धालु भक्तों को सत्संग सुनाते हुए कही। उन्होंने पति पत्नी का उदाहरण दूध और पानी से देते हुए कहा कि संसार में दूध की कीमत अधिक है और पानी की कीमत कम है। उन्होंने आगे कहा कि जिस प्रकार दूध और पानी एक हो जाने पर कोई अलग नहीं कर सकता उसी प्रकार संस्कारी पति और पत्नी अपने बीच में किसी अन्य का दखल न करने दें तो उन्हें भी कोई अलग नहीं कर सकता है।

श्री कृष्ण कुमार पाण्डेय जी महाराज विंध्याचल धाम

न्याम पंचायत स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन सम्पन्न

मांडा। यमुनापार क्षेत्र के विकास खण्ड मांडा अन्तर्गत न्याम पंचायत स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन उच्च प्राथमिक विद्यालय हाटा में किया गया ' कार्यक्रम के आयोजक पूर्व संकुल प्रभारी एवं. शिक्षक संघ मांडा मनोज सिंह पटेल तथा प्रतियोगिता में न्याम पंचायत स्तरीय खेल प्रतियोगिता दौड़, कबड्डी आदि मे अंकुश,नेहा, कैलाश, नैना,गोलू, अर्पिता सिंह,हिमांशु कुमार, खुशबू कुमारी, डब्लू, पारो,अंकित, अनुराधा, पूजा वर्षा ने प्रतिभाग कर जीत हासिल किया ' वही छात्रों ने विद्द्यालय के साथ माता पिता व गांव का नाम रोशन किया हैं ' विद्द्यालय की संगीता सिंह, राजकुमार सिंह, वृजभान यादव, राम बाबू यादव, पुष्पेन्द्र अखिलेश सिंह, परमानन्द सिंह, अमर बहादुर सिह सन्तोष यादव, हवलदार, यमुना प्रसाद, संदीप, सुभाष , प्रदीप सिंह, अमित, राम शंकर आदि लोग उपास्थित रहे।

करछना ब्लाक में एकाउंटेंट आफिस का ताला तोड़कर दिया गया चार्ज

अखंड भारत संदेश

करछना जिला विकास अधिकारी के आदेश पर नायब मजिस्ट्रेट करछना संतोष यादव की मौजूदगी में आफिस का ताला तोड कर कार्य का संपादन कराया गया जानकारी के मुताबिक विकासखंड करछना के अकाउंटेंट सोनू श्रीवास्तव मुख्य लेखाकार के पद पर कार्यरत थे जिनका स्थानांतरण एक माह पूर्व मांडा ब्लॉक मेजा कर दिया गया था लेकिन वह करछना ब्लॉक में अपना चार्ज नहीं दिया था तथा ना ही मांडा ब्लॉक में उन्होंने चार्ज लिया स्थानांतरण के बाद से अकाउंटेंट ऑफिस का कार्यालय बंद था जिसके कारण ब्लॉक प्रमुख के द्वारा कराए गए कार्यों का भुगतान नहीं हो रहा था जिला विकास अधिकारी के आदेश पर शुक्रवार को एसडीएम के निर्देश पर नायब मजिस्ट्रेट संतोष यादव की मौजूदगी में तथा ब्लॉक कर्मियों के साथ मिलकर अकाउंटेंट सोनू श्रीवास्तव के ऑफिस का ब्लॉक करछना का ताला तोड़कर कार्यालय बहाल कराया गया तथा नए अकाउंटेंट अनिल यादव को चार्ज दिलाया गया इस मौके पर खंड विकास अधिकारी चंदन देव पांडे मनरेगा प्रभारी मनीष शुक्ला एडीओ पंचायत रामश्रीरोमणि त्रिपाठी सहित ब्लॉक कर्मियों की मौजूदगी में ताला तोड़कर चार्ज का आदान प्रदान किया गया जिसमें सोनू श्रीवास्तव द्वारा ऑफिस बंद करके चार्ज न देने और के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई के लिए जिला विकास अधिकारी के लिए लिखा पढ़ी की गई।

हर्षोल्लास के साथ निकला भोपतपुर मीरापुर का राम दल

सहसों। श्री आदर्श रामलीला कमेटी भोपतपुर मीरापुर का हर्षोल्लास के साथ रामदल को रामलीला मंचन एवं रावण वध के उपरांत निकाला गया। कमेटी के लोगों ने रामलीला मैदान से रावण बस के पश्चात आधुनिक विद्युत उपकरणों एवं फूल मालाओं से सुसज्जित रथ की सवारी पर भगवान मयार्दा पुरुषोत्तम राम, माता सीता, वीर लक्ष्मण एवं महाबली हनुमान जी के साथ भव्य राम दल निकाल कर गली मोहल्ला के साथ पूरे गांव में ब्राह्मण कराया गया इस दौरान प्रभु के भक्तों ने जगह-जगह अपनी-अपने दरवाजे पर राम कल को रोककर रामदल का माल्यार्पण तथा पुष्प वर्षा एवं आरती उतार कर फल एवं मिष्ठान का उद्योग लगवाया गया। तत्पश्चात भक्तों ने भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करते जय श्री राम का उद्घोष करते भगवान का जयकारा लगाए। इस अवसर पर रामदल के साथ गाजे बाजे एवं आधुनिक वाद्य यंत्रों के द्वारा मंगल ध्वनि करते कमेटी के डायरेक्टर लाल जी प्रजापति, रामकुमार सोनी, राकेश शर्मा, सूर्य यादव, भोला सोनी, शिवकुमार सोनी, ज्ञान सिंह, राजेंद्र सिंह, अमर बहादुर यादव, महेंद्र कुमार श्रीवास्तव, कृष्णा राज सिंह, ओम प्रकाश श्रीवास्तव सहित भारी संख्या में राम भक्त रामदल दल के साथ चलते हुए शामिल रहे।

तापस वेष बिसेषि उदासी चौदह बरिस रामु बनबासी

जंघई। आदर्श छात्र संघ रामलीला समिति गहरपुर, खखैचा गांव की रामलीला मंचन में दशरथ-कैकेयी संवाद, श्रीराम वनगमन, केवट प्रसंग लीलाओं का संगीतमय मंचन किया गया। महाराज दशरथ अपनी बढ़ती अवस्था को देखते हुए मंत्री परिषद से विचार-विमर्श करके श्रीराम को अयोध्या का राजा बनाने की घोषणा करते हैं, जिसे सुनकर अयोध्या वासियों में खुशी की लहर दौड़ जाती है सभी श्रीराम के राजतिलक की तैयारियों में लग जाते हैं। श्रीराम के राजतिलक का समाचार सुनते ही दासी मंथरा महारानी कैकेई को भड़काती है और भरत को राजगद्दी पर बैठाने के लिए उकसाती है। महारानी कैकेई उसकी बातों में आकर, कोप भवन में चली जाती हैं, जहां वह महाराज दशरथ से दिए हुए दो वचन मांगती है, पहला भरत को राजगद्दी और दूसरे वचन में श्रीराम को 14 वर्षों का वनवास। जब श्रीराम

को पता चलता है तो अपने पिता के वचनों की लाज रखने के लिए खुशी-खुशी 14 वर्षों के लिए वन में जाने के लिए सहर्ष तैयार हो जाते हैं पुत्र वियोग में दशरथ प्राण त्याग देते हैं रामलीला का मंचन केवट संवाद तक हुआ।इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष त्रिशूलीनाथ दूबे, निर्देशक-फूलचन्द्र उपाध्याय, महामंत्री-आदित्य तिवारी, उपाध्यक्ष-लालचन्द्र यादव, कोषाध्यक्ष प्रमोद दूबे, शिवशंकर दुबे, राहुलकुमार दूबे मुख्य सलाहकार, आशुतोष तिवारी, संजीत यादव, अनिल यादव, दिलीप दूबे, अमन, शिवम, अभिषेक, शक्ति सिंह, शिवम तिवारी, बालाजी सहित समस्त ग्राम वासियों के सहयोग से मंचन सफल हो रहा है।

बिजली चोरी रोकने के लिए छापेमारी अभियान शुरू

कौंधियारा। पावर कॉरपोरेशन के अफसरों ने बिजली चोरी व राजस्व वसूली हेतु विशेष अभियान चलाते हुए छापेमारी अभियान शुरू कर दिया है। जारी कस्बे से लेकर देहात क्षेत्रों तक रोजाना बिजली चोरी के खिलाफ अभियान तेज कर दी गई है। आपको बता दें कि सात स्थानों पर विधुत चोरी पकड़ी गयी जिसमें ऋक्रक्र दर्ज कराई गई है। विधुत विभाग द्वारा चलाए जा रहे हैं विशेष राजस्व वसूली और चोरी रोको अभियान के तहत जारी उपकेंद्र से सम्बंधित क्षेत्र में भ्रमण के दौरान कुल 11 स्थानो पर विद्युत चोरी पायी गयी जिसमे 6 लोग बिना कनेक्शन के व , 5 लोग मीटर बाईपास कर विधुत चोरी करते पाये गए जिनपर धारा 135 में FIR दर्ज किया गया। विद्युत उपकेंद्र जारी के अवर अभियंता प्रदीप कुमार वर्मा ने बताया कि ओवरलोड और कटिया/ हाई लॉस फीडर पर छापेमारी चल रही है। बिजली चोरी से राजस्व को नुकसान हो रहा है। इसके लिए टीमें लगातार फील्ड में जा रही हैं।

सरायममरेज पुलिस द्वारा कटेहरी गांव में बेटियों को किया गया जागरूक

जंघई। प्रदेश सरकार द्वारा बालिकाओं एवं महिलाओं की सुरक्षा सम्मान एवं स्वावलंबन हेतु मिशन शक्ति फेस-5 के अनुपालन में थाना प्रभारी सरायममरेज योगेश प्रताप सिंह के निर्देशन में 18 अक्टूबर को 90 दिवसीय के कार्यक्रम के क्रम में एंटी रोमियो टीम/मिशन शक्ति की महिला पुलिस अधिकारियों उप निरीक्षक प्रिया त्रिपाठी एवं उप निरीक्षक आराधना सिंह के द्वारा भ्रमण के दौरान थाना क्षेत्र के ग्राम कटेहरी के रामलीला मंच के माध्यम से बालिकाओं/महिलाओं को उच्च अधिकारी गणों द्वारा दिए गए आदेश निर्देश के बारे में बताया गया तथा महिला सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण तथा केंद्र सरकार व राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं जैसे सुकन्या समृद्धि योजना, वृद्धा पेंशन योजना, विधवा पेंशन योजना, उज्जवला योजना, कौशल विकास योजना, सामूहिक विवाह योजना, चिकित्सा संबंधित आयुष्मान योजना एवं साइबर क्राइम, आईटी एक्ट के अपराध आदि के साथ साथ विभिन्न हेल्पलाइन नम्बर- वूमेन पॉवर लाइन 1090, यूपी-112, चाइल्ड हेल्पलाइन-1098, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन-1076 साइबर हेल्पलाइन नंबर- 1930 आदि के बारे में के विस्तार पूर्वक जानकारी दी। तथा पंपलेट वितरित किए गए।

मतदान केंद्र, विद्यालय, ग्राम सचिवालय भवन से जुड़ी संपर्क मार्गों की स्थिति दयनीय

पंद्रह बीस साल पूर्व बनी सड़क हुई नष्ट,ग्राम प्रधान सहित जनता असंतुष्ट, जन प्रतिनिधियों से रिपेयरिंग की दरकार

कोरांव। कोरांव विधान सभा अंतर्गत ग्राम पंचायत अल्हवा ब्लॉक कोरांव की दुर्दशा ग्रस्त संपर्क मार्गों के मरम्मती करण की मांग करते करते ग्राम प्रधान और नागरिक नेताओं और सरकार से थक गए किंतु रिपेयर करने के लिए विभाग और जन प्रतिनिधि मांग के बावजूद कोई तबज्जों नहीं दे रहे। ग्रामीणों की माने तो अकेले ग्राम प्रधान अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने ग्राम सभा में कई साल से खराब पड़ी रास्तों मार्गों के निर्माण में जितनी शक्ति ग्राम पंचायत से हुई उतना तीन साल में कराया, किंतु पूर्वांचल विकास निधि आदि से निर्मित काली सड़कों की कई साल से उखड़ी सड़कों के मरम्मती करण के लिए किसी भी नेता ने जिम्मेदारी नहीं ली,सिर्फ आश्वाशन ही देते आ रहे। दर असल केडी रोड पियरी मुख्य संपर्क मार्ग से लिंक बीस साल पूर्व बनी कोलान बस्ती अल्हवा की करीब आठ सौ मीटर सड़क पूर्वांचल विकास निधि से बनाई गई थी। जिसका प्रयास तत्कालीन विधायक रामकृपाल

कोल ने कर के निर्मित कराया था। इसी तरह केडी रोड से लगी संपर्क मार्ग अल्हवा गांव मुशहर बस्ती के सामने तक करीब एक किलोमीटर निर्मित हुई थी,जिसे तत्कालीन एमएलसी केके गौतम जी और पूर्व विधायक राजबली जेशल जी के प्रयास से निर्मित हुई थी। किंतु पूर्व विधायक होने के कारण पूर्व में हुए कार्यों की रिपेयरिंग कराने की पैरवी की शक्ति नहीं रह गई। उक्त दोनों सड़कों के रिपेयरिंग के लिए ग्राम प्रधान अलहवा ने तीन

साल से अधिक समय से पूर्व सांसद प्रयागराज रीता जोशी जी से मांग पत्र दे कर अनुनय विनय किया किंतु कोई अमल नहीं हुआ,विधायक कोरांव राजमणि कोल जी से भी प्रधान ने कई बार मांग किया किंतु रिपेयर का नंबर ही नहीं आया। एम एल सी केपी श्रीवास्तव ने भी जिले के अधिकारियों को लिखा किंतु कोई सुनवाई नहीं हुई। राजमणि कोल विधायक जी कोरांव ने तीन अक्टूबर को लोक निर्माण विभाग प्रयागराज के एक्सियन

को पत्र लिखा है कि उक्त सड़क को अपने विभाग में समायोजित करते हुए मरम्मती करण कराया जाय। क्योंकि पूर्व में उक्त विभाग ने जवाब दिया था कि लोक निर्माण विभाग को जब तक उक्त सड़कें हैंडोवर नहीं हो जाती तब तक मरम्मती करण असंभव है। ग्राम प्रधान शहजादे ने जिला पंचायत अध्यक्ष इलाहाबाद डॉ,वी के सिंह जी से भी मांग पत्र दे कर जिला योजना निधि या जिला पंचायत निधि से रिपेयर कराए जाने की मांग की थी किंतु ध्यान नहीं दिया गया। ग्राम प्रधान अल्हवा ने इलाहाबाद के सांसद कुंवर उज्ज्वल रमण सिंह जी तथा विधायक कोरांव राजमणि कोल जी से अलहवा की उक्त दोनों सड़कों की रिपेयरिंग कराए जाने हेतु मांग की है। जिससे आवागमन में असुविधा न उत्पन्न हो सके। क्योंकि उक्त मार्ग ग्राम सचिवालय भवन तथा प्राथमिक विद्यालय अल्हवा और अमृत सरोवर तालाब,डाकखाना,मतदान केंद्र से जुड़ी हुई हैं।

एम एल सी ने भी सीडीओ को लिखी चिट्ठी : डा, के पी श्रीवास्तव सदस्य विधान परिषद इलाहाबाद कौशांबी ने सीडीओ प्रयागराज को 18 अक्तूबर को पत्र लिखा है कि अल्हवा ग्राम में स्थित केडी रोड से निकली कोलान बस्ती की और मुसहरान बस्ती की दोनों सड़कें नष्ट हो गई हैं। और दोनों सड़कों से जुड़ी आबादी करीब क्रमशः आठ सौ और दूसरे रोड पर तीन सौ से अधिक की आबादी लगी हुई है। जिससे मतदान केंद्र, विद्यालय, ग्राम सचिवालय, डाक खाना, अमृत सरोवर से उक्त मार्ग जुड़े हैं। जिसे पी एम जी एस वाई योजना या जिस योजना से उचित हो बनवाने की सिफारिश की है।

योगी सरकार की पहल से महाकुंभ में सुरक्षित रहेंगे तीर्थयात्री

हाईटेक खोया-पाया प्रणाली से लापता व्यक्ति को ढूंढना और परिजनों से मिलाना होगा आसान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। योगी सरकार ने महाकुंभ के मेले में खोने वाले लोगों को ढूंढने के लिए बड़ा कदम उठाया है। अब नई तकनीक की मदद से मेले में खोए लोगों को आसानी से ढूंढकर उनके परिजनों से मिला दिया जाएगा।

खोया-पाया पंजीकरण प्रणाली से होगी सुरक्षा : कुंभ मेले में हर व्यक्ति का ध्यान रखा जाएगा और ये कोशिश होगी कि कोई भी अपनों से बिछड़ न पाए और अगर ऐसा होता भी है तो जल्द से जल्द अपने परिजनों से मिल सके। प्रयागराज मेला प्राधिकरण और पुलिस विभाग मिलकर इस बार के महाकुंभ मेले में एक उच्च तकनीक से युक्त खोया-पाया पंजीकरण प्रणाली से तीर्थयात्रियों को सुरक्षित करेगा। यह नई पहल सुरक्षा, जिम्मेदारी और तकनीक का अद्भुत संगम है, जो महाकुंभ मेला को सुरक्षित और सुखद अनुभव बना देगी। अब नहीं होंगे कुंभ के मेले में बिछड़ने वाले दृश्य भारतीय सिनेमा में कुंभ मेले की भीड़ से अलग हुए लोगों की कहानियों की भरमार रही है। फिल्मों में गंभीर संवाद हो या हास्य, कहीं न कहीं कुंभ मेले में बिछड़ने वाले डायलॉग सुनने को मिल ही जाते हैं। लेकिन अब इस हाई-टेक खोया-पाया केंद्र की बदौलत, महाकुंभ मेले में ऐसा ह्रदयस्पर्शी बिछड़ने वाला दृश्य शायद ही देखने को मिले। इन केंद्रों में खोए हुए व्यक्तियों का डिजिटल पंजीकरण होगा, जिससे उनके परिवार या मित्र आसानी से उन्हें खोज सकेंगे। साथ ही सभी लापता व्यक्तियों के लिए केंद्रों पर उद्घोषणा की जाएगी।

नई तकनीक के साथ होगी नई कहानी : महाकुंभ 2025 में शामिल होने वाले तीर्थयात्रियों के लिए सरकार ऐसे डिजिटल खोया-पाया केंद्रों की स्थापना करेगा जो खोए हुए व्यक्तियों को उनके परिजनों से मिलाने की पूरी कोशिश करेगा। इसमें हर खोए हुए व्यक्ति का पंजीकरण तुरंत किया जाएगा और उसकी जानकारी को अन्य केंद्रों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक और एक्स (पहले ट्वीटर) पर भी प्रसारित किया जाएगा। यह व्यवस्था महाकुंभ मेले को न केवल सुरक्षित बनाएगी, बल्कि परिवारों को जल्दी और आसानी से अपने प्रियजनों से जोड़ने का काम करेगी।

महिलाओं और बच्चों को दी जाएगी प्राथमिकता : इस बार बच्चों और महिलाओं की सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई है। किसी भी वयस्क को बच्चे या महिला का दावा करने पर पहले उनकी पहचान की पुष्टि करनी होगी। अगर कोई संदेह होता है तो तत्काल पुलिस को सूचित किया जाएगा ताकि बच्चा या महिला सुरक्षित हाथों में जाए। यह व्यवस्था उन फिल्मी कहानियों को पूरी तरह बदल देती है, जहां खोए हुए बच्चे को गलत हाथों में सौंप दिया जाता था।

प्लास्टिक फ्री दुकान हेतु हर दुकान दस्तक अभियान

प्रयागराज। आगामी महाकुंभ के दृष्टिगत प्लास्टिक फ्री दुकान हेतु नगर निगम प्रयागराज द्वारा विभिन्न प्रकार के गतिविधि संचालित की जा रही है। जिसके क्रम आज कम्पनी गार्डन गेट नम्बर 1 से पत्रिका चौराहा व्यवसायिक क्षेत्र में आईसीई टीम द्वारा रैली निकालकर हर दुकान दस्तक अभियान चलाया गया। जिसमें दुकानदारों को सिंगल यूज प्लास्टिक प्रतिबंध हेतु जागरूक किया गया और कपड़े या जूट के झोले इस्तेमाल की बात की गई।

गृहकर का भुगतान हुआ और भी आसान : व्हाट्सएप पर लिंक, यूपीआई से भी करें गृहकर का भुगतान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर निगम प्रयागराज के महापौर उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी द्वारा शुक्रवार को नगर निगम प्रयागराज तथा बैंक ऑफ बड़ौदा की एक नई और अत्याधुनिक सेवा का उद्घाटन किया गया।

हम सभी जानते हैं कि आज का युग डिजिटल है, और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का व्यापक उपयोग हो रहा है। इस तेजी से बदलते युग में, बैंक ऑफ बड़ौदा ने प्रयागराज के नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एक अत्याधुनिक सेवा की शुरुआत की है व्हाट्सएप आधारित कर संग्रहण सेवा। महापौर जी द्वारा बताया गया कि यह अवसर हमारे लिए अत्यंत गौरव का क्षण है, क्योंकि नागरिकों को अपने गृह कर एवं जल कर इत्यादि की जानकारी और देय बिलों की याद दिलाने के लिए व्हाट्सएप और एसएमएस के माध्यम से सूचनाएं प्राप्त होंगी एवं नागरिकों को समय पर घर बैठे अपने करों का भुगतान करने में मदद करेगी और उन्हें लंबी कतारों और अन्य परेशानियों से मुक्ति मिलेगी। सिर्फ इतना ही नहीं, बैंक ऑफ बड़ौदा ने एक मोबाइल आधारित एप्लिकेशन भी तैयार किया है, जो घर-घर जाकर संपत्ति कर, पानी कर और अन्य गैर-करों के संग्रहड़ में मदद करेगा। यह सेवा नागरिकों को उनके दरवाजे पर ही सुविधाजनक रूप से कर जमा करने की सुविधा प्रदान करेगी। इसके साथ ही, बैंक ऑफ बड़ौदा ने एक और नवोन्मेषी कदम उठाया है एआई कैमरा टेक्नोलॉजी का उपयोग। यह कैमरा अवैध और अनधिकृत होर्डिंग्स की पहचान करेगा, सार्वजनिक स्थानों पर कचरा जमा होने की स्थिति का निरीक्षण करेगा और टूटी हुई स्ट्रीट लाइट्स की जानकारी देगा। यह तकनीक नगर को स्वच्छ, सुंदर और व्यवस्थित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इसका इस्तेमाल आने वाले महाकुंभ मे भी किया जाएगा। हम आशा करते हैं कि यह सेवाएं प्रयागराज के नागरिकों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होंगी। इस डिजिटल युग में यह कदम हमें प्रगति और सुगमता की दिशा में एक नई ऊंचाई पर ले जाएगा। इस दौरान महापौर की अध्यक्षता में मुख्य कर निर्धारण अधिकारी, मुख्य वित एवं लेखाधिकारी, बैंक ऑफ बडोदा के डिप्टी जनरल मैनेजर रचना मिश्रा, एजीएम बैंक ऑफ बडोदा चन्द्रकान्त चक्रवती, ई.वाई. कन्सलटेन्ट प्रभात यादव तथा अश्वनी कुमार आदि उपस्थित रहे।

प्रयागराज जंक्शन पर बरामद हुई कई ब्रांड की अंग्रेजी शराब

प्रयागराज। यूपी से बिहार में शराब तस्करी के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। प्रयागराज जंक्शन पर रेलवे सुरक्षा बल और जीआरपी ने दो शराब तस्करों को पकड़ा है। यह तस्कर शराब की खेप लेकर महानंदा एक्सप्रेस में सवार होने वाले थे। इसके पास से कई ब्रांड की अंग्रेजी शराब बरामद हुई है। शराब की कीमत 14520 रुपये है ट्रेनों के जरिए इन दिनों शराब तस्करी के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। खासकर प्रयागराज जंक्शन पर कई ट्रेनों में शराब ले जाने के मामले सामने आए हैं। शुक्रवार को आरपीएफ ने प्रयागराज जंक्शन के प्लेटफार्म संख्या 4/5 से शराब तस्कर प्रभाकर सिंह पुत्र अनिल सिंह को पकड़ा। यह चमरपुर नंदौत फूलपुर का रहने वाला है। इसके साथ जनार्दन सिंह पुत्र अनिल सिंह निवासी फूलपुर को अरेस्ट किया गया। दोनों की उम्र 32 और 26 साल है। इनके पास से दो बैग में भरी शराब बरामद हुई है। दोनों तस्कर प्रयागराज जंक्शन पहुंची महानंदा एक्सप्रेस में शराब लेकर सवार होने वाले थे। तभी इन्हें दबोच लिया गया। इनके पास से महानंदा एक्सप्रेस के टिकट मिले हैं। दोनों तस्करों से 180 एमएल वाले 121 ऑफिसर च्वाइस शराब मिली है पूछताछ में दोनों ने कबूल किया कि ट्रेनों के माध्यम से शराब की तस्करी कर बिहार प्रान्त ले जाकर ऊंचे दामों में बेचते हैं। आरपीएफ ने दोनों के खिलाफ केस दर्ज किया है। गिरफ्तारी उप निरीक्षक टीपी सरोज और उप निरीक्षक पंकज कुमार सिंह ने की।

न्यूज झरोखा

करवा चौथ के पहले ही सब्जी मंडी मिजार्पुर मार्ग पर लगा जाम

नैनी। नैनी सब्जी मंडी मिजार्पुर मार्ग पर करवा चौथ के पहले ही करवा चौथ की खरीददारी को लेकर शुक्रवार को मिजार्पुर मार्ग पर वाहनों का लम्बा जाम लग गया। वहीं नैनी बाजार में भी लोगों की भीड़ जुटी रही। जिससे राहगीरों को तमाम तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एडीए मोड़ से लेकर अरैल मोड़ तक भीषड़ जाम से लोग जूझते नजर आए। वहीं वाहनों की अधिक संख्या के कारण रीवा राजमार्ग पर भी जाम लगा रहा। नैनी के एडीए मोड़ से लेकर अरैल मोड़ चौराहा तक जाम लगने की वजह से वाहनों को निकलने में घंटों लग गए। नैनी में जाम का झाम आम बात हो गई है, दिन रात आने जाने वाले लोग आए दिन जाम से परेशान ही रहते हैं, किसी मन्त्री, सांसद, विधायक, को कोई फर्क नहीं पड़ता है, कभी किसी ने जाम झेल रहे लोगों की पीड़ा को समझा ही नहीं।

कार्तिक मास के शुभारम्भ पर विश्व कल्याण के लिए मां गंगा-यमुना की हुई आरती

नैनी। नैनी अरैल में कार्तिक मास के शुभारंभ पर संगम तट अरैल नैनी में माता गंगा व माता यमुना की आरती भक्तिभाव से किया गया। विश्व कल्याण के लिए गंगा माता जी व यमुना माता जी से प्रार्थना किया गया की देश में अमन कायम रहे। प्राणियों में सदभावना हो। इसी के साथ गंगा जमुना की आरती उतारी गयी। इस अवसर पर आनलाईन बाबा राज बाबू के नेतृत्व में आरती किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ अधिवक्ता विपिन पांडे, पंडित अखिलेश अग्निहोत्री, पूर्व ब्लाक प्रमुख भाजपा नेता संजय श्रीवास्तव, सामाजिक कार्यकर्ता सुरेंद्र त्रिपाठी, बाबू यादव, अखिलेश पांडे एडवोकेट सूबेदार तिवारी आदि सामाजिक कार्यकर्ताओं ने माँ गंगा माँ जमुना की पूरी विधि विधान से पूजा अर्चना व आरती की।

पीएम मोदी के खिलाफ दाखिल चुनाव याचिका खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकसभा चुनाव में निर्वाचन के खिलाफ दाखिल चुनाव याचिका खारिज कर दी। न्यायमूर्ति सौमित्र दयाल सिंह की अदालत ने बीते लोकसभा चुनाव में वाराणसी सीट से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ नामांकन करने वाले विजय नंदन की याचिका पर यह आदेश दिया। कोर्ट ने कहा कि चुनाव याचिका पहली बार गत तीन सितंबर को पेश की गई थी। याचिका पर यह रिपोर्ट दी गई है कि यह समय सीमा से 19 दिन बाद की है। हालांकि देरी की माफी के लिए प्रार्थना पत्र दिया गया है। कोर्ट ने याची से पूछा कि क्या वह इस पहलू पर कानूनी राय लेना चाहते हैं या समय लेना चाहते हैं। याची ने समय की मांग की। इस पर कोर्ट ने याचिका को 18 अक्टूबर को सूचीबद्ध करने का निर्देश दिया।याचिका के अनुसार जिला निर्वाचन अधिकारी ने विजय नंदन का नामांकन खारिज कर दिया था। जनहित पार्टी से जुड़े मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के निवासी विजय नंदन का कहना है कि निर्वाचन अधिकारी ने उनका नामांकन गलत तरीके से खारिज किया है। चुनाव याचिका में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का निर्वाचन रद्द करने, याची के नामांकन को वैध करार देकर वाराणसी सीट पर फिर से चुनाव कराने आदि की मांग की थी।

22 अक्टूबर तक वाहन स्वामी भुगतान हेतु लागबुक सम्बंधित कार्यालय में करें जमा

प्रयागराज। नियत तिथि तक लागबुक जमा नहीं कराने पर किराये-भाड़े का भुगतान किया जाना सम्भव नहीं हो पायेगा, जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी वाहन स्वामियों की होगी। लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 में प्रयोग किये गये सभी निजी हल्के एवं भारी वाहन स्वामियों को सूचित किया है कि उनके किराये-भाड़े का भुगतान उनके बैंक खाते में ई-पेमेन्ट के माध्यम से किया जाना है, जिनके वाहन उक्त निर्वाचन में प्रयोग किये गये हैं, वे अपने बैंक खाते की पासबुक की छायाप्रति, मोबाईल सं0 सहित, पोलिंग पर जाते समय ड्राइवर को उपलब्ध कराये गये रूटचार्ट की प्रति तथा लाग बुक (वाहन में लिये गये ईधन एवं तय की गयी दूरी के अंकन के साथ) संलग्न कर भारी वाहनों की धनराशि के भुगतान हेतु सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रशासन)/(प्रवर्तन) कार्यालय, (आर0टी0ओ0 आफिस) तथा हल्के वाहनों की धनराशि के भुगतान हेतु नाजिर सदर, कलेक्ट्रेट, प्रयागराज के कार्यालय में प्रत्येक दशा में दिनांक 22.10.2024 तक अवश्य जमा कर दें। यदि नियत तिथि 22.10.2024 तक लागबुक जमा नहीं की जाती, तो उनके किराये-भाड़े का भुगतान किया जाना सम्भव नहीं हो पायेगा, जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी वाहन स्वामियों की होगी। यह जानकारी नगर मजिस्ट्रेट/प्रभारी अधिकारी (यातायात) विनोद कुमार सिंह ने दी है।

शुआट्स संस्थापक डा सैम हिगिनबॉटम की 150वीं जयंती पर साप्ताहिक कृतज्ञता महोत्सव का आयोजन

प्रयागराज। सैम हिगिनबॉटम विश्वविद्यालय कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान (शुआट्स), प्रयागराज अपने संस्थापक डॉ॰ सैम हिग्गनबॉटम की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य पर उनके गौरवशाली इतिहास और योगदान को याद करने के लिए एक सप्ताह लंबा भव्य कृतज्ञता महोत्सव 21 से 27 अक्टूबर 2024 तक मनाएगा, जिसका समापन डॉ॰ सैम हिगिनबॉटम के जन्मदिन पर धन्यवाद थैंक्स गिविंग कार्यक्रम के साथ होगा। शुआट्स की स्थापना 1910 में डॉ0 सैम हिगिनबॉटम ने कृषि शिक्षा, अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और विस्तार के माध्यम से ग्रामीण भारत को उठाने के मिशन के साथ की थी। संस्थापक सप्ताह समारोह में शैक्षिक सेमिनार और कार्यशालाएं, सांस्कृतिक प्रदर्शनियाँ, सामाजिक आउटरीच कार्यक्रम आदि आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य डॉ॰ सैम हिगिनबॉटम की विरासत का सम्मानित करना और शिक्षा और नवाचार के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने के उनके विजन के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता की पुष्टि करना है। शुआट्स के कुलपति प्रो. (डॉ.) राजेंद्र बी. लाल ने कहा कि कृषि विकास और शिक्षा के प्रति डॉ. सैम हिगिनबॉटम के निस्वार्थ समर्पण ने पीढ़ियों को प्रेरित किया है। जब हम उनकी विरासत का जश्न मनाते हैं, तो हम ईश्वर की सेवा और भूखे को भोजन के माध्यम से जीवन बदलने के उनके दृष्टिकोण के प्रति खुद को फिर से प्रतिबद्ध करते हैं।

नैनी के संजय नगर मोहल्ले में नाली जाम ,भीषण गंदगी से लोग परेशान

नैनी। नैनी क्षेत्र के संजय नगर मोहल्ले में नियमित सफाई के अभाव में नाली पूरी तरीके से जाम हो गया है। जिसके चलते मोहल्ले में भीषण गंदगी का साम्राज्य व्याप्त है। यहां के लोग नारकीय जीवन बिताने पर मजबूर हो गए हैं। बताया जाता है, कि नैनी क्षेत्र के संजय नगर मोहल्ला विकास खंड चाका क्षेत्र के नैनी तालुका नैनी ददरी ग्रामसभा का हिस्सा है यहां की आबादी तकरीबन 500 की है। यहां पर विगत कई साल पहले नाली का निर्माण कराया गया था। जिसकी नियमित सफाई न कराए जाने से पूरी तरीके से जाम हो गया है। जिसके चलते लोगों के घरों का पानी निकासी के अभाव में गलियों में भरा रहता है। जल जमाव के होने से भीषण गंदगी का साम्राज्य है। भीषण गंदगी के चलते मच्छरों की भरमार है। इससे क्षेत्र में तमाम तरह की बीमारियां फैलने की संभावनाएं बनी हुई है। इसकी जानकारी क्षेत्रीय लोगों के द्वारा विभागीय अधिकारियों को कई बार दी गई ,परंतु उनके द्वारा आज तक इस पर कोई भी ध्यान नहीं दिया गया। जिससे लोगों में उनके प्रति जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है। क्षेत्रीय लोगों ने विभागीय उच्च अधिकारियों को आगाह किया है ,कि यदि समय रहते उनके द्वारा इस पर कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाया गया, तो समूचा क्षेत्र किसी भयावह बीमारी की चपेट में आ जाएगा जिस पर काबू पाना मुश्किल हो जाएगा।

छिवकी में ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

नैनी। नैनी छिवकी जंक्शन के आउटर पर शुक्रवार को एक ट्रेन रुकी थी। ट्रेन से उतरकर एक युवक ट्रैक पार करने लगा। उसी दौरान वह ट्रेन की चपेट में आ गया जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक के जेब से मिले आधार कार्ड से उसकी शिनाख्त मांडा के लक्षन चौकठा गांव निवासी जगन्नाथ बघेल उर्फ कुल्लू के रूप में हुई। परिजनों ने पुलिस को बताया कि जगन्नाथ ट्रेन में चना बेचता था।

दलित बालिका से दुष्कर्म व हत्या के केश का खुलासा करने के लिए किया गया स्वागत सम्मान

सोरांव। इलाके के उसरही क्षेत्र में बीते 3 अक्टूबर को दलित बालिका के साथ दुष्कर्म और हत्या जैसे जघन्य अपराध का सही खुलासा करने के लिए पुलिस टीम का भव्य स्वागत सम्मान समारोह श्यामा वाटिका गेट नंबर 1 में किया गया। जिसमे शिवगढ़, उसरही, सराय भोगी,भावापुर, प्रसादपुर सहित दर्जनों गांव के लोग रहे। कार्यक्रम में क्षेत्र के सम्मानित सैकड़ो ग्राम वासियों ने कार्यक्रम के भाग लिए। वहीं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे सहायक पुलिस आयुक्त सोरांव जंग बहादुर ने बताया केश का खुलासा करने के लिए जनपद की एसओजी टीम संग क्राइम ब्रांच संग सर्किल की फोर्स ने अथक परिश्रम किए। जिससे पीड़िता बालिका संग परिजनों को न्याय मिल सका। जिसमे क्षेत्र की जनता संग पूरे टीम का सहयोग रहा और सभी लोग बधाई के पात्र हैं। वहीं थाना प्रभारी बृजेश कुमार तिवारी ने बताया कि अपराधियों की कोई जाति नहीं होती है अपराधी को हमेशा सलाखों के पीछे ही रहना चाहिए यही हम लोगों की कोशिश रहती है। एसओजी प्रभारी सुखचैन तिवारी ने बताया कि मामले का खुलासा करने के लिए क्षेत्र की जनता ने बहुत ही अच्छा सहयोग किया। जिससे सभी लोग बधाई के पात्र हैं और सहयोग करने से ही इस अंधे हत्या का केस का सही खुलासा हो पाया। कार्यक्रम में दरोगा विपिन पाल, दरोगा मानवेंद्र सिंह, दरोगा धीरज प्रजापति, दरोगा दिवेश चंद्र, दरोगा, आलोक सिंह, महिला दरोगा शबनम, दरोगा रश्मि, कांस्टेबल नेहा यादव, प्रिया चौधरी, कामनी सहित दर्जनों लोगों का अंग वस्त्र देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से ग्राम प्रधान पति अवधेश कुमार कुशवाहा, अध्यक्ष लालचंद पटेल, कार्यक्रम के व्यवस्थापक राजेश कुशवाहा, मोहम्मद इलियास, अविनाश केसरवानी, पूर्व प्रधान शंभू नाथ गुप्ता, राजेश कुमार (पत्रकार) एडवोकेट, डॉ उदय पटेल, मुकीम अहमद, सुरेश यादव उर्फ गोरे लाल, राम चंद्र गुप्ता, सचिव नितेश पाल, लेखपाल अरुण कुमार सरोज, पंचायत सहायक उर्मिला कुशवाहा, अंजली विश्वकर्मा, धर्मेंद्र पत्रकार, एडवोकेट पंकज यादव,भीम सेन यादव, अनुभव सिंह सहित सैकड़ों लोग रहे।

मरम्मत कार्य के चलते तीन घंटे गुल रही बिजली

झूंसी। महाकुंभ मेला में बिजली सप्लाई के लिए चल रहे मरम्मत कार्य के चलते झूंसी के आवास विकास योजना 3, योजना दो व आजाद नगर में तीन घंटे से अधिक समय तक बिजली गुल रहने की वजह से लोगो को दिक्कत का सामना करना पड़ा। शुक्रवार की दोपहर 2 बजे के करीब अचानक हजारो घरो की बिजली गुल हो गई। काफी देर इंतजार के बाद जब बिजली नही आई तो लोग परेशान हो गए। 5 बजे के बाद आपूर्ति चालू हुई तब लोगो ने राहत की सास ली। जानकारी देते हुए अवर अभियंता जितेंद्र मौर्य ने बताया कि मेले में निर्बाध विधुत सप्लाई के लिए आवास विकास पावर हाउस में काम चल रहा था। जिसकी वजह से बिजली कटी हुई थी।

जनसेवा समिति रामलीला में धनुष यज्ञ की लीला का अत्यंत मनोहारी मंचन हुआ

नैनी। नैनी छिवकी स्टेशन रोड पर जन सेवा समिति रामलीला में फुलवारी दर्शन एवं धनुष यज्ञ की लीला का अत्यंत मनोहारी मंचन हुआ। माता सीता सखियों संग गौरी पूजन के लिए जाती हैं। वहीं फुलवारी में भगवान राम और माता सीता एक दूसरे को देखते हैं और एक टक देखते ही रह जाते हैं। माता सीता मां गौरी से राम को वर रूप में पाने का वर प्राप्त करती हैं। सीता स्वयंवर में उपस्थित बड़े-बड़े राजाओं के द्वारा शिव धनुष को तोड़ना तो दूर उठाने में भी असमर्थ होने से क्षुब्ध महाराज जनक विलाप करने लगते हैं और कहते हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह धरा वीरों से खाली है। इस पर लखन लाल क्रोधित हो जाते हैं और महाराज जनक का प्रतिवाद करने लगते हैं। राम उन्हें शांत करते हैं। महर्षि विश्वामित्र शुभ समय जानकर शिव धनुष भंग करने के लिए राम को आदेशित करते हैं। राम, लक्ष्मण को पृथ्वी एवं समस्त ब्रह्मांड को संभालने का आदेश देते हैं और पलक झपकते ही धनुष भंग कर देते हैं। चारों ओर जय श्री राम के जयकारे गूंजने लगते हैं। पुष्प वर्षा होने लगती है। सीता राम के गले में जयमाल डाल देती हैं। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से विनय सिंह, रवि सिंह, हरि शंकर सिंह, आर एल डी दुबे, दयाशंकर तिवारी, विमल गुप्ता, संतोष सिंह, सनी केसरवानी, मीडिया प्रभारी आर के शुक्ला, अनिल चौधरी, हरि बाबू सिंह, सुरेंद्र यादव, सिलवंत सिंह, अनुग्रह जायसवाल, विशाल श्रीवास्तव, दिनेश सिंह, शशि सिंह, सर्वेश सिंह, बजरंगी लाल, मनोज जायसवाल आदि उपस्थित रहे।

नैनी में डेरी का दशहरा आज

नैनी। नैनी औद्योगिक क्षेत्र स्थित डेरी का दशहरा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़े धूमधाम के साथ शनिवार को मनाया जाएगा। अध्यक्ष एवं पार्षद प्रतिनिधि धर्निश कुमार सिंह (मंचू) ने बताया कि बीते कई वर्षों से परंपरागत के मुताबिक श्री रामलीला मंचन का कार्यक्रम आयोजन किया जाता है। इसके बाद दशहरे मेला का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ 19 अक्टूबर दिन शनिवार को सायंकाल से प्रारंभ होगा। जो रात भर जारी रहेगा। दशहरे मेले में प्रभु श्री राम दल के अलावा कई प्रकार की कलात्मक चौकियों का प्रदर्शन किया जाएगा। इस मेले में आसपास के क्षेत्र के हजारों लोग शामिल होते।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र आशुतोष धनगर ashutosh dhangar के स्थान पर आशुतोष धनगर ashutosh dhanagar आधार कार्ड के अनुसार होना चाहिए दोनों नाम एक ही है पिता का नाम अशोक कुमार पाल और माता का नाम अमलेशा amalesha और आधार कार्ड में अमलेशा पाल amalesha pal है जो दोनों नाम एक ही है जो सच है। अतः मेरे पुत्र का विद्यालय में एडमिशन फार्म में पिता का नाम अशोक कुमार पाल ashok kumar pal और माता का नाम अमलेशा की जगह अमलेशा पाल amalesha pal तथा बच्चे का नाम आशुतोष धनगर ashutosh dhanagar सच व सही समझा जाय।

अशोक कुमार पाल पुत्र स्वर्गीय राम अवध पाल निवासी वार्ड नंबर 50 कटका थाना झूंसी प्रयागराज 211019 यूपी

दो दिवसीय कंस वध लीला मेला आज से

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के नवाबगंज चैराहे पर लगने वाला दो दिवसीय ऐतिहासिक कंस वध लीला मेला का आयोजन मेला कमेटी के द्वारा शनिवार व रविवार को किया गया है मेले में आने वाले दुकानदारों के लिए कमेटी द्वारा बिजली की व्यवस्था के साथ रविवार को समापन पर रात में नौटंकी का प्रोग्राम किया गया है। मेलाथिन्यों की सुरक्षा के लिए मेला कमेटी के सदस्य मेला में सक्रिय रहेंगे।मेला कमेटी के पदाधिकारी रामगोपाल अग्रहरि, रामखेलावन अग्रहरि, गिरिजा शंकर अग्रहरि,संतोष अग्रहरि, रमेश अग्रहरि, रामेंसुर अग्रहरि सहित अन्य पदाधिकारी मेले की तैयारी में जुटे हुए है।दो दिवसीय मेले के आयोजन में थाना प्रभारी धीरेंद्र ठाकुर अपने पूरे दल बल के साथ तटस्थ दिखाई देगे महिला सिपाही भी मेले में सादे ड्रेस में घूमती रहेगी साथ में सादे ड्रेस में पुलिस कर्मी भी मौजूद रहेंगे मेला को शांति पूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए नवाबगंज पुलिस पूरी तरह तटस्थ है।

जिलाधिकारी ने दूर-दराज से आये शिकायतकर्ताओं की सुनी समस्याएं

अधिकारियों को दिया निस्तारण का निर्देश

अखंड भारत संदेश

शिकायतकर्ताओं की समस्याएं सुनते जिलाधिकारी संजीव रंजन।

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने कलेक्टेट्रट कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान दूर-दराज से आये हुये फरियादियों की शिकायतों को गम्भीरतापूर्वक सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

जनसुनवाई के दौरान शिकायतकर्ता राधेश्याम सिंह निवासी हैसीजयचन्द, थाना मानधाता ने शिकायत किया कि प्रार्थी भूमिधरी का स्वामी है जिस पर प्रार्थी पूर्वजीय काल से काबिज दाखिल चले आ रहे है किन्तु सरहद के गांव के परशुरामपुर के निजामुद्दीन, नईमुद्दीन प्रार्थी की भूमि हड़पने की नियत से प्रार्थी के गाटा संख्या के बगल के नमबरान 389 जो बाग है की बारह विस्वा का बैनामा लेकर बैनामे की आड़ में प्रार्थी के गाटा संख्या का सम्पूर्ण भाग को जबरन जालीदार तार से घेर लिया है, प्रार्थी की सम्पूर्ण भूमि पर अवैध कब्जा हो गया है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी सदर व एसओ मानधाता को निर्देशित किया है कि राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम बनाकर शिकायत का समाधान करायें।

शिकायतकर्ता राधेश्याम गौतम निवासी सराय इन्द्रावत थाना जेठवारा ने बताया कि प्रार्थी विकलांग एवं असहाय व्यक्ति है, चलने फिरने में असमर्थ है और बहुत ही परेशान है और मेरा विकलांग प्रमाण पत्र बना हुआ है, मुझे विकलांग बैटरी रिक्शा दिलाया जाये जिससे मैं चल फिर सकूँ, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने जिला दिव्यांगजन अधिकारी को आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया है। जनसुनवाई के दौरान प्राप्त राजस्व शिकायतों के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर जाकर निष्पक्ष जांच कर, शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से करें जिससे शिकायतकर्ता को इधर-उधर भटकना न पड़े। उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया है कि जनकल्याणकारी योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करें, कोई भी पात्र व्यक्ति योजना से वंचित न रहें इसका विशेष ध्यान दें।

श्रीराम कथा के आयोजन को लेकर निकली कलश यात्रा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर ब्लॉक के पूरे मना सिंह रेहुवा लालगंज गांव निवासी दिनेश सिंह बघेल के आवास पर शुक्रवार से साप्ताहिक संगीतमई श्री राम कथा का आयोजन किया गया है। इसको लेकर मुख्य जजमान आशा सिंह के संयोजन में कथावाचक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वक्ता पारसमणि महराज के नेतृत्व में श्रद्धालुओं ने भव्यता से कलश यात्रा निकाली। कथा प्रारंभ के पूर्व शुक्रवार सुबह महिलाएं, किशोरियां सिर पर सजा हुआ कलश रख कर अखंड भारत हेतु लोगों को जागरूक करने के लिये भ्रमण किया। कलश यात्रा के दौरान समूचा इलाका जय श्रीराम के जयकारे से गूंज उठा। कथा व्यास ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला। कथा का संचालन संकल्प दास महराज ने किया। इस मौके पर पूर्व प्रधान महेंद्र सिंह, उम्मेद सिंह, शेर सिंह इंसान, शैलेन्द्र सिंह, मनोज सिंह अशोक सिंह, दीपक सिंह, गोपाल आदि मौजूद रहे।

निहारिका तिवारी का सिविल सेवा में हुआ चयन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कोहड़ौर थाना क्षेत्र के पूरेमुसई गांव निवासी जिला पंचायत सदस्य मंगरौरा तृतीय पं. इन्द्रदेव तिवारी के भतीजे आनन्द तिवारी की पत्नी निहारिका तिवारी का हरियाणा पीसीएस यानी हरियाणा सिविल सेवा में चयन हुआ है। निहारिका इसके पहले डीडी न्यूज में एंकर भी रह चुकी हैं।

साकेत गर्ल्स पीजी कालेज में हुई अन्तर्महाविद्यालयीय तलवारबाजी प्रतियोगिता

खिलाड़ियों को बताए गये तलवारबाजी के विशेष गुर

अखंड भारत संदेश

प्रमाण पत्र के साथ तलवारबाजी प्रतियोगिता के प्रतिभागीगण।

प्रतापगढ़। अन्तर्महाविद्यालीय तलवारबाजी प्रतियोगिता के लिए साकेत गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज दहिलामऊ, प्रतापगढ़ को चयनित किया गया है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय द्वारा नामित पर्यवेक्षक डॉ0 अशुमान सिंह स्वामी करपात्री महाराज राजकीय महाविद्यालय, रानीगंज एवं महाविद्यालय के पर्यवेक्षक राम शिरोमणि सिंह, प्रवक्ता ग्राम विकास इण्टर कॉलेज, देल्हूपुर की उपस्थिति में कुल 06 पुरूष वर्ग में और 10 महिला वर्ग में खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया।

महिला वर्ग की विश्वविद्यालय टीम के लिए कु0 प्राची मिश्रा, एस.बी.एम. लालगंज, वंशिका तिवारी, शहरीन, खुशबू, रिंकी एवं राधिका साकेत गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, दहिलामऊ, प्रतापगढ़, बबिता पटेल, पी.बी.पी.जी. कॉलेज, कीर्ति गुप्ता, बद्रीनारायण सिंह महाविद्यालय, सकरौली, प्रतापगढ़ मोनिका, सरयू देवी महाविद्यालय, पट्टी प्रतापगढ़ का चयन किया गया तथा पुरूष वर्ग में दिव्यांशु, आचार्या रमाकान्त, उत्पल सिंह, उपरदहा डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, विशाल कनौजिया, रोहन कुमार, राजू पटेल, पी.बी.पी.जी कॉलेज, सिटी प्रतापगढ़, धर्मेन्द चैहान, सरयू देवी महाविद्यालय पट्टी प्रतापगढ़ को चयनित किया गया। राष्ट्रीय तलवारबाजी के खिलाड़ी मो0 कलीम, अल्का सरोज एवं रमेश पप्पू कोच स्टेडियम निर्णायक रहे। मुख्य अतिथि के रूप में जिला क्रीड़ाधिकारी पूनमलता राज ने प्रतियोगिता प्रारम्भ करने के पूर्व खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त किया और तलवारबाजी खेल के कुछ विशेष गुर खिलाड़ियों को बताई। जिला क्रीड़ा स्टेडियम क्रिकेट कोच आदित्य शुक्ला ने खिलाड़ियों को खेल के प्रति ईमानदार रहने और जीत हार से ऊपर उठकर खेलने का संदेश दिया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 नीलिमा श्रीवास्तव ने कहा कि बिना स्वस्थ शरीर के स्वस्थ मस्तिष्क नहीं हो सकता और बिना स्वस्थ मस्तिष्क से स्वस्थ समाज की कल्पना भी करना व्यर्थ है। कार्यक्रम का आयोजन संजय पाण्डेय सहायक प्राध्यापक शारीरिक शिक्षा साकेत गर्ल्स पी.जी. कॉलेज द्वारा सम्पन्न कराया गया।

बीट आरक्षियों को एसपी ने किया पुरस्कृत

अखंड भारत संदेश

आरक्षी को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते एसपी।

प्रतापगढ़। आरक्षी सर्वेश पाण्डेय, आरक्षी धर्मेन्द्र सिंह, आरक्षी रमाकान्त सिंह व आरक्षी कुलदीप गौतम को एसपी ने सम्मानित किया। बता दें कि गम्भीर अपराधों में संलिप्त अपराधियों/गैंगेस्टर का साये की तरह पीछा कर उनकी गिरफ्तारी सुनिश्चित करने में बीट आरक्षियों द्वारा अहम जानकारी जुटायी गई थी।

एसपी ने जनपद के सभी बीट पुलिस कमिऱ्यों को बेहतर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए एसपी ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। बता दें कि थाना देल्हूपुर से आरक्षी सर्वेश पाण्डेय, थाना जेठवारा से आरक्षी धर्मेन्द्र सिंह, थाना कोतवाली नगर से आरक्षी रमाकान्त सिंह व थाना दिलीपपुर से आरक्षी कुलदीप गौतम को उनके द्वारा वृत्य अदम्य साहसपूर्ण एवं सराहनीय कार्य पर एसपी द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया एवं सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

परियावां बाजार में आये दिन बड़े छोटे वाहनों से लगता है भीषण जाम

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। परियावा लवाना मार्ग के नवाबगंज थाना क्षेत्र के परियावा पाइकगंज बाजार में शुक्रवार की दोपहर लगभग दो बजे माता मैया मंदिर के गेट से लेकर रेलवे फाटक के उस पार तक डंफर ट्रक व ट्रैक्टर के बीच में आमने सामने आ जाने के कारण दोनों तरफ वाहनों की अच्छी खासी लाइन लग गई जिसमें स्कूल से छुट्टी होने पर बच्चो को उनके घर छोड़ने जा रही बस भी जाम में फंसी रही जिसमें दो व तीन चार पहिया छोटे वाहनों का निकलना मुश्किल हो गया जिसमें स्कूली बच्चे हलकान दिखाई दिये स्टेट बैंक के अंदर मौजूद नवाबगंज पुलिस के बैंक सुरक्षा कर्मी सिपाही बाहर निकलकर आए तो किसी तरह जाम को धीरे धीरे करके आवागमन बहाल कराया जिसमे लगभग एक घंटे लग गए आवागमन बहाल होने पर वाहन चालकों ने राहत की सांस लिया। बता दे कि नवाबगंज थाना क्षेत्र के नवाबगंज चैराहे निर्माणाधीन ओवरब्रिज के आस पास पच्चीसों ऑटो रिक्शा गलत तरीके से सड़क पर खड़े रहते है जिससे दो पहिया बाइक चालकों व साइकिल सवारों का निकल पाना मुश्किल हो जाता है।

कार की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत, पिता घायल

पिता की हालत गंभीर, जिला मेडिकल कॉलेज रेफर, मौत की सूचना मिलते ही परिजनों में मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

मार्ग दुर्घटना में घायल मोतीलाल

पट्टी, प्रतापगढ़। बाइक और कार की आमने-सामने जोरदार भिड़ंत में बाइक चला रहा बेटा व पीछे बैठा पिता गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद मौके से कार सवार गाड़ी समेत मौके से भाग निकला।

राहगीरों की मदद से घायलों को प्राइवेट वाहन से सीएचसी लाया गया। इलाज के उपरांत चिकित्सकों ने बेटे को मृत्यु घोषित कर दिया। वही पिता की गंभीर हालत होने के चलते मेडिकल कॉलेज के लिए भेजा गया है। आसपुर देवसरा गांव के आमापुर बाजार के रहने वाले मोतीलाल (58) वर्ष व उसका बेटा अजय (23) वर्ष राजमिस्त्री का काम करते हैं। दोनों बाइक से पट्टी की तरफ आ रहे थे।

इस दौरान शुक्रवार की सुबह दस बजे के आस-पास जैसे ही बीबीपुर बारडीह गांव के समीप पहुंचे थे कि पट्टी की तरफ से आ रही तेज रफ्तार कार सवार ने उनकी बाइक में सामने से जोरदार टक्कर मार दी, जिससे बाइक चला रहे अजय व पिता मोतीलाल सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए और घटना के बाद कार सवार मौके से गाड़ी समेत भाग निकला। आसपास के लोगों की मदद से घायलों को पट्टी सीएचसी भेजा गया, जहां पर इलाज के उपरांत अजय को चिकित्सकों ने मृत्यु घोषित कर दिया। वहीं मोतीलाल की हालत गंभीर होने के चलते जिला मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया गया है। वहीं मृतक अजय चार भाइयों में दूसरे नंबर का था। बड़ा भाई सुभाष आनंद व घर के अन्य परिजन अस्पताल पहुंच गए। सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

प्राथमिक विद्यालय में दूसरी बार हुई फिर चोरी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। माह भर के अंदर प्राथमिक विद्यालय रायचंद पट्टी में दूसरी बार चोरी हुई है प्रधानाध्यापक समेत ग्रामीणों ने पुलिस से शिकायत की है।

तहसील क्षेत्र के रायचंद पट्टी गांव में स्थित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक फूलचंद सरोज ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि बीते 16 सितंबर को विद्यालय का ताला तोड़कर चोर गैस सिलेंडर आदि चोर उठा ले गए थे। गुरुवार की रात भी चोर विद्यालय के कमरों का ताला तोड़कर गैस सिलेंडर, चूल्हा, कड़ाही, बिजली का पंखा चोरी कर लिए। सुबह जानकारी होने पर प्रधानाध्यापक फूलचंद सरोज ने 112 पुलिस को सूचना दी। जांच के बाद पुलिस ने थाने पर शिकायत की बात कही। दिन में करीब बारह बजे प्रधानाध्यापक फूलचंद सरोज आंगनबाड़ी कार्यकत्री तारा सिंह, प्रधान पुत्र अमन सिंह, कोटेदार शिवम सरोज, शिक्षक मनीष सिंह यादव के साथ थाने पहुंच कर प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले की छानबीन में जुटी हुई है।

कृषि विज्ञान केन्द्र में किसानों को दी गई जानकारी

अखंड भारत संदेश

कृषि विज्ञान केन्द्र में जुटे किसानगण।

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र ऐठू अवधेशवपुरम में शुक्रवार को किसान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें किसानों के लिए ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. सुमंत होल्ग़ा, अमित शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं हेड डा0 ए0के0 श्रीवास्तव, वैज्ञानिकगण एवं किसान मौजूद रहे।

डा0 नवीन कुमार सिंह ने बताया कि प्रतापगढ़ में धान की रोपित फसल ली जाती है। रोपाई करने में बहुत श्रमिक लगते हैं व उनके लिये कठिन कार्य है तथा रोपाई करने से पहले नर्सरी तैयार करना, खेत में पानी भरकर लेव लगाना होता है जिसमें अधिक पानी की आवश्यकता होती है। अमित शर्मा ने किसानों को बताया कि धान की खेती और उत्पादन का भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है। पानी की कमी और ज्ञान की कमी जैसी विभिन्न समस्याएं और मुद्दे इस फसल के उत्पादन पर गंभीर प्रभाव डाल सकते हैं, जो हमारी अर्थव्यवस्था के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र के डा0 अवधेश कुमार सिंह, महेन्द्र प्रताप सिंह, डा0 रणजीत सिंह, यतेन्द्र कुमार, विनोद चैरसिया, राम चन्द्र, जुगुल किशोर, जी0 आर0 पटेल, रविशंकर, अरूण शुक्ला आदि मौजूद रहे।

पानी की सप्लाई बंद होने से मचा हुआ हाहाकार

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। कालाकांकर जल निगम की पानी सप्लाई की मोटर में गड़बड़ी आ जाने से समूचे क्षेत्र में पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है।पानी की सप्लाई तीन चार दिनों से बंद होने से हिनाहूं आलापुर पीरानगर कालाकांकर आदि गांव में पानी की किल्लत से ग्रामवासी परेशान है लोग किसी तरह आस पड़ोस के घरों में लगे समर सेबुल व इंडियन मार्का हैंडपंप से पानी लाकर काम चला रहे हैस जानकारी करने पर जे ई सुरजीत कुमार मिश्रा ने बताया कि पानी मोटर गरम पड़ने के कारण पानी की सप्लाई नहीं मिल पा रही है जिसकी सूचना विभाग को दे दी गई है मै प्रयास कर रहा हूँ कि जल्द ही दूसरी मोटर लग जाय और पानी सप्लाई बहाल हो जाए।

त्योहारों पर अवैध पटाखों का भंडारण व बिक्री न करें: थानाध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आने वाली दीपावली तथा अन्य त्योहारों पर आतिशबाज अवैध पटाखों का भंडारण व बिक्री न करें, यदि ऐसा करते पाये गये तो उनके ऊपर विधिक कार्रवाई होगी। यह बातें कन्धई एसओ अवन कुमार दीक्षित ने रखहा बाजार में शुक्रवार को संपन्न हुई पीस कमेटी की बैठक के दौरान कही।

बैठक में व्यापार मंडल सहित अन्य लोगों ने सहभागिता की। थानाध्यक्ष ने आगे कहा कि जरा सी लापरवाही व्यक्तियों के जीवन में भारी मुसीबत का कारण बन सकती है इसलिए आने वाले त्योहारों में आतिशबाज किसी भी तरह की अवैध पटाखों का भंडारण व बिक्री न करें। उन्होंने कहा कि तमाशों की बिक्री पर कोई रोक नहीं है, किंतु लाइसेंस लेकर वह चिन्हित गोदाम व स्थान पर उसकी बिक्री सुनिश्चित करें। यदि ऐसा करते हुए ना पाये गये तो उनके ऊपर कार्रवाई होगी। इस दौरान उन्होंने ग्राम प्रधान को चैराहे पर रखहा बाजार तिराहे पर सीसी कैमरा लगवाये जाने के लिए आदेशित किया। साथ ही अन्य दुकानदारों की भी समस्याओं से रूबरू हुये। बैठक में एसओ अवन कुमार दीक्षित, उप निरीक्षक रज्जन राव, उप निरीक्षक शिवम् सिंह सहित रामसागर जायसवाल, रामबाबू हलवाई, चंद्रेश बहादुर सिंह, राम प्रताप सिंह, प्रमोद कुमार सिंह, चन्द्रभान सिंह, अमृत लाल गुप्ता, निजाम अहमद, मोहम्मद मुस्लिम, मुस्तकीम आदि मौजूद रहे।

पत्नी में विवाद के बाद युवक ने लगाई फांसी, हुई मौत

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। थाना क्षेत्र के अठेहा गांव निवासी जवाहर लाल सरोज 37 वर्ष पुत्र स्व. महावीर सरोज गुरुवार शाम लगभग सात बजे दारू के नशे में घर आया।

इस पर पत्नी का पति से विवाद हो गया स नाराज पति जवाहर लाल कमरे में पंखा में साड़ी के सहारे फंदा लगा कर झूल गया स सुबह पत्नी ने देखा तो चीखने चिल्लाने लगी स जिससे पड़ोसी इकट्ठा हो गए आनन फानन में निजी वाहन से सी एच सी सांगीपुर ले गए, जहां डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मौत की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। मृतक के एक लडका कपिल सरोज (19) वर्ष जो गुजरात में मज़दूरी करता है और एक बारह वर्षीय लड़की है। शुक्रवार दोपहर घर से पांच सौ मीटर खेत में परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

बेटी पैदा होने से खुन्नस खाए ससुरालीजन विवाहिता को कर रहे प्रताड़ित

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बेटी पैदा होने से खुन्नस खाए ससुराल पक्ष के लोगों द्वारा विवाहिता को तरह-तरह से प्रताड़ित किया जा रहा है। मामले की शिकायत पुलिस से करते हुए कार्रवाई की मांग की गई है। कोतवाली क्षेत्र के रायपुर गांव की रहने वाली प्रियंका पुत्री स्वर्गीय श्याम कुमार ने पुलिस को दिए शिकायती पत्र में आरोप लगाया है कि उसकी शादी हिंदू रीति रिवाज के अनुसार हुई थी और पिता ने शादी मैं हैसियत के अनुसार दान दहेज भी दिया था। शादी के बाद उसने एक बेटी को जन्म दिया जिसके बाद से ही ससुराल पक्ष के लोग उसे तरह-तरह से प्रताड़ित करने लगे। उससे दहेज में एक लाख रुपए की मांग करते हुए तरह-तरह से हैरान परेशान कर रहे हैं। पीड़ित विवाहिता मामले की शिकायत लेकर कोतवाली पहुंची और पति समेत अन्य ससुरालियों के विरुद्ध नामजडद शिकायती पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है। कोतवाल आलोक कुमार का कहना है शिकायती पत्र मिला है मामले की जांच कर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

दरवाजे पर खड़ी ई रिक्शा की बैटरी खोल ले गये चोर

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के कालाकांकर निवासी राहुल सिंह पुत्र गनपत सिंह कोटेदार गुरुवार की बीती रात को अपने घर के दरवाजे पर रोज की तरह खाना खा पीकर सोने चले गए सुबह जब सोकर उठे और बाहर निकले तो अपने ऑटो की साफ सफाई करने लगे तो सीट उठाकर नीचे देखा तो दो दिन पूर्व लगी नई बैटरी गायब देख हक्का बक्का रह गया ऑटो से बैटरी चोरी होते देख परिजनों में हड़कंप मच गया जिसकी काफी खोजबीन किया लेकिन पता नही चल सका जब कि रात में पुलिस गश्त रहती है फिर भी चोरों ने बैटरी को उड़ा लिया ऑटो चालक किसी तरह दिन में आटो चलाकर परिवार का खर्च चलाता है। दो दिन पूर्व आटो में नयी बैटरी लगवाया था। घटना की तहरीर नवाबगंज पुलिस को दी है।

जमीनी विवाद में हुई मारपीट में चार आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। जमीनी विवाद को लेकर हुई मारपीट में चार आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।लालगंज कोतवाली के पूरे पाना ढिंगवस निवासी रामादेवी पत्नी संपूर्णानंद शुक्ला ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि गुरुवार की शाम 3 बजे उसके बैनामे की जमीन पर गांव के विपक्षी इंद्रमणि शुक्ल, आनंद शुक्ल, आकाश व माधुरी ताला तोड़कर जबरन कब्जा करने लगे। पीड़िता ने विरोध किया तो आरोपियों ने मारा पीटा और जान से मारने की धमकी दी। ग्रामीणों को जुटता देख आरोपी भाग निकलने में कामयाब रहे। पीड़िता की शिकायत पर इंद्रमणि समेत चारों आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

पशुओं के प्रति संवेदनशील होना जरूरी : पूर्णिमा प्रांजल

पशु क्रूरता निवारण पर आयोजित हुआ विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में ग्राम पंचायत तैयबपुर मंगौरा, करारी के सामुदायिक भवन में शुक्रवार को पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण पर विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अपर जनपद न्यायाधीश सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कौशाम्बी पूर्णिमा प्रांजल द्वारा बताया गया कि पशुओं को अनावश्यक पीड़ा या यातना पहुंचाने के निवारणार्थ और उस प्रयोजन के लिए पशुओं के संरक्षण हेतु पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 है। इस अधिनियम में दिए गए प्रावधानों के बारे में बताया कि पशु मानव जीवन और सह-अस्तित्व के सबसे बड़े सहयोगी हैं इसलिए पशु स्वामियों का कर्तव्य है कि वे पशुओं को अनावश्यक पीड़ा न पहुंचाएं एवं उन्हें किसी के द्वारा पीड़ा पहुंचाने से रोकें व उनकी आवश्यक देखभाल करें। उ०प्र० गोवध निवारण (संशोधन) अध्यादेश, 2020 को पारित किया गया। इसके अन्तर्गत ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का, जिसकी देख-रेख या भारसाधन में कोई पशु है, यह कर्तव्य होगा कि वह ऐसे पशु का कल्याण सुनिश्चित करने तथा उसे अनावश्यक पीड़ा या यातना पहुंचाने का निवारण करने के लिए सभी समुचित उपाय करें। गोवध निवारण अधिनियम पर प्रकाश डालते हुए अपर जनपद न्यायाधीश सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा बताया गया कि जो कोई किसी गाय या उसके गोवंश को ऐसी शारीरिक क्षति कारित करता है जो उसके जीवन को संकटापन्न करें यथा गोवंश का अंग भंग करना, उनके जीवन को संकटापन्न करने वाली किसी परिस्थिति में उनका परिवहन करना, उनके जीवन को संकटापन्न करने के आशय से भोजन पानी आदि का लोप करना, वह ऐसी अवधि के कठोर कारावास, जो अन्यून एक वर्ष होगी और जो सात वर्ष तक हो सकती है, से और ऐसे जुर्माना, जो अन्यून एक लाख रुपये होगा, और जो तीन लाख रुपये तक हो सकता है, से दण्डित किया जायेगा। साथ ही उपस्थित सभी लाभार्थियों को साक्षरता शिविर में यह संकल्प दिलाया गया कि वे भविष्य में कभी भी किसी पशु के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार नही करेंगे और सभी पशुओं के संरक्षण का प्रयास करेंगे। किसी भी प्रकार की विधिक सहायता या निःशुक्ल पैरवी हेतु अधिवक्ता की आवश्यकता हो तो जिले की सभी तहसीलों में स्थित लीगल एड सेंटर पर उपस्थित पीएलवी से उनका प्रार्थना पत्र तैयार कराकर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यालय में उपलब्ध कराएं। विधिक जागरुकता/ साक्षरता शिविर के माध्यम से अपर जनपद न्यायाधीश/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कौशाम्बी द्वारा राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं उ०प्र० राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ द्वारा संचालित किये जा रहे विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों और प्रदान की जा रही सुविधाओं आदि के बारे में भी बताया गया। राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में भी बताया गया। शिविर को सचिव महोदया के अतिरिक्त नायब तहसीलदार, मंझनपुर मोबीन अहमद, पशु चिकित्सक सिराथू डा. बाल कृष्ण राजपूत एवं डॉक्टर नरेन्द्र दिवाकर ने भी संबोधित किया। शिविर में क्षेत्रीय लेखपाल पंकज कुमार मौर्य, ग्राम प्रधान राम कैलाश पाल, पंचायत सहायक पवन कुमार, सूबेदार सहित सैकड़ों की संख्या में ग्रामवासी मौजूद रहे।उक्त जानकारी डॉ. नरेन्द्र दिवाकर पीएलवी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कौशाम्बी ने दी है।

विवाहिता को सास-ससुर ने धक्के मार कर घर से भगाया

कौशाम्बी। विवाहिता की शादी होने के 8 महीने बाद उसका पति रोजगार के चक्कर में दूसरे प्रदेश चला गया है और विवाहिता को मारपीट कर धक्के मार कर उसके सास ससुर ने घर से बाहर भगा दिया है मामले को धीरे-धीरे 2 वर्ष बीत चुके है लेकिन विवाहिता का मुकदमा पुलिस ने नहीं दर्ज किया है और 2 वर्ष से विवाहिता अपनी ससुराल में नहीं रह पा रही है इतना ही नहीं विवाहिता को ससुराल से भगाने के बाद उसके पति ने अपना मोबाइल नंबर बदल दिया है जिससे विवाहिता का दो वर्षों से संपर्क नहीं हो पा रहा है शुक्रवार को विवाहिता पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंची और फरियाद करके पति को खोजने और ससुराल के घर में रहने में परेशान न करने की फरियाद की है। जानकारी के मुताबिक पिपरी थाना क्षेत्र के मीरपुर गांव की लक्ष्मी राजपूत कोरी पुत्री सुरेंद्र कुमार की 18 फरवरी 2022 को उसके माता-पिता ने राहुल पुत्र सुभाष निवासी चकमहमूद थाना कोखराज के साथ हिंदू रीति रिवाज से शादी किया था बेटी के पिता ने शादी में साढ़े चार लाख रुपए खर्च किया शादी के बाद लक्ष्मी ससुराल चली गई लेकिन बाद में 11 सितंबर 2022 को उसका पति राहुल रोजगार के लिए कहकर घर से दूसरे प्रदेश चला गया है सूत्रों की माने तो वह बेंगलुरु में रहकर फैक्ट्री में काम करता है और पिता माता के संपर्क में है और कमाई का पैसा अपने पिता माता को दे रहा है चर्चाओं पर जाए तो पहली पत्नी लक्ष्मी को छोड़कर राहुल दूसरी स्त्री के संपर्क में है। राहुल के कारनामे पर माता-पिता और भाई साथ दे रहे है विवाहिता का स्त्री धन सोने चांदी का जेवर कपड़ा बर्तन बिस्तर फर्नीचर आदि समान भी ससुराल वालों ने छीन लिया है।

अंतर विद्यालयीय क्रिकेट टूनार्मेंट में तीसरे दिन खेले गए 3 मैच

कौशाम्बी। डॉ. ए. एच. रिजवी पी. जी. कॉलेज करारी के प्रबंधक कर्रार हुसैन रिजवी के मार्गदर्शन में दिनांक 15 अक्टूबर 2024 दिन मंगलवार से महाविद्यालय के मैदान में अंतर विद्यालयीय क्रिकेट टूनार्मेंट का आयोजन किया जा रहा है ' आज प्रतियोगिता के चौथे दिन महाविद्यालय के खेल समन्वयक डॉ. मोहित त्रिपाठी एवं महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. मदन मोहन मिश्र ने बताया कि आज कुल तीन मैच खेले गए आज सुबह 10:30 बजे से रिजवी कॉलेज के मैदान में महादेव सिंह सिंगरौर बालिका इंटर कॉलेज, कटरा एवम डी. डी. आर. पब्लिक इंटर कॉलेज महेशपुर,भरवारी के बीच प्रथम मैच खेला गया। जहां महादेव सिंह सिंगरौर बालिका इंटर कॉलेज, कटरा के कप्तान अमित पाल ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण करने का निर्णय लिया ' डी. डी. आर. पब्लिक इंटर कॉलेज महेशपुर, भरवारी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए जीत के लिए 65 रनों का लक्ष्य रखा जवाब में महादेव सिंह सिंगरौर बालिका इंटर कॉलेज, कटरा ने 5 विकेट से मैच जीत लिया ' महादेव सिंह सिंगरौर बालिका इंटर कॉलेज, कटरा के अजीत कुमार दिवाकर को उनके उत्कृष्ट खेल के लिए मैन ऑफ द मैच के पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिन्होंने 24 रन बनाये। आज का दूसरा मैच एम. वी. कॉन्वेंट स्कूल एंड कॉलेज,ओसा एवम देवशरण स्मारक इंटर कॉलेज, देवरा के बीच खेला गया ' एम. वी. कॉन्वेंट स्कूल एंड कॉलेज,ओसा के कप्तान मोहम्मद बिलाल ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण करने का फैसला लिया ' देवशरण स्मारक इंटर कॉलेज, देवरा ने पहले बैटिंग करते हुए सात विकेट पर 66 रनों का लक्छ रखा ' जवाब में एम. वी. कॉन्वेंट स्कूल एंड कॉलेज, ओसा कुल 37 रन ही बना सकी। देवशरण स्मारक इंटर कॉलेज, देवरा के आदित्य को उनके उत्कृष्ट खेल के लिए मैन ऑफ द मैच दिया गया जिन्होंने तीन विकेट लिए और एक रन आउट किया 'आज का तीसरा मैच मदर इंडिया इण्टर कॉलेज, करारी एवम कृषक इण्टर कॉलेज, हिनौता कौशाम्बी के बीच खेला गया। मदर इंडिया इण्टर कॉलेज, करारी, कौशाम्बी के कप्तान मोहम्मद समरेज ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला लिया कृषक इण्टर कॉलेज, हिनौता कौशाम्बी ने पहले बैटिंग करते हुए 8 विकेट पर 53 रन का लक्ष्य रखा ' जवाब में मदर इंडिया इण्टर कॉलेज, करारी, कौशाम्बी 53 रन ही बना सकी। कृषक इण्टर कॉलेज हिनौता, कौशाम्बी के अंशु कुमार को उनके उत्कृष्ट खेल के लिए मैन ऑफ द मैच दिया गया ' जिन्होंने दो ओवर में पांच रन देखकर तीन विकेट लिए ' कृषक इंटर कॉलेज के कृष्ण कमल ने बेहद ही रोमांचक मैच में अंतिम ओवर फेंकते हुए अपनी टीम को चार रन से जीत दिलाई आज के तीनों मैच के अंपायर रवि और वैभव रहे एवं अजीत चौरसिया द्वारा मैच की स्कोरिंग की गई ' इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक उपस्थित रहे।

कौशाम्बी में एंटी करप्शन द्वारा दरोगा और लेखपाल पर एक्शन के बाद करोड़ों के भ्रष्टाचार का भंडाफोड़

अखंड भारत संदेश

डीएम एसपी ने गठित की टीम, निष्पक्ष तरीके से जांच हुई तो कई विभागीय अधिकारियों और थानेदारों के चेहरे भी बेनकाब होंगे

कौशाम्बी। जिले में एंटी करप्शन के एक्शन के बाद के करोड़ो के भ्रष्टाचार का भंडाफोड़ हुआ है। हाईवे पर इंट्री के नाम पर प्रत्येक ओवरलोड वाहनों से पांच-पांच हजार की अवैध वसूली की जाती है। इस काम को अंजाम देने के लिए सात पासरो के नाम सामने आए है, जो पुलिस, माइनिंग और परिवहन विभाग के एजेंट के तौर पर हाईवे पर अवैध वसूली करते है।ज्यादातर मध्यप्रदेश से कौशाम्बी जिले की सीमा में दाखिल होने वाले गिट्टी, मौरंग और मार्बल से लदे ओवरलोड वाहनों को प्रतापगढ़ सीमा तक पास कराने के नाम पर पांच-पांच हजार की अवैध वसूली की जाती है। मामले के निष्पक्ष तरीके से जांच हुई तो कई विभागीय अधिकारियों और थानेदारों के चेहरे भी बेनकाब होंगे। दरअसल, मंगलवार को एंटी करप्शन ने पाश्चिम शरीरा थाना इलाके से ट्रैफिक सब इंस्पेक्टर कमलेश पांडेय को प्रत्येक ओवरलोड वाहन की साप्ताहिक इंट्री के नाम से 5 हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार कर जेल भेजा तो इस पूरे गैंग का खुलासा हुआ। जिससे महीने में राजस्व को करोड़ो रुपए का नुकसान हो रहा है। कौशाम्बी जिले की सीमा से प्रत्येक दिन सैकड़ो गिट्टी, मौरंग वा मार्बल के ओवरलोड वाहन गुजरते है। प्रत्येक वाहनों से पांच हजार की दर से रोज 15 से 20 लाख से ज्यादा और महीने में करोड़ो रुपए की अवैध वसूली का मामला मीडिया में आने के बाद एसपी ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव एवं डीएम मधुसूदन हुल्गी ने एसआईटी गठित कर पूरे मामले में जांच के बाद वसूली गैंग पर कार्रवाई की बात कही है हालांकि डीएम और एसपी का यह भी कहना है कि हाईवे पर पूर्व में अवैध वसूली करने वाले पासरो पर एफआईआर दर्ज कर गैंगस्टर एक्ट के तहत भी कार्रवाई की गई है और वाहनों को भी पकड़ा गया है।

केपीएस में हाफ इयरली एग्जाम के रिजल्ट से संबंधित पेरेंट्स-टीचर मीटिंग का आयोजन

भरवारी कौशाम्बी केपीएस भरवारी में हाफ इयरली एग्जाम के परिणाम के संदर्भ में पेरेंट्स-टीचर मीटिंग का आयोजन शुक्रवार को किया गया। इस बैठक में विद्यार्थियों के अभिभावकों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया और अपने बच्चों के प्रदर्शन पर शिक्षकों से गहन चर्चा की। ढळट का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति की समीक्षा करना और उनकी सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाना था। शिक्षकों ने प्रत्येक छात्र के व्यक्तिगत प्रदर्शन पर विस्तृत जानकारी दी और उनके मजबूत पक्षों के साथ उन क्षेत्रों को रेखांकित किया जहाँ सुधार की आवश्यकता है। इस मौके पर संस्थान की डायरेक्टर, श्रीमती सीमा पवार ने अभिभावकों से संवाद करते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित करना है। परीक्षा परिणाम बच्चों की योग्यता का मात्र एक मापदंड है, और हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि प्रत्येक बच्चे की मानसिक और भावनात्मक वृद्धि भी साथ-साथ हो। विद्यालय के चेयरमैन, निवर्तमान विधायक संजय कुमार गुप्ता ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यालय और घर, दोनों का योगदान बच्चों की सफलता में अहम होता है। हम सभी को एक टीम की तरह कार्य करना चाहिए, ताकि बच्चे अपने जीवन में हर क्षेत्र में सफल हों। बैठक में अभिभावकों ने शिक्षकों से मिलकर बच्चों के प्रदर्शन के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की और कई महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। इस दौरान बच्चों के लिए आगे की कक्षाओं के लिए भी योजनाएँ बनाई गईं, ताकि वे और बेहतर कर सकें। ढळट का समापन एक सकारात्मक और उत्साहवर्धक वातावरण में हुआ, जहाँ अभिभावकों और शिक्षकों ने मिलकर बच्चों की शिक्षा को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्धता दिखाई।

भवंस मेहता महाविद्यालय में अंतर महाविद्यालयी खो -खो प्रतियोगिता का आयोजन

भरवारी कौशाम्बी। भवंस मेहता महाविद्यालय भरवारी में प्रो.राजेंद्र सिंह उर्फ रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज से सम्बद्ध विभिन्न महाविद्यालयों के बीच अंतर महाविद्यालयी खो -खो प्रतियोगिता 2024-25 का आयोजन शुक्रवार को किया गया। इस अंतर महाविद्यालयी प्रतियोगिता में विभिन्न महाविद्यालयों की बालक और बालिका वर्ग की खो खो टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का आरंभ माता सरस्वती के प्रतिमा पर मुख्य अतिथि डॉ. सुशील कुमार श्रीवास्तव ,पूर्व विभागाध्यक्ष ,वनस्पति विज्ञान भवन्स मेहता महाविद्यालय , भरवारी और भवन्स मेहता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. प्रबोध श्रीवास्तव के द्वारा पुष्पांजलि अर्पण और दीप प्रज्वलन से हुआ। पहला मैच बालक वर्ग के अंतर्गत भवंस मेहता महाविद्यालय और बेनी माधव स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिगहिया प्रयागराज के बीच खेला गया , जिसमे बेनी माधव महाविद्यालय बिगहिया प्रयागराज की टीम विजयी रही। दूसरी प्रतियोगिता बालिका वर्ग में भवंस मेहता महाविद्यालय भरवारी और बेनी माधव स्नातक उत्तर महाविद्यालय बिगहिया प्रयागराज के बीच खेला गया जिसमें भवंस मेहता महाविद्यालय भरवारी की टीम विजेता रही। प्रतियोगिता विभिन्न चरणों में आयोजित की गई।प्रतियोगिता में बालक वर्ग का फाइनल भवंस मेहता महाविद्यालय ,भरवारी और बेनी माधव स्नातक उत्तर महाविद्यालय, बिगहिया, प्रयागराज के बीच खेला गया जिसमें बेनी माधव महाविद्यालय की टीम विजेता रही। बालिका वर्ग में भवंस मेहता महाविद्यालय भरवारी और बेनी माधव स्नातकोत्तर महाविद्यालय के बीच फाइनल मैच का हुआ जिसमें भवंस मेहता महाविद्यालय की टीम विजयी रही । टीम प्रतियोगिता के उपरांत व्यक्तिगत ट्रायल का आयोजन किया गया जिसमें बालिका वर्ग में सरस्वती विद्या तकनीक महाविद्यालय, लालगंज की छात्रा सरोज चुनी गई। बालक वर्ग में व्यक्तिगत ट्रायल में चार छात्राओं ने भाग लिया जिसमें डिग्री कॉलेज बरौत प्रयागराज के छात्र सूरज का चयन किया गया। इस अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता का परिणाम बालक वर्ग में विजेता टीम बेनी माधव स्नातकोत्तर महाविद्यालय उपविजेता भवंस मेहता महाविद्यालय तथा तृतीय स्थान पर राजकीय महाविद्यालय सांगीपुर प्रतापगढ़ रहा।

इसी प्रकार बालिका वर्ग में विजेता भवंस मेहता महाविद्यालय भरवारी विजेता बेनी माधव स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिगहिया, उपविजेता तथा तृतीय स्थान राजकीय महाविद्यालय सांगीपुर प्रतापगढ़ को प्राप्त हुआ । प्रतियोगिता के दौरान स्टेट बैंक ऑफ इंडिया भरवारी ब्रांच के शाखा प्रबंधक भानु प्रकाश ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर इसकी गरिमा को बढ़ाया । इस प्रतियोगिता के विभिन्न गतिविधियों का संयोजन महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा प्राध्यापक पंकज पाल ने किया।भवंस मेहता महाविद्यालय भरवारी के खेलकूद प्रभारी एवं आयोजन सचिन डॉक्टर योगेश मिश्रा ने प्रतियोगिता के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।इस प्रतियोगिता में कार्यक्रम समन्वयक प्रो. विवेक कुमार त्रिपाठी प्रो. सतीश चंद्र तिवारी प्रो. पंकज कुमार प्रो. अरुण कुमार सिंह प्रो.उमा जयसवाल डॉ.नीति मिश्रा डॉ.सी .पी श्रीवास्तव ,डॉ राहुल कुमार राय , डॉ. मोहम्मद आदिल, डॉ.धर्मेंद्र कुमार अग्रहरी, डॉ.महेंद्र उपाध्याय, डॉ अनुज तिवारी ,डॉ. दीपक कुमार ,डॉ मनीष कुमार डॉ. संजू आदि उपस्थित रहे।

15 साल पहले हुई युवक की हत्या में पिता पुत्रो सहित 03 को आजीवन कारावास की सजा

51-51 हजार रुपए का कोर्ट ने लगाया अर्थदण्ड

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी जिले के मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र में 15 साल पहले की गई युवक की हत्या में पिता और दो पुत्रों को कोर्ट में आजीवन कारावास की सजा सुनाई है,कोर्ट ने सभी आरोपियों पर 51-51 हजार रू० का अर्थदण्ड भी लगाया है,वही एक अभियुक्त पर आर्म्स एक्ट के तहत एक साल की सजा और एक हजार रुपए का अर्थ दंड भी लगाया है।

जानकारी के अनुसार 5.12.2009 को थाना मंझनपुर पर वादी जगन्नाथ ने पुलिस को सूचना दी थी कि अभियुक्तगणों द्वारा उनके लड़के राम करन की हत्या कर दी गयी। जिसके सम्बन्ध में मु0अ0सं0 549/09 धारा 323/302/34 भादवि मु0अ0सं0 550/09 धारा 25 आर्म्स एक्ट पंजीकृत किया गया था। जिससे सम्बन्धित 03 अभियुक्तों भग्गू पासी पुत्र शंकर पासी,पल्टू पासी, सोहन पासी पुत्रगण भग्गू पासी निवासी निजामपुर हण्डिया मजरा बहादुरपुर थाना मंझनपुर को 18.10.2024 को न्यायालय एडीजे प्रथम द्वारा प्रत्येक अभियुक्त को आजीवन कारावास तथा 51,000-51,000 /- रू० के अर्थ दण्ड से दण्डित किया गया तथा अभियुक्त सोहन को 25 आर्म्स एक्ट में 01 वर्ष कारावास व 2000 रू0 के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया है। पुलिस ने अभिरक्षा में लेकर सभी तीनों आरोपियों को जेल भेज दिया है।

दस हजार के इनामिया को करारी थाना पुलिस ने किया गिरफ्तार

कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र के एक युवक को करारी थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है,आरोपी के ऊपर जनपद में कई मुकदमे दर्ज है और उस पर दस हजार का इनाम भी घोषित है।पुलिस ने दस हजार इनामिया फैजान को गिरफ्तार कर लिया और लिखापढ़ी कर न्यायालय पेश किया जहा से उसे जेल भेज दिया गया करारी थाना पुलिस को मुखबिर द्वारा सूचना मिली कि दरियापुर चौराहा पर फैजान नाम का अभियुक्त भागने के फिराक में साधन का इंतजार कर रहा है,सूचना मिलते ही तत्काल प्रभारी निरीक्षक विनीत सिंह ने अपने हमराहियों के साथ पहुंचकर फैजान पुत्र स्व0 नफीस अहमद निवासी ग्राम रहीमपुर मौलानी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी फैजान के ऊपर अश्लील हरकत करना व जान से मारने की नियत से गला दबाना, गाली-गलौज करना, मारपीट करते हुए जान से मारने की धमकी देना एवं पास्को जैसे आपराधिक मुकदमा दर्ज है,यही नहीं उस पर दस हजार का इनाम भी घोषित है।पुलिस ने आरोपी फैजान को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही करते हुए न्यायालय पेश किया जहा से उसे जेल भेज दिया गया।

मुस्लिम आबादी में भाजपा की सदस्यता कराने गए कर्मचारियों को लोगों ने दौड़ाया

भरवारी कौशाम्बी। जिले में भाजपा द्वारा चलाया जा रहा सदस्यता अभियान नगर पालिका भरवारी के कर्मचारियों के भरोसे पर चल रहा है, आरोप है कि नगर पालिका अध्यक्ष नगर पालिका कर्मचारियों से सदस्यता दिलाने का कार्य करा रही है। ताजा मामला नगर पालिका परिषद भरवारी के वार्ड नंबर 23 डॉक्टर ए पी जे अब्दुल कलाम नगर का है जहा शुक्रवार सुबह नगर पालिका भरवारी के कर्मचारियों ने कुछ लोगों का जबरन योजना के लाभ दिलाने के प्रलोभन के नाम पर सदस्यता के लिए मोबाइल से मिस्ड कॉल करने लगे तो लोग भड़क गए, कर्मचारियों से विवाद शुरू हुआ तो मोहल्ले के लोगो ने कर्मचारियों को दौड़ा लिया। भीड़ बढ़ती देख कर्मचारी उल्टे पांव मोहल्ले से भाग खड़े हुए। मोहल्ले के लोगो ने बताया कि योजनाओं के नाम पर हम लोगो के मोबाइल से फर्जी मिस्ड कॉल कर हमे भाजपा से जोड़ रहे थे, जब मना किया गया तो कर्मचारियों ने उनसे योजनाओं का लाभ नहीं मिलने की बात कही,जिसके बाद लोगो में आक्रोश हुआ और लोग भड़क गए,तभी मोहल्ले के लोग एकत्रित हो गए और कर्मचारियों को दौड़ा लिया। कर्मचारियों से जब बात की गई तो उन्होंने बताया कि अध्यक्ष के आदेश पर हम लोगो को जबरन भाजपा की सदस्यता दिलाने के लिए दबाव बनाया जा रहा है, हम लोग नगर पालिका में काम करते है हम लोगो से जबरन भाजपा पार्टी का सदस्यता अभियान का कार्य कराया जा रहा है, कार्य नही करने पर नौकरी से बाहर करने की धमकी दी जाती है।

नए आउट गोइंग पैनल को बदलने से भरवारी कस्बे में विधुत समस्या का होगा समाधान

भरवारी कौशाम्बी पावर हाउस भरवारी के कस्बा में लाइट की ट्रिपिंग एवं अतिरिक्त भार से कस्बा भरवारी के लोगों का जीना दुश्वार हो गया था पावर हाउस के जे ई एवं एसडीओ ने समस्या को संज्ञान लेते हुए कस्बा के लिए दो आउट गोइंग पैनल की मशीनों को लगवा कर समस्या से जूझ रहे लोगों की समस्या को काफी हद तक दूर करने का कार्य किया है पवार हाउस में आउट गोइंग पैनल बदले जा रहे है जे ई नन्हे लाल यादव ने यह भी बताया की सभी मुहल्ले में लगे इकलौते ट्रांसफार्मर पर अतिरिक्त भार पड़ने की वजह से आय दिन ट्रांसफार्मर फूक जाया करते थे उसको भी संज्ञान लेते हुए लगे हुए ट्रांसफार्मर के अतिरिक्त ट्रांसफार्मर लगाने का कार्य किया गया है जिससे उक्त लगे हुए ट्रांसफार्मर पर अतिरिक्त भार पड़ने की वजह से प्रत्येक मोहल्ले मे अन्य ट्रांसफार्मर लगा कर भार कम करने का कार्य किया जा रहा है आए दिन ट्रिपिंग एवं लोड के चलते ट्रांसफार्मर फुक जाया करते थे ओर कस्बा के लोग भीषण गर्मी में रात जाग कर काटने को मजबूर हो जाते थे। जे ई ने बताया की जहां पर कमजोर तार लगी हुई है वहां भी नए तारों का स्टॉक आने पर वहां भी तारों को बदलने का कार्य किया जाएगा उन्होंने यह भी बताया की जिन उपभोक्ताओं का विधुत बिल बकाया हो उसे अभिलंब जमाकर रसीद प्राप्त करे ' । शासन की मंशा भी है की चेकिंग के दरमियान जो भी व्यक्ति अवैध रूप से कटिया लगाकर विधुत चोरी करता पाया जाएगा उसके विरुद्ध कड़ी कार्य वाही करते हुए एफ आई आर करते हुए उसकी विधुत आपूर्ति काट दी जाए 'इस मौके पर पावर हाउस के जे ई नन्हे लाल यादव एसडीओ के के यादव एवं सर्वेश कुमार मौर्या सभी कर्मचारी नए आउट गोइंग पैनल को बदलने में लगे हुए थे।

न्यूज झरोखा

अनियंत्रित टैंकर ने बाइक सवार को रौंदा,हुई दर्दनाक मौत

अझुवा कौशांबी। सैनी कोतवाली के वार्ड नंबर 4 पशु अस्पताल के सामने राष्ट्रीय राजमार्ग पर तेज रफ्तार टैंकर ने बाइक सवार को रौंद दिया जिससे एक अधेड़ की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। सौरभ सिंह पुत्र शिव रतन सिंह अपने बड़े पिता राज बहादुर 59 वर्ष पुत्र स्व रघुवीर सिंह निवासी गांव रामनगर थाना बकेवर जिला इटावा के साथ बाइक से प्रतापगढ़ जा रहे थे अझुवा राष्ट्रीय राजमार्ग पर पशु चिकित्सालय के सामने टैंकर ने पीछे से टक्कर मार दिया इस टक्कर से बाइक सवार सड़क पर गिर गए इस दौरान टैंकर राजबहादुर को कुचलते हुए प्रयागराज की तरफ फरार हो गया दुर्घटना देख मौके पर भीड़ लग गई सूचना पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस शव कब्जे में लेकर फरार टैंकर की तलाश में जुट गई वहीं प्रत्यक्ष दर्शियों ने टैंकर का नंबर U P 77A N5244 नोट कर पुलिस को दिया है मृतक के भतीजे सौरभ सिंह ने बताया वह अपने ताऊ के साथ प्रतापगढ़ में कमरा लेकर मोटरसाइकिल में कपड़े आदि की फेरी करता है।

हाइवे में पलटा ट्रक, घंटों रहा जाम, क्रेन लगाकर हटाया ट्रक

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के अझुवा कस्बे के समीप आज शुक्रवार भोर में अनियंत्रित ट्रक डिवाइडर में चढ़ कर पलट गया जिससे हाइवे में जाम लग गया मौके पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस ने क्रेन की मदद से ट्रक को साइड में लगवाकर यातयात बहाल कराया है ।घटनाक्रम के मुताबिक जलाल पुत्र वली मोहम्मद,निवासी पादुदी थाना पशु पदरा राजस्थान और उग्र राम पुत्र सेन राम निवासी दुदवा राजस्थान उपरोक्त ड्राइवर कलकत्ता से तार लाद कर राजस्थान जा रहा था अझुवा कस्बे के समीप ड्राइवर को झपकी आने से ट्रक अनियंत्रित होकर डिवाइडर में चढ़कर पलट गया जिससे राष्ट्रीय राजमार्ग में आवागमन बाधित हो गया सूचना पर पहुँचे अझुवा चौकी प्रभारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने क्रेन की मदद से ट्रक को साइड में करवाकर आंशिक रूप से घायल ड्राइवरों को उपचार हेतु स्थानीय अस्पताल भेज दिया है इस दौरान प्रयागराज कानपुर लेन घंटों बाधित रहा है।

डायट में दो दिवसीय कला क्राफ्ट एवं संस्कृति महोत्सव का आयोजन

कौशाम्बी दो दिवसीय कला,क्राफ्ट एवं संस्कृति महोत्सव का आयोजन सुश्री निधि शुक्ला उप शिक्षा निदेशक प्राचार्य डायट के नेतृत्व में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मंझनपुर के सभागार में शुक्रवार को हुआ। इस महोत्सव का उद्घाटन सुश्री निधि शुक्ला प्राचार्य डायट के द्वारा किया गया। नोडल राजेंद्र कुमार भारती कला प्रवक्ता ने अवगत कराया कि कला, क्राफ्ट एवं संस्कृति महोत्सव में प्रत्येक ब्लॉक से शिक्षकों द्वारा पेंटिंग,मूर्ति, भित्ति चित्रण, क्राफ्ट, गायन वादन, नुक्कड़ नाटक, कविता,कहानी के द्वारा प्रस्तुतिकरण करेंगे साथ ही इस महोत्सव में शामिल प्रत्येक ब्लॉक के शिक्षक एक दूसरे से कला, क्राफ्ट, संस्कृति से सीखने का अवसर मिलेगा।कैसे इस महोत्सव से बच्चों को अलग अलग प्रतिभा को कैसे निखारा जाएगा इस अवसर पर समस्त प्रवक्ता एवं प्रतिभागी प्रशिक्षु उपस्थित रहे

अपर जिलाधिकारी ने क्राप कटिंग का किया स्थलीय निरीक्षण

कौशाम्बी। अपर जिलाधिकारी अरुण कुमार गोंड ने सिराथू तहसील के ग्राम-सेलरहा पश्चिम के कृषक तेज नारायण के खेत में किये जा रहें धान की क्राप कटिंग का स्थलीय निरीक्षण कर वस्तुस्थिति का जायजा लिया। अपर जिलाधिकारी ने कृषक तेज नारायण को पुष्प और अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। इसके उपरान्त उन्होंने स्वयं हसिया लेकर फसल की कटाई की। उत्पादकता एवं उत्पादन तथा क्षतिपूर्ति के आंकलन के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत सी0सी0ई0एग्री ऐप के द्वारा क्राप कटिंग सम्पन्न करायी गयी। उन्होंने वहॉ पर उपस्थित लोगों को फसल बीमा तथा सरकार द्वारा संचालित अन्य जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागरुक भी किया। इस अवसर पर अपर सांख्यिकीय अधिकारी मनोज कुमार मिश्र, नायब तहसीलदार सिराथू अतुल शर्मा, राजस्व निरीक्षक प्रदीप सिंह, राजस्व लेखपाल धर्मराज, फसल बीमा के जिला समन्वय बृजेश, ब्लॉक कोऑर्डिनेटर वेद प्रकाश और शशी प्रकाश सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित रहें।

सीता स्वयंवर ,परशुराम लक्ष्मण संवाद देख पंडाल में लगे जय श्रीराम के उद्घोष

अझुवा कौशांबी आदर्श नगर पंचायत अझुवा में रामलीला के तीसरे दिन गुरुवार की रात धनुष यज्ञ,रावण बाणासुर संवाद,सीता स्वयंवर परशुराम लक्ष्मण संवाद लीला का मंचन किया गया। लीला प्रसंगों के अनुसार राम स्वयंवर में जैसे ही प्रवेश करते हैं सब उनके मनमोहक रूप को देखकर मोहित हो उठते हैं। स्वयंवर में महाराजा जनक घोषणा करते हुए कहते हैं कि जो भी राजा धनुष का खंडन करेगा उस राजा से अपनी पुत्री सीता का विवाह करेंगे । राजा जनक की घोषणा को सुनकर संसार के विभिन्न राज्यों से आए राजाओं ने एक-एक करके धनुष को खंडन करने का प्रयास किया लेकिन सभी राजा विफल रहे। धनुष का खंडन तो दूर कोई भी राजा धनुष को हिला तक नहीं पाए। यह सब देखकर महाराजा जनक भरी सभा में एलान करते हैं कि विश्व में कोई भी वीर नहीं बचा जो इस धनुष का खंडन करेगा। उनकी बात को सुनकर भगवान राम के साथ मौजूद उनके भाई लक्ष्मण क्रोधित होते है। लक्ष्मण को क्रोधित होता देख भगवान राम ने उनको शांत किया। यह सब देखकर मुनि विश्वामित्र ने भगवान श्रीराम को आदेश दिया कि वह धनुष का खंडन करें ।भगवान श्री राम गुरु का आदेश का पालन करते हुए धनुष को तिनके के समान उठा कर उसका खंडन कर देते है। भगवान श्री राम के द्वारा धनुष का खंडन करते ही देवताओं के द्वारा पुष्प वर्षा के के साथ अभिनंदन किया जाता है। धनुष तोड़ने के बाद सीता ने भगवान राम के गले में जयमाला डाल दी। सभी देवी देवताओं ने पुष्प वर्षा कर दोनों को आशीर्वाद दिया।रामलीला कलाकारों के सुंदर और भाव पूर्ण मंचन को देख राम भक्त गदगद होते रहे हैं। प्रांगड़ में जय श्री राम के गगनभेदी नारे लगे हैं।धनुष टूटने की आवाज सुनते ही परशुराम स्वयंवर में आ गए और धनुष तोड़ने वाले का नाम पूछने पूछने लगे इस पर वहां सन्नाटा छा गया वहीं परशुराम और लक्ष्मण के बीच जमकर शब्दों के बाण चले परशुराम लक्ष्मण संवाद का लुत्फ उठाने के लिए रामलीला प्रांगण में जमकर भीड़ रही है इस अवसर पर प्रमुख रूप से रामलीला कमेटी के अध्यक्ष ओमप्रकाश कुशवाहा विपिन मोदनवाल मंजू केशरवानी आशीष मोदनवाल सहित कमेटी के सभी सदस्य मौजूद रहे।

सम्पादकीय

प्रतीकों में उलझी न्यायपालिका

प्रतीकों के खेल में अब तक इस देश की राजनीति ही उलझी हुई थी, अफसोस है कि अब न्यायपालिका भी इसका हिस्सा बन गई है। न्याय की देवी की मूर्ति में जो फेरबदल किए गए और इसके पीछे जो तर्क दिए गए, वो इस बात का प्रमाण हैं कि न्याय व्यवस्था को त्रुटिहीन और पूरी तरह से दुरुस्त करने की कोशिश की जगह भावनात्मक बातों को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट के जजों की लाइब्रेरी में न्याय की देवी की नयी मूर्ति लगायी गयी है। देश के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के आदेश पर नयी मूर्ति बनी है, जिसमें पुरानी मूर्ति से अलग वेशभूषा और प्रतीक बने हैं। सफेद रंग की मूर्ति में आंखों से पट्टी हटा दी गई है, उसका परिधान भारतीय कर दिया गया है और हाथ में तलवार की जगह संविधान की किताब दी गई है। कहा जा रहा है कि इस बदलाव से यह संदेश देने की कोशिश की गई है कि कानून अंधा नहीं होता।

तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है - जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। अर्थात हम अपनी भावनाओं और नजरिए के अनुरूप ही चीजों को देखते और परखते हैं। आंख पर पट्टी होने को अंधत्व से भी जोड़ा जा सकता है और निष्पक्षता से भी। 1983 से में अमिताभ बच्चन, रजनीकांत और हेमा मालिनी की फिल्म आई थी अंधा कानून। जिसमें दिखाया गया है कि अमिताभ बच्चन याने नायक को एक ऐसे जुर्म की सजा होती है, जो उसने किया ही नहीं, उसके परिवार को भी अत्याचार का शिकार बनाया जाता है और उसके बाद फिल्म में बार-बार ये अंधा कानून है, गीत पार्श्व में बजता रहता है और न्याय देवी की मूर्ति भी दिखाई जाती है, जिसकी आंखों पर पट्टी बंधी है। कानून के अंधे होने की धारणा को फिल्म के जरिए समाज में और मजबूत किया गया। और अब करीब 4 दशक बाद एक प्रचलित धारणा के अनुरूप फैसला लिया गया है। समझा जा सकता है कि देश में हाल के वर्षों में हुए कई बदलावों के पीछे कई बरसों की कोशिश रही है। नेहरू संग्रहालय को पीएम म्यूजियम में बदलना, इंडिया गेट पर नेता जी की मूर्ति, जम्मू-कश्मीर से 370 की वापसी, अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, संसद में सेंगोल की स्थापना या इंडियन पीनल कोड, आईपीसी की जगह भारतीय न्याय संहिता, बीएनएस का लागू होना, ऐसे ही फैसलों की चंद मिसाल हैं। अभी आने वाले वर्षों में अगर हम भारतीय मुद्रा पर गांधीजी की जगह किसी और की तस्वीर देखें तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

बहरहाल, अब तक न्याय की जो मूर्ति देश में हुआ करती थी, वो यूनानी देवी जस्टिया की तरह होती थीं, जिनके नाम पर ही जस्टिस यानी न्याय शब्द बना है। इस मूर्ति की आंखों पर पट्टी का मतलब था कि कानून किसी का ओहदा, धर्म, जाति न देखकर सबके साथ एक जैसा व्यवहार करता है। वहीं अभी जिस तलवार को हिंसा का प्रतीक बताकर हटाया गया है, दरअसल उसके जरिए यह संप्रेषित किया गया था कि कानून के पास ताकत है और वो गलत करने वालों को सजा दे सकता है। पुरानी मूर्ति में तराजू भी देवी के एक हाथ में होता था।

जम्मू-कश्मीर में महका लोकतंत्र: सरकार से बड़ी उम्मीदें

-ललित गर्ग -

आखिरकार जम्मू-कश्मीर में लोकतंत्र की धूप खिल ही गयी, पांच साल बाद केन्द्र शासित जम्मू-कश्मीर को निर्वाचित सरकार मिल गयी और नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने बुधवार को जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली है। 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त किये जाने के बाद केन्द्र शासित प्रदेश में यह पहली चुनी हुई सरकार है, जो नई उम्मीदों के नये दौर का आगाज है। उमर अब्दुल्ला पहले भी एक बार मुख्यमंत्री रह चुके हैं, लेकिन उनकी यह पारी हर तरह से खास है। नई सरकार के मुखिया के तौर पर उमर अब्दुल्ला के सामने आम लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरने की कठिन चुनौती भी है। जनता ने विकास और शांति की आकांक्षा के साथ दिल खोलकर मतदान किया और अपनी उम्मीदों की सरकार चुनी है। घाटी में दशकों तक अब्दुल्ला परिवार के शासन के अनुभव के मद्देनजर घाटी के लोगों ने नेशनल कॉन्फ्रेंस पर भरोसा जताया। तमाम ऊहापोह, सुरक्षा चुनौतियों तथा विदेशी दखल की तमाम आशंकाओं को निर्मूल करते हुए जम्मू-कश्मीर के जनमानस ने स्पष्ट सरकार बनाने का जनादेश दिया है। इस भूमिका तक पहुंचाने में भारतीय जनता पार्टी एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं। कश्मीर में विकास, पर्यटन में भारी वृद्धि, शांति एवं सौहार्द का वातावरण बनना ऐसे ही प्रयासों की सार्थक निष्पत्ति है। नई सरकार को विकास की चल रही योजनाओं को आगे बढ़ाते हुए आतंकमुक्त कश्मीर के संकल्प को मंजिल तक पहुंचाना होगा।

जम्मू एवं कश्मीर में लोकतांत्रिक सरकार का गठन अनेक दृष्टियों से न केवल राजनीतिक दशा-दिशा स्पष्ट करेगा बल्कि राज्य के उद्योग, पर्यटन, रोजगार, व्यापार, रक्षा, शांति आदि नीतियों तथा राज्य की पूरी जीवन शैली व भाईचारे की संस्कृति को प्रभावित करेगा। बहरहाल, ऐसे में नवनिर्वाचित सरकार और केंद्र का दायित्व है कि घाटी के लोगों ने जिस मजबूत लोकतंत्र की आकांक्षा जतायी है, उसे पूरा करने में भरपूर सहयोग करें। एक समय राज्य में मतदाता डर कर मतदान करने हेतु नहीं निकलते थे। मतदान का प्रतिशत बेहद कम रहता था। इस बार मतदाता निर्भीकता के साथ मतदान करने निकले। जनता ने नेशनल कॉन्फ्रेंस के पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने के संकल्प को सकारात्मक समर्थन दिया है। यद्यपि लोकसभा चुनाव में नेशनल कॉन्फ्रेंस को कामयाबी नहीं मिल पायी थी, लेकिन जनता ने उन्हें राज्य में सरकार चलाने का स्पष्ट जनादेश दिया है। वहीं दूसरी ओर, इस भारी मतदान व स्पष्ट बहुमत का एक निष्कर्ष यह भी है कि लोग घाटी में शांति और सुकून, अमन एवं विकास, सौहार्द एवं सद्भावना चाहते हैं। जम्मू-कश्मीर सरकार और केंद्र सरकार को मिलकर प्रयास करना होगा कि इस क्षेत्र में शांति कायम होने के साथ विकास की नई बयार चले। जिसमें आम नागरिक खुद को सुरक्षित अनुभव करते हुए राष्ट्रीय विकास की धारा के साथ-साथ कदमताल कर सके।

निश्चित ही उमर के सामने चुनौतियां बड़ी हैं, आम लोगों को भी उनकी कठिनाइयों का अंदाजा है, वहीं खुद उमर ने भी व्यावहारिक नजरिया अपनाने का संकेत दिया है। चुनाव के दौरान अनुच्छेद 370 की वापसी की मांग पर कड़ा रुख अपनाने वाले उमर ने चुनाव नतीजे आने के बाद इस मसले पर अपना रुख नरम कर लिया। उन्होंने कहा कि मौजूदा हालात ऐसे नहीं हैं, जिनमें इस मुद्दे पर जोर देने का किसी

को कुछ फायदा होगा। उम्मीद बढ़ाने वाली बात यह भी है कि चुनावी कड़वाहट को पीछे छोड़ते हुए सभी पक्षों ने सहयोग का रुख अपनाने का संकेत दिया है। न केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने नई सरकार के साथ मिलकर काम करने का संकेत दिया है बल्कि खुद उमर ने भी उपराज्यपाल से टकराव की बजाय आपसी समझ एवं सकारात्मकता से शासन करने की मंशा जतायी है, जो जहां जम्मू-कश्मीर की जनता के हित में है वही उमर की राजनीतिक सूझबूझ, परिपक्वता एवं विवेक का परिचायक है। चाहे उपमुख्यमंत्री पद जम्मू संभाग से चुने गए विधायक सुरिंदर चौधरी को स्थान देने की बात हो या कांग्रेस के लिए कैबिनेट में स्थान खाली रखने की, उमर अब्दुल्ला यह संकेत दे रहे हैं कि वह सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं। कांग्रेस ने फिलहाल सरकार को बाहर से समर्थन देने की बात कही है, लेकिन इसका कारण राज्य का दर्जा न मिलने को बताया है। उमर को हर कदम सावधानी से उठाने होंगे ताकि कोई भी स्थिति मंत्री पदों की संख्या का या इंडिया गठबंधन के घटक दलों में मतभेद एवं टकराव का न बन जाए। उमर के एक-एक फैसले पर कैबिनेट और उपराज्यपाल के अधिकार क्षेत्र का मसला सामने आ सकता है। ऐसे में देखना होगा कि इन सबके बीच जम्मू-कश्मीर की नई सरकार उमर के नेतृत्व में कितने सधे कदमों से आगे बढ़ती है। क्योंकि सरकार को अपना दायित्व इस बात को ध्यान में रखकर निभाना होगा कि केंद्रशासित प्रदेश में उपराज्यपाल के पास व्यापक अधिकार हैं।

केंद्र शासित प्रदेश में एक दशक बाद हुए विधानसभा चुनाव में मतदाताओं का खासा उत्साह लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूती दे रहा है। कहीं न कहीं जनता ने स्पष्ट संदेश भी दिया कि वे हिंसा, अस्थिरता, आतंकवाद व अलगाववाद से छुटकारा चाहते हैं। जाहिरा तौर पर नई सरकार के सामने व्यापक जनाकांक्षाओं को पूर्ण करने की चुनौती होगी। इसलिये जम्मू-कश्मीर में नई सरकार को व्यापक जनाकांक्षाओं को पूर्ण करते हुए बदली हुई शासन व्यवस्था के साथ भी साम्य स्थापित करना है। इस बात का अहसास उमर अब्दुल्ला को भी है कि शासन चलाने में अब पहले जैसी स्वतंत्रता नहीं होगी। विश्वास किया जाना चाहिए कि कम से कम सीमावर्ती घाटी की संवेदनशीलता को देखते हुए इस केंद्रशासित प्रदेश में वैसा टकराव देखने को नहीं मिलेगा, जैसा कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार और एलजी के बीच देखने को मिलता रहा है। विश्वास करें कि नई सरकार को प्रशासनिक मामलों में नौकरशाही का पर्याप्त सहयोग मिलता रहेगा। नीति-नियंताओं को ध्यान रखना होगा कि सरकार चलाने में किसी भी तरह का अनावश्यक व्यवधान कालांतर अशांति का वाहक बनेगा। उम्मीद करें कि यथाशीघ्र पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने के बाद जम्मू-कश्मीर में प्रशासन की विसंगतियां दूर की जा सकेंगी।

राज्य ने साम्प्रदायिकता, आतंकवाद तथा अस्थिरता के जंगल में एक लम्बा सफर तय किया है। उसकी मानसिकता घायल है तथा जिस विश्वास के धरातल पर उसकी सोच ठहरी हुई थी, उसमें नई उम्मीदों को पंख लगे हैं। अलगाव से बाहर निकलने का नया विश्वास जगा है। पाकिस्तानी आतंकी सोच के नुकसान को प्रांत ने झेला और महसूस किया है। गुलाम कश्मीर के लोगों की दुर्दशा को देखा जा रहा है। इसीलिये इन चुनावों में जम्मू-कश्मीर के लोग सक्रिय रूप से भाग लेकर और बड़ी संख्या में मतदान कर लोकतांत्रिक सरकार बनायी है, जो शांति और विकास के नये द्वार उद्घाटित करते हुए युवाओं के लिए उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करे एवं आतंकमुक्ति का एक नया अध्याय रचे। आज सबकी आंखें एवं कान उमर की भविष्य के शासन एवं नीतियों पर टिकी है। निश्चित ही इस नई सरकार से उम्मीद जगी है कि उसके प्रयासों से जम्मू-कश्मीर में लोकतांत्रिक विकास और शांति-समृद्धि-स्थिरता का नया दौर शुरू होगा। ऐसा होना ही नई सरकार एवं उमर के नेतृत्व की सार्थकता है।

प्यार की राह में मजहब की दीवारें : लव जिहाद

- राम पुनियानी

लव जिहाद का उद्देश्य क्या है, इसे लेकर कई प्रकार की बातें की जाती है। पहला उद्देश्य बताया जाता है देश की जनसंख्या में विभिन्न धर्मों के अनुपात में बदलाव करना। अभी तक जो प्रोपगेंडा बड़े पैमाने पर किया जाता था वह था कि मुसलमानों की 'चार बीबियां और चालीस बच्चे' होते हैं और जल्दी ही उनकी आबादी हिंदुओं से अधिक हो जाएगी। अब लव जिहाद और उसके जरिए हिंदू लड़कियों का धर्मपरिवर्तन करना।

कुछ दिन पहले (1 अक्टूबर को) बरेली की एक अदालत ने यौन हिंसा के एक मामले में एक मुस्लिम युवक को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। अपने फैसले में न्यायाधीश ने टिप्पणी की कि यह लव जिहाद का मामला है और पुलिस इसे उस स्वरूप में प्रस्तुत करने में असफल रही है। इस मामले में लड़की हिंदू थी। मुकदमे की कार्रवाई के दौरान लड़की ने यह कहते हुए अपनी शिकायत वापस ले ली थी कि उसे हिंदुत्ववादी संगठनों के दबाव के चलते झूठी शिकायत दर्ज करवानी पड़ी थी। लेकिन न्यायाधीश महोदय ने इन तथ्यों को नजरअंदाज कर दिया। संभवतः उनके फैसले पर समाज में चल रहे प्रोपेगेंडा का असर था। न्यायाधीश दिवाकर ने अपने फैसले में यह अजीब टिप्पणी की कि- 'मुस्लिम पुरूष, हिंदू महिलाओं से शादी करने के उद्देश्य से उन्हें निशाना बनाते हैं।'

फैसले में आगे कहा गया 'कुल मिलाकर, मुस्लिम पुरुषों द्वारा गैर-मुस्लिम समुदायों की महिलाओं से प्यार का नाटक कर उनसे विवाह करना और उनका धर्मपरिवर्तन करवाना लव जिहाद है। एक धर्म विशेष के अराजकतावादी तत्व, लव जिहाद के माध्यम से गैर-कानूनी धर्मपरिवर्तन करवाते हैं। उनसे यह सब या तो कोई करवाता है या वे स्वयं यह साजिश रचते हैं...लव जिहाद के लिए बहुत धन की जरूरत होती है। इसलिए इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इसके लिए विदेशी धन का इस्तेमाल किया जा रहा हो...।' लव जिहाद के लिए विदेशी धन का इस्तेमाल एक नया शिगूफा है। बेहतर होता कि जज साहब यह भी बता देते कि इसके लिए धन किस देश से आ रहा है। लव जिहाद से जुड़ा प्रोपेगेंडा, जिहाद सीरीज का पहला एपीसोड था। अब कई प्रकार के जिहादों की चर्चा आम हो चुकी है जिनमें लव जिहाद के अलावा यूपीएससी जिहाद, फ्लड जिहाद, कोरोना जिहाद आदि शामिल हैं। कुछ घोर साम्प्रदायिक एंकरों को जिहादों की सूची को लम्बा करने में महारत हासिल

है। वे मुसलमानों को हर चीज से जोड़ने में सिद्धहस्त हैं - चाहे वो बाढ़ हो या कोई बीमारी। यह छोटे-छोटे मुद्दों को तिल से ताड़ बनाकर एक ऐसे धार्मिक समुदाय, जिसका धर्म 'विदेशी' बताया जाता है, का दानवीकरण करने का मामला है। इस समुदाय को 'पराया' और 'दुश्मन' बताया जाता है और खुलेआम भी और दबे-छिपे तरीकों से भी उस पर हमले किए जाते हैं. यह 'पराए' और 'दुश्मन' वाला नजरिया ही साम्प्रदायिक राजनीति और हिंदू राष्ट्रवादी राजनीति की जड़ में है, जिसका इस समय भारतीय समाज में बोलबाला है।

लव जिहाद संबंधी प्रोपेगेंडा बहुत पुराना नहीं है। कुछ दशक पहले केरल के कुछ ईसाई बिशपों ने यह मिथ्या आरोप पहली बार लगाया और जल्दी ही इसे हिन्दू राष्ट्रवादियों ने बड़े पैमाने पर फैलाना शुरू कर दिया। शाखाओं, उसके द्वारा संचालित स्कूलों, मीडिया और सोशल मीडिया के एक हिस्से और आईटी सेलों के कारण आरएसएस की प्रोपेगेंडा फैलाने की क्षमता बहुत अधिक है। जांच के पश्चात यह गलत पाया गया कि कोई ऐसा संगठन है जो हिंदू लड़कियों को फंसाने के लिए मुस्लिम युवकों को धन उपलब्ध करवाता है।

लव जिहाद का उद्देश्य क्या है, इसे लेकर कई प्रकार की बातें की जाती है। पहला उद्देश्य बताया जाता है देश की जनसंख्या में विभिन्न धर्मों के अनुपात में बदलाव करना। अभी तक जो प्रोपगेंडा बड़े पैमाने पर किया जाता था वह था कि मुसलमानों की 'चार बीबियां और चालीस बच्चे' होते हैं और जल्दी ही उनकी आबादी हिंदुओं से अधिक हो जाएगी। अब लव जिहाद और उसके जरिए हिंदू लड़कियों का धर्मपरिवर्तन करना और बच्चे पैदा करना इसमें जुड़ गया है। इसमें अब यह बात भी जोड़ दी गई है कि इन लड़कियों को इस तरह का प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि उन्हें इस्लामिक स्टेट के लड़ाकों की फौज में शामिल किया जा सके।

लव जिहाद के प्रोपेगेंडा का मुख्य पहलू है उसका पितृसत्तात्मक मूल्यों से जुड़ाव। पितृसत्तात्मकता और धर्म-आधारित राष्ट्रवाद का चोली-दामन का साथ है। देश में साम्प्रदायिक राजनीति के प्रबल होने के साथ-साथ महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहे हैं और साथ ही बलात्कार की घटनाएं भी। तीस्ता सीतलवाड के अनुसार, 'जिन समुदायों को हमलों का निशाना बनाया जाता है उनकी महिलाओं को उन समुदायों के 'सम्मान का प्रतीक' मानकर खासतौर पर घृणा और हिंसा का शिकार बनाया जाता है। हमने यह विभाजनकाल की हिंसा में 1946-47 में देखा, असम के नेल्ली में 1983 में देखा, दिल्ली में 1984 में देखा, बंबई में 1992-93 और गुजरात में 2002 में देखा। हाल में, 2023 में हमने यही मणिपुर में देखा। इसकी वजहें समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक और वैचारिक हैं। हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि भाजपा पर उसकी विचारधारात्मक पितृ संस्थाओं आरएसएस और हिंदू महासभा का नियंत्रण है- जो अति दक्षिणपंथी संगठन हैं। वे धर्म का सैन्यीकरण करना चाहते हैं और महिलाओं और उनकी लैंगिकता पर नियंत्रण चाहते हैं।'

यहां हिंदू राष्ट्रवाद के शीर्षस्थ विचारक विनायक दामोदर सावरकर द्वारा की गई शिवाजी की निंदा का जिक्र प्रासंगिक होगा। शिवाजी की सेना द्वारा लूटपाट के दौरान बंदी बनाई कल्याण के मुस्लिम गवर्नर की बहू को उनके सामने पेश किया गया और शिवाजी ने उसे ससम्मान वापिस भेजने का आदेश दिया। सावरकर ने शिवाजी द्वारा उसे इंतकाम का निशाना न बनाने और वापिस भेजने के निर्णय की आलोचना की।

'लव जिहाद' के बढ़ते शोर-शराबे के बीच इतिहासकार चारू गुप्ता का कहना है कि यह महिलाओं के जीवन पर नियंत्रण रखने का तंत्र है। 'हिंदू दक्षिणपंथियों के इस झूठे दावे कि लव जिहाद फैलाने वाला संगठन हैं जो हिंदू महिलाओं को इस्लाम अपनाने के लिए बाध्य करने के उद्देश्य से प्रेम का झूठा प्रपंच रचते हैं, सन् 1920 में तथाकथित अपहरणों को लेकर किए गए प्रचार जैसा ही है। 1920 हो या 2009, हिंदू पितृसत्तात्मक नजरिया इन अभियानों के साथ बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है। मुस्लिमों द्वारा सताई गई असहाय हिंदू महिलाओं की छवि बड़े पैमाने पर प्रस्तुत की जाती है और महिलाओं के अपनी मर्जी से फैसला करने के वैध अधिकार को नजरअंदाज किया जाता है।'

इन बातों को ध्यान में रखते हुए ही बजरंग दल की रक्षा बंधन जैसे अवसरों पर दिखाई जाने वाली अतिसक्रियता को देखा जाना चाहिए जब वे हिंदुओं के घरों पर जाते हैं और अभिभावकों को अपनी बेटियों पर 'नजर रखने' की ताकीद देते हैं। इस प्रोपेगेंडा का असर हो रहा है और समाज के विभिन्न वर्गों पर इसका प्रभाव पड़ रहा है। मुस्लिम युवकों पर हमलों के कई मामले सामने आ रहे हैं। प्रियंका टोडी और रिजवान खान के प्रकरण का पटाक्षेप रिजवान खान की त्रासद मृत्यु के साथ हुआ। कई मामलों में इसका ठीक उलट भी होता है जैसे अंकित भंडारी की हत्या उस मुस्लिम लड़की के रिश्तेदारों द्वारा कर दी गई जिससे वह प्यार करता था। हादिया के मामले, जिसमें अखिला अरूना ने धर्म परिवर्तन कर इस्लाम ग्रहण कर लिया था, से कई खुलासे होते हैं। उसने अपने मुस्लिम मित्रों से हुई चचाओं की वजह से इस्लाम अपनाया। इसके बाद उसने शफीक जहां से विवाह किया। अदालत ने उसे इस आधार पर उसके पिता को सौंपने का आदेश दिया कि उसका ब्रेन वॉश कर दिया गया है और उसे आईसिस में शामिल कर लिया जाएगा। उसने सर्वोच्च न्यायालय तक अपील की जिसने उसका बयान सुनने के बाद उसका पति के साथ रहने का अधिकार पुनःस्थापित किया।

केरल में कई योग केन्द्र खुल गए हैं जो मुसलमानों से विवाह का मन बना चुकी हिंदू लड़कियों को अपना निर्णय बदलने, दुबारा हिंदू धर्म अपनाने और मुस्लिम पुरूष के प्रति प्यार का परित्याग करने के लिए राजी करने का प्रयास करते हैं। कई लड़कियों ने इन केन्द्रों में जोरजबरदस्ती और ब्लैकमेलिंग किए जाने की शिकायत की है.

ऊपर जिस अदालती फैसले का जिक्र किया गया है, वह दिखाता है कि यह प्रोपेगेंडा न्यायाधीशों सहित समग्र रूप से हमारे समाज पर किस तरह का प्रभाव डाल रहा है। कम से कम न्यायाधीशों से तो यह अपेक्षा की ही जा सकती है कि उनके फैसले ठोस तथ्यों पर आधारित हों।

स्वागत 'लाथार्थी के तौर पर नागरिक'

- सुभाष गाताडे

केन्द्र सरकार द्वारा 80 करोड़ भारतीयों के लिए हर माह पांच किलो अनाज देने की बात भी कोई कर सकता है जो आने वाले पांच साल तक चलेगी, उसका भी इसके तहत उल्लेख हो। ऐसी योजनाओं की प्रचुरता का- जिनमें से कई योजनाएं विपक्षी पार्टी की सरकारों ने भी शुरू की हैं - मतलब यह कत्तई नहीं है कि हम उन सवालों को सामने न रखें, जो पहले से उठे न हों। दरअसल इससे जुड़े अन्य मामलों के चलते उसकी अहमियत बढ़ गयी है।

सूबाई चुनावों का ऐलान हो चुका है, महाराष्ट्र और झारखंड में अगले माह के अंत तक नई सरकार का गठन होगा। वैसे इस ऐलान के ऐन पहले एक कर्तव्यनिष्ठ पत्रकार द्वारा महाराष्ट्र सरकार को भेजी लीगल नोटिस चर्चा का विषय बनी रही। इस नोटिस का फोकस महाराष्ट्र सरकार द्वारा आनन-फानन हाल में शुरू की गयी 'लाडकी बहिण' योजना से है, जिसके तहत महिलाओं को प्रतिमाह 1,500 रूपए दिए जाएंगे। याद रहे लोकसभा चुनाव में जब महाराष्ट्र में भाजपा की अगुआई वाले गठबंधन को विपक्षी इंडिया गठबंधन की तुलना में कम सीटें मिलीं,तब इस योजना को शुरू किया गया।

नोटिस में कहा गया है कि सरकार का यह दावा कि इतनी मासिक सहायता महिलाओं के लिए काफी होगी, तथ्यों से परे है, इतना ही नहीं ऐसी खैरात निर्भरता की संस्कृति को बढ़ावा देती है और वह कल्याणकारी राज्य के समूचे विचार को खत्म कर देती है।

इस खास मामले में सरकार का जवाब जो भी हो, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस लीगल नोटिस ने बेहद जरूरी सवाल उठाए हैं। इसमें कहा गया है कि इस योजना के लिए सरकार ने प्रति साल 46,000 करोड़ रुपए के खर्चे का अनुमान लगाया है और इसे पूरा करने के लिए रिजर्व बैंक आफ इंडिया से तीन हजार करोड़ रुपए का कर्जा भी ले लिया है। उनके मुताबिक यह योजना राज्य की वित्तीय स्थिति को और नाजुक कर देगा तथा उसका राजकोषीय घाटा तीन फीसदी से लेकर 4,6 फीसदी तक पहुंच जाएगा। वित्तीय तथा अन्य मामलों के अलावा इस नोटिस ने अन्य सवाल उठाए हैं, मसलन महिलाओं के लिए बनी इस योजना से ट्रांसजेंडर महिलाओं को बाहर रखा गया है और सबसे अहम बात यह है कि यह योजना राज्य और स्त्रियों के बीच के रिश्ते को भाई-बहन के गतिविज्ञान में देखता है, जो संविधान निमार्ताओं द्वारा नजरिये को उलट देता है, जो इसे राज्य और नागरिक के बीच के सम्बन्ध के तौर पर देखता है।

इस हस्तक्षेप को लेकर यह प्रतिक्रिया सबसे पहले सुनने को मिल सकती है कि इस योजना में अनोखा कुछ नहीं है। मध्यप्रदेश में शुरू की गयी 'लाड़ली बहिना' योजना की बात की जा सकती है- जिसे शिवराज सिंह चौहान की पूर्व सरकार ने शुरू किया था और बाद में कहा गया था कि भाजपा को लोकसभा चुनावों में जो जीत मिली इसके पीछे इसी योजना का हाथ रहा है- जिसके तहत भी महिलाओं को हर माह कुछ निश्चित रकम दी जाती है।

मुमकिन है केन्द्र सरकार द्वारा 80 करोड़ भारतीयों के लिए हर माह पांच किलो अनाज देने की बात भी कोई कर सकता है जो आने वाले पांच साल तक चलेगी, उसका भी इसके तहत उल्लेख हो।

ऐसी योजनाओं की प्रचुरता का- जिनमें से कई योजनाएं विपक्षी पार्टी की सरकारों ने भी शुरू की हैं - मतलब यह कत्तई नहीं है कि हम उन सवालों को सामने न रखें, जो पहले से उठे न हों। दरअसल इससे जुड़े अन्य मामलों के चलते उसकी अहमियत बढ़ गयी है

बिना किसी पूर्वयोजना के चुनावों के ऐन पहले शुरू की गयी इस योजना का मतलब यह भी है कि इससे सरकार की पहले से चली आ रही योजनाओं पर भी गहरा असर पड़ेगा। पहले से जिन हाशियाकृत तबकों को सबसिडी दी जाती रही है, उसमें कटौती होगी या विलंब होगा। मालूम हो कि इस बात को सरकार के आलोचक नहीं बल्कि खुद केन्द्र सरकार के वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री नितिन गडकरी ने उठाया है। राज्य की पहले से चली आ रही नाजुक वित्तीय स्थिति का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि- 'जब राज्य पहले से ही कर्जे में डूबा है तो ऐसी योजना की व्यावहारिकता प्रश्नों के घेरे में है।' अगर हम घटनाक्रम की तरफ गौर से देखें तो यह साफ है कि राज्य ने नागरिकों के अपने हित से जुड़े मामले में निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहभागिता से पूरी तरह इन्कार किया है। दूसरे, जल्दबाजी में शुरू की गयी यह योजना एक तरह से नागरिकों की 'बौद्धिक क्षमता' को भी कम आंकती है और लोगों में आपस में ही संदेह और अविश्वास पैदा करती है।

इसका मतलब और कुछ नहीं बल्कि नागरिक और जनतंत्र के बीच जो एक खास किस्म का रिश्ता बना हुआ है - जहां नागरिक अपने अधिकारों की मांग कर सकते हैं, उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि अधिकार हासिल होते है और राज्य का कर्तव्य होता है कि वह उन्हें पूरी करे - को एक तरह से भंग कर देना या तोड़ देना। शायद हुक्मरानों को यह लगता हो कि ऐसा रिश्ता अब पुराना हो गया है और उन्हें लगता हो कि पुराने दिन ही लौटाए जा सकें, जहां जनता प्रजा के तौर पर उपस्थित होती थी, जो शहंशाहों और राजे-रजवाड़ों की कृपादृष्टि पर निर्भर होती थी। हम हाल के वर्षों में उन घटनाओं को याद कर सकते हैं कि किस तरह देश की वित्तमंत्री ने एक सार्वजनिक वितरण योजना की दुकान पर दुकानदार को इसलिए डांटा कि उसने प्रधानमंत्री मोदी की तस्वीर नहीं लगाई थी या खुद प्रधानमंत्री मोदी ने ही एक जनसभा में किस तरह ऐसी सहायता को लेकर जनता क्या सोचती है, इसका किस्सा बयान किया था।

इस तरह आज हम यही देख रहे हैं कि गणतंत्र के 75 वे वर्ष में एक आम नागरिक जो अधिकार सम्पन्न व्यक्ति है, उसे राज्य की दया पर छोड़ा जा रहा है।

शरदोत्सव में भक्तिमती शबरी लीला-सूफी भजनों की रही धूम

साधो द बैण्ड ने दर्शकों को किया मंत्रमुग्ध

अखंड भारत संदेश

प्रस्तुति देते कलाकार।

चित्रकूट। शरदोत्सव के दूसरे दिन दीनदयाल परिसर में आयोजित सांस्कृतिक संध्या में मुम्बई के सुप्रसिद्ध साधो द बैण्ड ने भक्तिमती शबरी लीला नाट्य व सूफी भजनों से दर्शकों का मन मोह लिया। भगवान राम व माता शबरी मिलाप प्रसंग पर आधारित नवधा भक्ति कथा ने दर्शकों को रोमांचित किया। साधो द बैण्ड की प्रस्तुति ने रामायण के प्रसंगों में भावनाओं की गहराई को बखूबी उजागर किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन रामायणी कुटी के महंत राम हृदय दास महाराज व मध्य प्रदेश की नगरीय निकाय एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी सहित कई गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। अपने भाषण में बागरी ने नानाजी देशमुख के समाजसेवा के कार्यों को सराहा और उन्हें प्रेरणा का स्रोत बताया। शबरी लीला में शबरी और भगवान राम के मिलाप की कथा का मंचन हुआ। जिसे सविता दाहिया सतना के निर्देशन में प्रस्तुत किया गया। इस नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से भक्ति, त्याग और आस्था की गहराई को दर्शाया गया। जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। अंतिम प्रस्तुति में साधो द बैण्ड ने सूफी और भक्ति गीतों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। ओरी सखी मंगल गावो री और प्रीत की लत मोहे ऐसी लागी जैसे भजनों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। राम मंदिर निर्माण के लिए प्रसिद्ध गीत मेरी झोपड़ी के भाग्य आज खुल जाएंगे.. राम आएंगे ने भी विशेष उत्साह पैदा किया। जय श्रीराम के नारों ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए।

रैन बसेरा की हालत खस्ता, श्रद्धालु सडकों पर सोने को मजबूर

चित्रकूट। शरद पूर्णिमा के मौके पर हजारों श्रद्धालु धर्मनगरी पहुंचे। दीपावली का मेला नजदीक है। श्रद्धालु मंदाकिनी नदी में स्नान कर कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा कर रहे हैं। इस बार व्यवस्थाओं की कमी के चलते श्रद्धालुओं को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। शुक्रवार को नगर पालिका के रैन बसेरों में गंदगी का अंबार व अवैध वसूली के चलते श्रद्धालु वहां रुकने से कतराते हैं। स्थिति इतनी गंभीर है कि सैकड़ों श्रद्धालु सड़क किनारे, फुटपाथ व डिवाइडर पर खुले आसमान के नीचे सोने को मजबूर हो गए हैं। बेडीपुलिया से लेकर यूपीटी चैराहे तक श्रद्धालु इसी हालात में देखे जा सकते हैं। श्रद्धालुओं के इस हालात पर प्रशासन की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। श्रद्धालुओं का कहना है कि न तो ठहरने की सरकारी व्यवस्था है और जो रैन बसेरे हैं, वहां अवैध किराया वसूला जा रहा है। होटल के महंगे खर्चे से बचने के लिए वे सड़क किनारे रुकने को मजबूर हैं। ऐसे में अगर कोई बड़ा हादसा होता है तो इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा, यह सवाल सभी के सामने है। श्रद्धालुओं ने आरोप लगाया कि जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन ने उनकी सुरक्षा व ठहरने की उचित व्यवस्था नहीं की है। प्रशासन की ये लापरवाही कभी भी बड़ा हादसा करा सकती है, लेकिन अभी तक अधिकारियों ने आंखें मूंद रखी हैं।

गौवंश के खिलाफ किसानों ने किया प्रदर्शन

भाजपा नेता भी धरने में बैठे

अखंड भारत संदेश

धरने में बैठे किसान।

चित्रकूट। दस गांवों के किसानों ने डीएम कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया। सुदीनपुर, रौली, कल्याणपुर, लूक, भटूरा, अमिलिहा समेत कई गांवों के किसान एकत्र हुए। डीएम की चैखट पर अपना गुस्सा जाहिर किया। किसानों ने आरोप लगाया कि अन्ना गौवंश उनकी फसलों को बर्बाद कर रहे हैं। समस्या से निपटने को प्रशासन कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा है।

शुक्रवार को प्रदर्शन में भाजपा के वरिष्ठ नेता भी पहुंचे। जो किसानों के साथ जमीन पर बैठने को मजबूर हो गए। इस मौके पर एडीएम मौके पर पहुंचे। उन्होंने किसानों व भाजपा नेताओं को समझाने का प्रयास किया। किसानों ने कहा कि हजारों की संख्या में अन्ना गौवंश उनकी खेती को चैपट कर रहे हैं। फूलचंद द्विवेदी ने बताया कि इन बेसहारा गायों को हटाने की कोशिश करने पर वे हमला कर देते हैं। अब तक 15-20 किसान घायल हो चुके हैं। उन्होंने डीएम को शिकायती पत्र सौंप मांग किया कि वन विभाग जल्द गौवंशों के लिए व्यवस्था करे। प्रदर्शन में भाजपा के वरिष्ठ नेता जगदीश गौतम, सत्य प्रकाश, अवधेश कुमार, कृष्ण कुमार जौहरी, शिव शंकर, रमाकांत और अन्य प्रमुख नेता भी शामिल रहे। किसानों ने चेताया कि जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो वे बड़ा आंदोलन करेंगे।

आचार्य अभ्यास वर्ग में मौजूद छात्र।

एकल शिक्षा अभियान

शिक्षा को नई दिशा देने की पहल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भरत मंदिर में एकल अभियान के तहत दस दिवसीय आचार्य अभ्यास वर्ग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरुकता फैलाना है। इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि भरत मंदिर के महंत दिव्य जीवनदास महाराज व दक्षिण उत्तर प्रदेश के ग्राम विकास शिक्षा समिति के अध्यक्ष प्रह्लाद प्रताप मौजूद रहे।

शुक्रवार को महंत दिव्य जीवनदास महाराज ने कार्यक्रम में ग्रामीण आचार्यों और बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि एकल अभियान के तहत, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में एक लाख से ज्यादा स्कूल चलाए जा रहे हैं, जहां बच्चों को शिक्षा दी जा रही है। उनका मानना है कि शिक्षा ही गांव, क्षेत्र, देश के विकास की कुंजी है। एकल अभियान का उद्देश्य शिक्षा देना ही नहीं, बल्कि बच्चों में संस्कृति, धर्म व अध्यात्म की जानकारी देना है। इसके लिए गांवों में समितियों का गठन किया गया है और प्रशिक्षित आचार्य नियुक्त किए गए हैं, जो लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक करेंगे। प्रह्लाद प्रताप ने बताया कि एकल शिक्षा अभियान के जरिए हम पंचमुखी शिक्षा पर ध्यान दे रहे हैं, जिसमें स्वास्थ्य, संस्कृति, जागरूकता और प्राथमिक शिक्षा का विकास शामिल है। इसका उद्देश्य गांवों का संपूर्ण विकास करना है। यह अभियान ग्रामीण समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास कर रहा है, जो शिक्षा के साथ-साथ समाज के हर पहलू को मजबूत बनाने की कोशिश कर रहा है।

वैश्विक समस्याओं का समाधान हैं तुलसीदास के साहित्य

अखंड भारत संदेश

गोष्ठी में मौजूद अतिथिगण।

चित्रकूट। जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय व व्यंजना आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी के तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय अंतरविषयी गोष्ठी गोस्वामी तुलसीदास सांस्कृतिक, साहित्यिक व सामाजिक विषय पर आयोजित हुई। गोस्वामी तुलसीदास को महर्षि बाल्मीकि का अवतार माना जाता है। स्वामी रामभद्राचार्य जी को गोस्वामी तुलसीदास जी का अवतार माना जाता है।

शुक्रवार को गोष्ठी का शुभारंभ जगद्गुरु पद्म विभूषण रामभद्राचार्य के करकमलों से हुआ। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो शिशिर पाण्डेय ने की। जगद्गुरु ने कहा कि राम के अनन्य भक्त तुलसीदास जी रचना रामलला नहछू सुनकर मन गदगद हो गया, हमारी भारतीय भाषाओं में अवधी भाषा बहुत सुंदर है। एक अनोखी सम्प्रेषण शक्ति है इसमें। गुरु जी ने गोस्वामी तुलसीदास की रचना जानकी मंगल पाठ गाकर सुनाया व मंगल भवन अमंगल हारी के गायन से उद्घाटन सत्र कर समापन किया। द्वितीय सत्र में वक्ता डॉ कल्पना दुबे, श्रीमती दिव्या दुबे ने गोस्वामी तुलसीदास के साहित्यिक पक्षों पर प्रकाश डाला। संचालन डॉ वेणु वनिता व अध्यक्षता डॉ इला द्विवेदी ने किया।

सांस्कृतिक सत्र में गायक पंडित विनोद द्विवेदी व आयुष द्विवेदी जी ने राग भीमपलासी में निबद्ध रचना राम नाम ध्यान धरो निसदिन, सूलताल में निबद्ध रचना मूरत बसी मन मे एवं राग मधुवंती में भजमन तुलसीदास, आपके साथ पखावज पर संगत राज कुमार झा जी ने की। अंतर्राष्ट्रीय सत्र में जापान से जुड़ी प्रो हिरोको नागासाकि ने तुलसीदास का छंद विधान विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। जापान से जुड़ीं डॉ तोमोका मुशिगा ने ठुमक चालत रामचन्द्र की अद्भुत संगीतमयी प्रस्तुति दी। अमेरिका से जुड़ीं डॉ विजयश्री शर्मा ने राग पूरिया धानश्री और राग भैरव राम जपु राम जपु, राम जपु बांवरे साहित्यिक पक्ष पर प्रकाश डाला। अंत में संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन सचिव डॉ गोपाल कुमार मिश्रा ने किया।

किसानों को नई तकनीक को अपनाने की जरूरतः मंत्री कृष्णा गौर

अखंड भारत संदेश

मुख्य अतिथि का स्वागत करते संस्थान कार्यकर्ता।

चित्रकूट। आरोग्यधाम में सीएसआईआर-एरोमा मिशन परियोजना तथा सिडबी सह-परियोजना के तहत एक दिवसीय कौशल-सह-तकनीकी प्रशिक्षण आयोजित किया गया। ये कार्यक्रम सीएसआईआर-केंद्रीय औषधीय व सुगंध पौधा संस्थान लखनऊ एवं पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केंद्र प्रयागराज के संयोजन से सम्पन्न हुआ।

शुक्रवार को कार्यक्रम का शुभारम्भ बतौर मुख्य अतिथि श्रीमती कृष्णा गौर राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण, विशिष्ट अतिथि विधायक सींधी श्रीमती रीति पाठक, अभय महाजन संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान, संजय सराफ अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी आजीविका मिशन मप्र के दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज से डॉ अनीता तोमर ने बताया कि किसानों को औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती के प्रति जागरूक करना तथा कौशल विकास से आय में बढ़ोतरी के अवसर प्रदान करना है। विशिष्ट अतिथि विधायक श्रीमती रीति पाठक ने किसानो की आय दोगुनी करने के लिए औषधीय पौधो की खेती को बेहतर विकल्प बताया। किसानों को आत्मनिर्भर व सशक्त बनाने की नई तकनीकियों को अपनाने को प्रेरित किया। दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव अभय महाजन ने बताया कि भारतीय पारंपारिक किचन गार्डेन को सर्वोत्तम बताते हुए मोटे अनाज की खेती को जोर दिया। आरोग्यधाम में औषधीय वाटिका की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ मनोज त्रिपाठी ने किया। अंत में राम प्रवेश यादव सीएसआईआर-सीमैप की टीम ने सभी किसानों और प्रतिभागियों का आभार जताया। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों की आर्थिक समृद्धि और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ।

प्रदर्शन करते ग्रामीण।

जमीन रजिस्ट्री में देरी का प्राधिकरण पर लगाया आरोप, ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सिद्धपुर बनाड़ी प्राधिकरण ने किसानों की जमीन रजिस्ट्री में देरी व अनियमितताओं के विरोध में ग्रामीणों ने कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन किया। दर्जनों किसानों की लगभग 60 बीघा जमीन तीन साल पहले 35 लाख रुपए प्रति बीघा के हिसाब से प्राधिकरण ने सहमत पत्र के तहत ली थी। किसानों ने डीएम को ज्ञापन सौंपते हुए प्राधिकरण के खिलाफ सख्त कार्रवाई व उनके एग्रीमेंट को निरस्त करने की मांग की है। शुक्रवार को ग्रामीणों ने कहा कि प्राधिकरण ने उनके साथ सहमत पत्र तो साइन करा लिया, लेकिन रजिस्ट्री अभी तक नहीं कराई। इस बीच जमीन के सर्किल रेट दोगुने हो गए हैं। किसानों ने कहा कि पुराने सहमत पत्र को रद्दकर नए सर्किल रेट के हिसाब से रजिस्ट्री हो। उन्होंने पत्र देकर डीएम से त्वरित कार्रवाई की गुहार लगाई। डीएम ने ग्रामीणों को कार्रवाई का भरोसा दिया। इस मौके पर प्रमुख ग्रामीणों में चुनकावन सिंह, राजकुमार, जगमोहन, धर्मपाल, बाबू सिंह, राम प्रताप, फूलचंद, धोबी लाल, बद्री, सुरेंद्र सिंह, शैलेंद्र सिंह व राजकरण समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

प्रेमिका ने ब्वायफ्रेंड से मिल दूसरे प्रेमी को मार डाला

सर्विलांस की मदद से दोनों गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

पुलिस गिरफ्त में हत्यारे प्रेमी-प्रेमिका।

चित्रकूट। प्रेमिका ने प्रेमी के साथ मिलकर अपने दूसरे प्रेमी की हत्या कर दी। शव यमुना में फेंक दोनों फरार हो गए। पुलिस शव की तलाश कर रही है। दोनों आरोपी गिरफ्तार हो गए हैं।

ये मामला कोतवाली कर्वी के कोठिलिहाई गांव का है। मृतक अभ्युदय के पिता अभिलाष सिंह ने बताया कि आठ अक्टूबर को बेटा गायब हो गया था। खोजबीन के बाद उसका कुछ पता नहीं चला। थक हारकर थाने में अपहरण का मामला दर्ज कराया था। पता चला कि बेटा प्रिया से बात करता था। इसकी जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने सर्विलांस की मदद से मामले का खुलासा किया। प्रिया व अकिंत को गिरफ्तार कर लिया। प्रिया ने बताया कि अकिंत मेरा पहला प्रेमी है। हम दोनों ने मिलकर अभ्युदय को मारा है। उसका शव यमुना में फेंक दिया है। पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त लोहे के रॉड को बरामद कर लिया है।

वहीं अंकित ने बताया कि वह प्रिया से चार साल से प्रेम करता है। हम दोनों एक-दूसरे से रोज बात करते थे। पिछले छह महीने से प्रिया सही से बात नहीं कर रही थी। उसका प्रेम प्रसंग उसे रिश्ते में ही अभ्युदय से चलने लगा। इस बारे में पता चलने पर प्रिया को मना किया। अभ्युदय को भी मना किया, लेकिन दोनों मान नहीं रहे थे। दबाव बनाने पर प्रिया अभ्युदय को बुलाने को तैयार हुई। आठ अक्टूबर को प्रिया ने अभ्युदय को फोनकर कहा मेरा बर्थडे है, आ जाओ। उस दिन वह प्रिया के घर कटैयाडाड़ी पर ही था। शाम को अभ्युदय पहुंचा। फिर मेरी और अभ्युदय की कहा सुनी हो गई। बात इतनी बढ़ी कि दोनों में मारपीट हो गई। अभ्युदय के सिर में गहरी चोट लग गई। फिर रात के दो बजे उसे दवा दिलाने के बहाने घर से बाहर ले गए। यमुना पुल से उसे नीचे फेंक दिया। इसके बाद दोनों वापस घर चले आए। जिस दिन ये वारदात हुई प्रिया के घर में कोई और नहीं था। अंकित के बयान के बाद पुलिस व एसडीआरएफ की टीम अभ्युदय के तलाश में जुटी है। अभी तक कुछ भी पता नहीं चला है। पुलिस ने बताया कि आठ अक्टूबर की रात अभ्युदय को प्रिया के साथ रात दो बजे सीसीटीवी में देखा गया। सीसीटीवी व फोन कॉल से ही पुलिस ने मामले का खुलासा किया।

हनुमान मंदिर की जमीन पर कब्जा कर रहे दबंग

शिकायत के बाद भी नहीं हो रही सुनवाईः पुजारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मकरी गांव में स्थित हनुमान मंदिर की नौ बीघा जमीन को लेकर विवाद गहराता जा रहा है। पुजारी ने आरोप लगाया कि कुछ दिनों पहले दबंगों ने इस जमीन पर अवैध रूप से कब्जा कर लिया, लेकिन प्रशासन की ओर से अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई।

शुक्रवार को पुजारी ने बताया कि वह और छोटे भाई मौके पर पहुंचे तो दबंगों ने मारपीट शुरू कर दी। उन्होंने छोटे भाई का मोबाइल छीनकर मारपीट की। पुजारी ने इसकी शिकायत कोतवाली कर्वी समेत कई अन्य अधिकारियों से की है। अभी तक कोई सुनवाई नहीं हुई है। पुजारी ने कहा कि ये जमीन हनुमान मंदिर के नाम की है, न कि किसी व्यक्ति विशेष की है। गांव के कुछ दबंग इस पर जबरन कब्जा कर रहे हैं। वे पिछले एक महीने से राजस्व विभाग के चक्कर काट रहे हैं, न तो मापी हुई और न ही किसी अधिकारी ने मौके पर आकर स्थिति का जायजा लिया। पुजारी ने आरोप लगाया कि प्रशासन इस मामले में उदासीन बना हुआ है। दबंगों के खिलाफ कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है। उन्होंने जिलाधिकारी समेत उच्चाधिकारियों को पत्र लिखा, लेकिन अभी तक कोई सुनवाई नहीं हो सकी है। ग्रामीणों में इस घटना को लेकर आक्रोश है।

दस दिवसीय ऐतिहासिक रामलीला शुरू, ईनामी दंगल भी हुआ

मऊ/चित्रकूट। मऊ ब्लाक के खण्डेहा गांव में दशकों से चली आ रही परंपरा के तहत दस दिवसीय ऐतिहासिक व पवित्र रामलीला और मेले का शुभारंभ हुआ। रामलीला के कलाकारों ने पहले दिन नारद मोह लीला का मंचन किया। इससे रामलीला की शुरुआत हुई। खण्डेहा में मंत्रोच्चारण के बीच गणेश पूजन किया गया। इसके बाद श्रीराम और रावण के जन्म, दिग्विजय, और नारद मोह लीला का मंचन हुआ। दर्शकों ने कलाकारों के बेहतरीन प्रदर्शन का आनंद लिया और पूरे कार्यक्रम में धार्मिक उत्साह देखा गया। रामलीला समिति के सदस्य चंद्र प्रकाश सिंह लंबरदार, राजीवन सिंह, ज्ञान सिंह, कौशल सिंह और अजय सिंह ने बताया कि इस रामलीला और मेले का आयोजन पिछले आठ दशकों से होता आ रहा है। अब तक इस परंपरा का निर्वहन स्वर्गीय चंद्रभान सिंह द्वारा किया जाता था। इस वर्ष भी रामलीला और विराट इनामी दंगल का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ समिति के अध्यक्ष अरुणेंद्र सिंह द्वारा पूजा अर्चना के साथ किया गया। रामलीला के साथ ही विराट इनामी दंगल भी आयोजित होगा, जिसमें स्थानीय और क्षेत्रीय पहलवानों के अलावा पुरुष और महिला पहलवान भी अपनी कुश्ती कला का प्रदर्शन करेंगे। दंगल के लिए उत्तर प्रदेश के झांसी, जालौन, ललितपुर, बांदा, हमीरपुर, महोबा, प्रयागराज, कौशाम्बी, फतेहपुर, कानपुर, प्रतापगढ़, जौनपुर, वाराणसी और मध्य प्रदेश के सतना, रीवा, कटनी, पन्ना, छतरपुर आदि जिलों के प्रसिद्ध पहलवानों को बुलाया गया है।

इंडोनेशिया में क्यों घट रहा है मिडिल क्लास

इंडोनेशिया

देश की अर्थव्यवस्था का अहम हिस्सा मध्यम वर्ग महंगाई और टैक्स से परेशान है. पिछले पांच सालों में 95 लाख लोग इससे प्रभावित हुए हैं

20 अक्टूबर को प्राबोवो सुबियांतो इंडोनेशिया के अगले राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेंगे. फरवरी में हुए चुनावों में उन्हें शानदार जीत हासिल हुई. लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था के बीच प्राबोवो ने देश की जनता से गरीबी हटाने और 19 लाख लोगों को नौकरी देने का वादा किया और उसी की बदौलत सत्ता हासल की.

2045 तक एक विकसित देश बनने का सपना देख रहे इंडोनेशिया के नए राष्ट्रपति के लिए अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना एक चुनौती होगी. विश्व बैंक की रिसर्च के अनुसार, विकसित देश बनने के लिए इंडोनेशिया को आर्थिक विस्तार के साथ-साथ एक बड़े मध्यम वर्ग की जरूरत होगी.

लेकिन इंडोनेशिया की केंद्रीय सांख्यिकी एजेंसी (बीपीएस) की मानें तो देश में मध्यम वर्ग की संख्या में भारी गिरावट दर्ज की गई है. 2019 में जहां 5.73 करोड़ लोग मिडिल क्लास में आते थे वहीं मार्च 2024 में ये आंकड़ा गिरकर 4.78 करोड़ पर पहुंच गया.

क्या है वजह

अर्थशास्त्री इसके कई कारण गिनाते हैं. कोविड महामारी की वजह से एशिया की इस महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्था में गहरा आर्थिक संकट पैदा हुआ, इसके अलावा बढ़ती मुद्रास्फीति और टैक्स की बढ़ी दरें भी इसके लिए जिम्मेदार हैं.

इंडोनेशिया में आने वाले विदेशी निवेश का बड़ा हिस्सा खनन जैसे उन उद्योगों को जाता है जहां लोगों की जगह मशीनों का ज्यादा इस्तेमाल होता है. इस वजह से ज्यादा लोगों नौकरियां नहीं मिल पाती हैं. इसके अलावा कपड़ा उद्योग को चीन जैसे देशों से मिल रही प्रतिस्पर्धा भी देश भर में बड़े पैमाने पर कर्मचारियों की छंटनी की वजह है.

इंडोनेशिया विश्वविद्यालय के आर्थिक और सामाजिक अनुसंधान संस्थान (एलपीईएम-यूआई) द्वारा अगस्त 2024 में प्रकाशित शोध से पता चलता है कि इंडोनेशिया में मध्यम वर्ग की क्रय शक्ति पिछले पांच सालों से घट रही है.

हालांकि प्राबोवो के भाई हाशिम ऐसा दावा करते हैं कि उनकी सरकार 28 अरब डॉलर के मुफ्त भोजन कार्यक्रम से लाखों नौकरियां पैदा करके मध्यम वर्ग की मदद करेगी.

मिडिल क्लास की परिभाषा

विश्व बैंक उन लोगों को मिडिल क्लास की श्रेणी में रखता है जो आर्थिक सुरक्षा को लेकर निश्चिंत हैं, मुद्रा की कमी की चिंता से मुक्त हैं और अपनी खर्च करने योग्य आय का सही उपभोग कर रहे हैं.

इंडोनेशिया में प्रति माह 132 डॉलर से 643 डॉलर खर्च करने वालों को मध्यम वर्ग की श्रेणी में रखा जाता है. यह समूह देश के आर्थिक विकास में बड़ी हिस्सेदारी रखता है और देश की कुल निजी खपत में लगभग 40 प्रतिशत का हिस्सेदार है.

जकार्ता में रहने वाले दीनार ने बताया, "मिडिल क्लास दुविधा में है. हम अमीर नहीं हैं, लेकिन इतने गरीब भी नहीं हैं कि हमें सब्सिडी मिल सके जो हमारे लिए फायदेमंद हो."

समाचार एजेंसी रॉयटर्स से बात करते हुए विश्लेषक जाहेन रेज्की कहते हैं, भले ही कोविड के बाद इंडोनेशिया की अर्थव्यवस्था पटरी पर आ गई लेकिन मध्यम वर्ग की घटती संख्या का असर भविष्य में जरूर देखने को मिलेगा.

क्या है खतरा

आर्थिक मंदी ने पिछले दो सालों में इंडोनेशिया में बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरियां छीनी हैं और मध्यम वर्ग को अगले साल अपनी कमाई में और गिरावट देखने को मिलेगी.

एक्सपर्ट तोउकी रिएफकी ने डीडब्ल्यू को बताया, "हमारे उद्योगों में प्रोडक्शन घटने की वजह से पिछले दो सालों में बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरियां गई हैं."

उन्होंने कहा, जिन नीतियों से मिडिल क्लास को नुकसान पहुंच रहा है उस पर पुनर्विचार की जरूरत है।

वहीं सरकार 1 जनवरी 2025 से वैल्यू-ऐडड टैक्स को 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 12 प्रतिशत करने की योजना बना रही है।

अमेरिका, ब्रिटेन को साथ लेकर भारत को घेर रहे थे ट्रूडो

अमेरिका

नेताओं के लिए वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में काम करेगा। प्रतिभागी ब्रिक्स द्वारा शुरू की गई विभिन्न पहलों की प्रगति का आकलन करेंगे और भविष्य में सहयोग के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करेंगे। अपनी यात्रा के दौरान, प्रधान मंत्री मोदी के ब्रिक्स सदस्य देशों के अपने समकक्षों और अन्य आमंत्रित नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें करने की भी उम्मीद है। इन चचाओं का उद्देश्य राष्ट्रों के बीच गहन जुड़ाव और सहयोग को सुविधाजनक बनाना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के निमंत्रण पर 22-23 अक्टूबर को रूस की यात्रा करेंगे। विदेश मंत्रालय ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 22-23 अक्टूबर की रूस यात्रा के दौरान ब्रिक्स देशों के अपने समकक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकें करने की संभावना है। शिखर सम्मेलन का विषय वैश्विक विकास और सुरक्षा के लिए बहुपक्षवाद को मजबूत करना है। नेताओं के लिए वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में काम करेगा। प्रतिभागी ब्रिक्स द्वारा शुरू की गई विभिन्न पहलों की प्रगति का आकलन करेंगे और भविष्य में सहयोग के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करेंगे। अपनी यात्रा के दौरान, प्रधान मंत्री मोदी के ब्रिक्स सदस्य देशों के अपने समकक्षों और अन्य आमंत्रित नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें करने की भी उम्मीद है। इन चचाओं का उद्देश्य राष्ट्रों के बीच गहन जुड़ाव और सहयोग को सुविधाजनक बनाना है।

यह शिखर सम्मेलन वैश्विक चुनौतियों के लिए बहुपक्षीय दृष्टिकोण पर बातचीत को बढ़ावा देने, सतत विकास और सुरक्षा प्राप्त करने में सामूहिक कार्रवाई के महत्व पर जोर देने के लिए आवश्यक है। चूंकि भारत ब्रिक्स ढांचे के भीतर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, इसलिए इस शिखर सम्मेलन के नतीजों से सदस्य देशों के बीच संबंधों को और मजबूत करने और प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मामलों पर एकीकृत रुख को बढ़ावा देने की उम्मीद है।

हवा में उड़ गए 34 अरब डॉलर! एक तूफान ने बुरी तरह हिला दी अमेरिका की इकॉनमी

नई दिल्ली: अमेरिका में हाल में आए मिल्टन तूफान ने काफी तबाही मचाई है। यह अमेरिका के इतिहास में सबसे ज्यादा तबाही मचाने वाले तूफानों में से एक है। शुरूआती अनुमानों के मुताबिक तूफान के कारण आई बाढ़ और तेज हवाओं से करीब 34 अरब डॉलर का नुकसान हुआ है। इस तूफान के कारण फ्लोरिडा में कम से कम 24 लोगों की मौत हुई। साथ ही लोगों को घरों को काफी नुकसान पहुंचा है। समस्या यह है कि अधिकांश घर तेज हवाओं से होने वाले नुकसान के लिए इंश्योर्ड थे लेकिन उनके पास बाढ़ से हुए नुकसान के लिए कवर नहीं था।

मिल्टन से दो हफ्ते पहले आए हरिकेन हेलेन से करीब $47.5 अरब डॉलर का नुकसान हुआ था। लेकिन मिल्टन अमेरिका में आए 10 सबसे विनाशक तूफानों में शामिल है। इसमें करीब 22 अरब डॉलर का नुकसान तेज हवाओं के कारण हुआ है जबकि बाढ़ के

कारण छह अरब डॉलर के नुकसान की आशंका है। हेलेन ने भी फ्लोरिडा के तटीय इलाकों में तबाही मचाई थी। अभी लोग इससे उबर भी नहीं पाए थे कि मिल्टन ने दस्तक दे दी। इससे फ्लोरिडा का इंश्योरेंस मार्केट मुश्किल में आ गया है।

मिल्टन तूफान से सुपर पावर अमेरिका बेहाल, 160 किमी प्रति घंटे से चली हवाएं, 28 लाख लोग अंधेरे में

फ्लोरिडा में प्रीमियम

फ्लोरिडा में इंश्योरेंस प्रीमियम देश के बाकी राज्यों की तुलना में बहुत अधिक है। सरकार के समर्थन वाली नॉन-प्रॉफिट होम इंश्योरेंस कंपनी Citizens Property Insurance Corp के पास 13 लाख पॉलिसीज हैं। अगर यह प्राइवेट कंपनी होती तो डूब चुकी होती।

लेकिन सरकारी कंपनी होने के नाते इसके पास प्रीमियम सरचार्ज लगाने का अधिकार है ताकि सभी दावों का भुगतान किया जा सके। लेकिन इससे इंश्योरर्ड लोगों पर बोझ बढ़ेगा।

बाइडन और हैरिस ने सिनवार की मौत को गाजा में युद्ध समाप्ति के लिए मौका बताया

अमेरिका

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने बृहस्पतिवार को कहा कि इजराइली सैनिकों द्वारा हमास नेता याह्या सिनवार को मार गिराया जाना ह्यइजराइल, अमेरिका और दुनिया के लिए एक अच्छा दिनह्न है। बाइडन ने कहा कि सिनवार की मौत हमास के लिए बंधक बनाए गए इजराइली बंधकों को मुक्त करने और गाजा में साल भर से जारी युद्ध को समाप्त करने का मौका है। वहीं अमेरिकी राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेट पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस ने भी सिनवार की मौत को गाजा में युद्ध को समाप्त करने के लिए अवसर करार दिया। बाइडन ने एक बयान में इस घटना की तुलना अल-कायदा के आतंकी ओसामा बिन लादेन की हत्या के बाद अमेरिका में महसूस की गई भावना से की। लादेन 11 सितंबर, 2001 को अमेरिका में किये गये हमले का आरोपी था। बाइडन ने कहा कि सात अक्टूबर, 2023 को इजराइल पर हमले के मास्टरमाइंड की मौत एक बार फिर साबित करती है कि दुनिया में कहीं भी कोई भी आतंकवादी न्याय से बच नहीं सकता चाहे इसमें कितना भी समय क्यों न लगे। बाइडन ने कहा कि वह इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू व अन्य इजराइली नेताओं से बात करेंगे और उन्हें बधाई देंगे तथा बंधकों को उनके परिवारों के पास वापस लाने और इस युद्ध को हमेशा के लिए समाप्त करने के तरीके पर चर्चा करेंगे। विस्कॉन्सिन कॉलेज परिसर में चुनाव प्रचार कर रहीं हैरिस ने कहा कि युद्ध कुछ इस तरह समाप्त होना चाहिए। कि इजराइल सुरक्षित रहें, बंधकों को रिहा किया जाए।

भारत की धरती पर ताइवान ने ऐसा क्या कर दिया? बौखला उठा चीन, संबंधों की देने लगा दुहाई

चीन

भारत और ताइवान की बढ़ती नजदीकियां अब ड्रैगन को चुभने लगी है। बीते जिनों मुंबई में ताइवान ने अपना नया कॉन्सुलेट ऑफिस खोला है। नई दिल्ली और चेन्नई में मौजूद ऑफिस को मिलाकर पूरे देश में ताइवान के तीन कॉन्सुलेट हैं। चीन ने को भारत से ताइवान के मुद्दों को सावधानी से संभालने और मुंबई में एक और ताइवान वास्तविक वाणिज्य दूतावास के उद्घाटन के बाद चीन-भारत संबंधों के सुधार में हस्तक्षेप से बचने का आग्रह किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने एक नियमित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि चीन ताइवान के साथ आधिकारिक संपर्क में शामिल होने के लिए अपने संबंध रखने वाले किसी भी देश के कदम का विरोध करता है। दुनिया में केवल एक-चीनहै और ताइवान चीन के क्षेत्र का एक अविभाज्य हिस्सा है।

चीन के विदेश मंत्रालय की तरफ से कहा गया कि चीन अपने साथ राजनयिक संबंध रखने ।

सिनवार को मार कर कहा- कल के कल खत्म कर दूंगा जंग, लेकिन...

इजरायली

इजरायली प्रधानमंत्री ने गाजा के लोगों को एक संदेश में कहा कि ये जंग कल ही खत्म हो सकती है। अगर हमास हार मान ले और हमारे नागरिकों को रिहा कर दे। हमास ने हमारे 101 नागरिकों को बंदी बनाकर रखा हुआ है। वहां इजरायल के अलावा और भी कई देश के लोग बंदी हैं।

हमास चीफ याह्या सिनवार की मौत के बाद इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू अपने दुश्मनों को एक आखिरी पैगाम देते नजर आए। वो आखिरी चेतावनी के साथ हमास को घुटने टेकने का लास्ट चांस देने की बात करने दिखे।

सिनवार की मौत के बाद जहां हमास को तगड़ा झटका लगा वहीं इजरायल समेत पूरी दुनिया में इस वक्त जश्न का माहौल है। इजरायल समर्थक इस जीत में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। हमास नेता याह्या सिनवार के मारे जाने के बाद इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने एक बड़ा बयान दिया और ये साफ कर दिया कि इसकी पुष्टि हो चुकी है कि याह्या सिनवार इजरायल के हमले में मारा जा चुका है। नेतन्याहू ने कहा कि भयंकर नरसंहार को अंजाम देने वाले शख्स को हमारी सेना ने मार गिराया है। नेतन्याहू ने कहा कि लेकिन हमारी जंग अभी खत्म नहीं हुई है। ये जंग खत्म होने की शुरूआत है।

इजरायली प्रधानमंत्री ने गाजा के लोगों को एक संदेश में कहा कि ये जंग कल ही खत्म हो सकती है। अगर हमास हार मान ले और हमारे नागरिकों को रिहा कर दे। हमास ने हमारे 101 नागरिकों को बंदी बनाकर रखा हुआ है। वहां इजरायल के अलावा और भी कई देश के लोग बंदी हैं। नेतन्याहू ने कहा कि बंधकों को रिहा करवाने के लिए इजरायल पूरी कोशिश कर रहा है। इजरायल अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। याह्या सिनवार की मौत के साथ ही इजरायल ने उस व्यक्ति के साथ अपना हिसाब चुका दिया है जिसने 7 अक्टूबर 2023 को इजरायल की काली तारीख लिखी।

जिसने 7 अक्टूबर 2023 को इजरायल में घुसपैठ कर जबरदस्त आतंकी हमले को अंजाम दिया। अब वो याह्या सिनवार मारा जा चुका है जिसने इजरायली नागरिकों को अगवा करने का आदेश दिया।

नेपाल में 870 पर्वतारोहियों को 37 चोटियों पर चढ़ने की मिली अनुमति

काठमांडू। नेपाल सरकार ने शरद ऋतु के पर्वतारोहण सत्र के दौरान देश के 37 पर्वतों पर चढ़ने के लिए पर्वतारोहियों को 870 परमिट जारी किए हैं।

पर्यटन विभाग ने बुधवार को 70 देशों और क्षेत्रों के 668 पुरुषों और 202 महिलाओं को चोटियों पर चढ़ने की अनुमति दी, जिनमें दुनिया की सातवीं और आठवीं सबसे ऊंची चोटियां माउंट धौलागिरी (8,167 मीटर) और माउंट मनास्लू (8,163 मीटर)

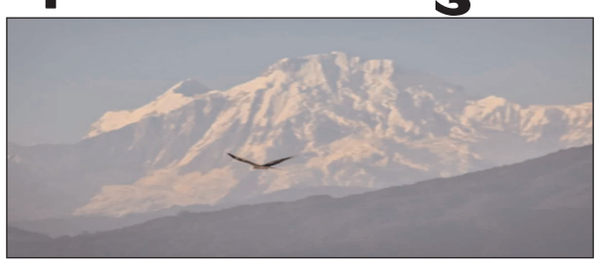

शामिल हैं। समाचार एजेंसी शिन्हुआ के अनुसार, पर्वतारोहियों में से 73 अमेरिका से हैं, जबकि 72 चीन और 69 फ्रांस से हैं।

पर्यटन विभाग के निदेशक राकेश गुरुंग ने कहा, "इस सीजन के लिए हमारे पास अभी एक महीने से अधिक का समय है। हमें पिछले साल की संख्या को पार करने की उम्मीद है।"

साल 2023 में शरद ऋतु के चढ़ाई के मौसम के दौरान एजेंसी द्वारा लगभग 1,300 परमिट जारी किए गए थे।

जापानी पर्यटकों की बस तुर्किये में दुर्घटनाग्रस्त, 22 घायल

जापान

अनादोलु एजेंसी ने बताया कि यह दुर्घटना अंकारा से लगभग 250 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में अफ्योनकाराहिसर प्रांत में एक राजमार्ग पर हुई। दुर्घटना का कारण तत्काल पता नहीं चल पाया है।

जापानी पर्यटकों को ले जा रही एक बस बृहस्पतिवार को तुर्किये में सड़क से फिसलकर खाई में गिर गई, जिससे उसमें सवार 22 लोग घायल हो गए। सरकारी समाचार एजेंसी ने यह जानकारी दी।

अनादोलु एजेंसी ने बताया कि यह दुर्घटना अंकारा से लगभग 250 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में अफ्योनकाराहिसर प्रांत में एक राजमार्ग पर हुई। दुर्घटना का कारण तत्काल पता नहीं चल पाया है। एजेंसी ने बताया कि घायल यात्रियों को अफ्योनकाराहिसर के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है और इनमें से एक की हालत गंभीर है।

इटली ने शरणागतों का पहला जत्था अल्बानिया भेजा, क्या है यह समझौता

इटली

समुद्र से बचाए गए शरणार्थियों को सीधे बाल्कन देश अल्बानिया भेजने की अपनी विवादास्पद योजना की शुरूआत करते हुए इटली ने अनियमित प्रवासियों की पहली खेप अल्बानिया के शेंगजिन बंदरगाह पर भेजी है. इटली की प्रधानमंत्री और धुर-दक्षिणपंथी नेता जॉर्जिया मेलोनी ने इसे एक नया, साहसी और अभूतपूर्व फैसला बताया है. उन्होंने कहा, "यह पूरी तरह से यूरोपीय भावना को दशार्ता है." उन्होंने यह भी कहा कि यूरोपीय संघ से बाहर के देशों को भी इसपर अमल करना चाहिए.

समाचार एजेंसी एपी के अनुसार, इटली के अधिकारियों ने बताया कि लिब्रा नाम के नौसेना के एक जहाज पर 16 पुरुषों को अल्बानिया भेजा गया. इन्हें लीबिया से निकलने के बाद समुद्र में बचाया गया था. इनमें दस बांग्लादेश और छह मिस्र से थे. इटली ने अगले पांच सालों में अल्बानिया में दो प्रवासी प्रसंस्करण केंद्रों पर 730 मिलियन डॉलर खर्च करने का वादा किया है. इन केंद्रों में केवल वयस्क पुरुषों को रखा जाएगा. महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों, कमजोर और बीमार लोग इटली में ही रह सकेंगे.

अल्बानिया के साथ इटली का क्या समझौता हुआ?

इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने नवंबर 2023 में अल्बानिया के प्रधानमंत्री एडी रामा

के साथ पांच साल के एक समझौते पर हस्ताक्षर किया था. इसके तहत इटली के तट रक्षकों द्वारा हर महीने समुद्र से पकड़े जाने वाले करीब 3,000 प्रवासियों को अल्बानिया भेजा जाएगा. शरण मांगने के उनके आवेदनों पर जब तक विचार होगा, वे अल्बानिया में बने असाइलम प्रॉसेसिंग सेंटरों में रहेंगे.

यूएनः इस साल 2500 से ज्यादा आप्रवासी भूमध्य सागर में डूबे

अंतरराष्ट्रीय और यूरोपीय संघ के कानून के तहत, प्रवासियों को शरण के लिए आवेदन करने का अधिकार है. हालांकि, इटली समेत कई यूरोपीय देश अनियमित तरीके से आने वाले प्रवासियों और शरणागतों की बड़ी संख्या को अपने लिए बड़ी समस्या के तौर पर देखते हैं. ऐसे में मेलोनी सरकार की यह योजना कई देशों का ध्यान आकर्षित कर रही है.

इनमें ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री किएर स्टार्मर भी हैं. स्टार्मर बीते दिनों इटली की यात्रा पर आए थे. उन्होंने अनियमित प्रवासियों की संख्या कम करने के लिए मेलोनी सरकार द्वारा अपनाए जा रहे तरीकों में दिलचस्पी जताई थी. यूरोपीय संघ की अध्यक्ष उर्सुला फॉन डेय लाएन ने भी इस फैसले को "आउट-ऑफ-द-बॉक्स" सोच का नतीजा बताते हुए समर्थन किया है. हालांकि, कई मानवाधिकार समूह इसे खतरनाक मिसाल कायम करने वाला समझौता कह रहे हैं.

किस तादाद में आते हैं शरणार्थी

इटली की भौगोलिक स्थिति देखें, तो इसके पास लंबा समुद्र तट है. यह पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में तीन ओर समुद्र से घिरा है. विशाल समुद्री इलाका होने के कारण लीबिया और ट्यूनीशिया जैसे देशों से होकर नाव से भूमध्यसागर पार करते हुए इटली पहुंचना, अनियमित प्रवासियों द्वारा लिए जाने वाले एक प्रमुख रास्तों में है. हालिया सालों में इन प्रवासियों की संख्या काफी बढ़ती गई.

लीबिया जैसे युद्ध और संघर्ष प्रभावित इलाकों के अलावा दक्षिण एशियाई बांग्लादेश तक से अनियमित प्रवासी इस रास्ते आते हैं।

किम जोंग उन ने अपने सैनिकों से द. कोरिया को शत्रु राष्ट्र के रूप में देखने को कहा

उत्तर कोरिया

उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन ने अपने सैनिकों से कहा कि वे दक्षिण कोरिया को एक शत्रु राष्ट्र के रूप में मानें और उन्होंने जोर दिया कि अगर दक्षिण कोरिया उनकी संप्रभुता का उल्लंघन करता है तो प्रतिद्वंद्वी पर हमला करने में भी संकोच नहीं किया जाएगा। सरकारी मीडिया ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

सेना मुख्यालय में किम ने यह टिप्पणी ऐसे समय में की है जब इस सप्ताह उत्तर कोरिया ने पुष्टि की कि उसने दक्षिण कोरिया को एक शत्रु राष्ट्र के रूप में परिभाषित करने के

लिए अपने संविधान में संशोधन किया है और उन सड़क एवं रेल संपर्क सुविधाओं को ध्वस्त कर दिया जो किसी समय दोनों देशों को जोड़ती थीं।

ये कदम किम के उस आह्वान के अनुरूप हैं जिसमें उन्होंने उत्तर कोरिया से दक्षिण कोरिया के साथ मेल-मिलाप के दीर्घकालिक संबंध को त्यागने पर जोर दिया था। विश्लेषकों का मानना ? है कि उत्तर कोरिया के इस कदम से प्रतिद्वंद्वियों के बीच इन तनावपूर्ण सीमावर्ती क्षेत्रों में संभावित झड़पों का खतरा बढ़ रहा है, हालांकि उत्तर कोरिया के लिए अमेरिकी और दक्षिण कोरिया की मजबूत सेनाओं के सामने बड़े पैमाने पर हमले के बारे में सोचना काफी हद तक संभव नहीं है। उत्तर कोरियाई पीपुल्स आर्मी की द्वितीय कोर के मुख्यालय में बृहस्पतिवार को अपने दौरे के दौरान किम ने सैनिकों से कहा कि वे दक्षिण कोरिया के विरुद्ध आक्रामक तरीके से बल प्रयोग को ह्यह्यदेशवासियों के खिलाफ नहीं बल्कि शत्रु देश के खिलाफ वैध जवाबी कार्रवाई के रूप में देखें।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।